ॐ परमात्मने नमः ॥

श्रीबदरीनाथमाहात्म्य
सटीक

श्रीमत् स्कन्दपुराणोक्त अष्टाध्याय ॥

जिसका

श्रीयुत गोस्वामि हर्षपुरी के शिष्य देवानन्दपुरी के पुत्र चन्द्रवदनपुरी मठ कमलेश्वर श्रीनगर गढ़वाल देशनिवासी ने भाषानुवाद किया

उसीको

श्रीयुत बाबू परमेश्वरीदास सुपरवाइजर लखनऊ म्यूनीसिपल्टी बांसबरेलीनिवासी ने सर्वजन हितार्थ

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यंत्रालय में छपवाकर प्रकाश किया
मार्च सन् १९०६ ई० ॥

प्रथमावृत्ति १००० प्रति संवत् १९६२.

भूमिका ॥

विदितहो कि यह बदरीनाथमाहात्म्य स्कन्दपुराणोक्त अ-
ष्टाध्याय अद्वितीय व अनुपम है जिस बदरीश्वर महातीर्थ के
दर्शनमात्र से कोटिशः महापापियों का पुनर्जन्म नहींहोता ऐसा
बदरीनाथजी का माहात्म्य शिवजी ने स्वामिकार्तिकेय से संवाद
कियाहै जिसको श्रीकवि गोस्वामिदेवानन्दपुरीजी ने बड़े परि-
श्रमसे स्कन्दपुराण से लेकर सरल भाषा में सर्व साधारणजनों
के हेतु बनाकर तैयारकिया तत्पुत्र गोस्वामि चन्द्रवदनपुरी के
अभिमत से प्रकाशितहुआ ॥

बदरीशस्यमाहात्म्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥
तीर्थानांपरमंतीर्थंनरनारायणाश्रमः ॥ १ ॥

बदरीनाथजी का जो माहात्म्यहै वह भुक्ति व मुक्ति का दे
वाला है तीर्थों में परमतीर्थ नरनारायणजी का आश्रम है जह
मनुष्य जन्म मरण के दुःख से छूटजाताहै और वहां पूर्ण षट्मास
भक्तिपूर्वक निवासकरने से अन्तमें साक्षात् चतुर्भुजरूप भगवान
के वैकुण्ठ में दर्शन करताहै ऐसे मुक्तिप्रदायी तीर्थ के माहात्म्य
की पुस्तक का जो नित्य पञ्चोपचार से पूजन करता है अथवा
किसी को सुनाता है वा भक्तिपूर्वक श्रवण करता है उसको नि-
श्चय बदरिकाश्रम की यात्रा का फल होता है और निस्सन्देह
नारायणजी के दर्शन का भागी होता है ॥

आपका कृपाकांक्षी
गोस्वामि चन्द्रवदनपुरी मठकमलेश्वर
श्रीनगर गढ़वाल.

अथ बदरीनाथमाहात्म्य स० ।

शौनकउवाच ॥

सूतसूतमहाभाग सर्व्वधर्म्मविदांवर ॥
सर्व्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ पुराणपरिनिष्ठित १ ॥

नैमिषारण्य में शौनकऋषि सूतजी पुराण बांचनेवाले से कहते भये हे सूत ! हे सूत ! आप बड़े भाग्यवान्हो सब धर्म्म के जाननेवालों में श्रेष्ठहो सब शास्त्रों का जो सार है उसके जाननेवालेहो और पुराणों में विशेष आपकी गति है १ ॥

व्यासःसत्यवतीपुत्रो भगवान्विष्णुरव्ययः ॥
तस्ययत्प्रियशिष्यस्त्वं त्वत्तोवेत्तानकश्चन २ ॥

सत्यवती के पुत्र जो व्यासऋषि हैं वह अविनाशी भगवान् विष्णुकेही अवतार हैं उनके आप प्यारे शिष्यहो आप से उपरांत कोई दूसरा जानने वाला नहीं है २ ॥

प्राप्तेकलियुगेघोरे सर्व्वधर्म्मबहिष्कृते ॥
जनादुर्ज्जनकर्म्माणः सर्व्वधर्म्मविवर्ज्जिताः ३ ॥

सब धर्म्म जिसमें दूर होनेवाले हैं ऐसे घोर कलियुग के प्राप्त होनेमें मनुष्य दुर्ज्जनोंका कर्म्म करनेवाले होवेंगे सब धर्मों को छोड़देवेंगे ३ ॥

क्षुद्रायुषःक्षुद्रप्राणाबलवीर्य्यतपःक्रियाः ॥
अधर्म्मनिरताःसर्व्वे वेदशास्त्रविवर्ज्जिताः ४ ॥

सब थोड़ी आयुके होनेवाले हैं थोड़े प्राणके थोड़े बलके थोड़े पराक्रमके अल्प तप करनेवाले व अधर्म्म में तत्पर होवैंगे वेदों और शास्त्रों को कोई पढ़नेवाले नहीं होंगे ४ ॥

तीर्थाटनतपोदानहरिभक्तिविवर्जिताः ॥
कथमेषामल्पकानामुद्धारोल्पप्रयत्नतः ५ ॥

तीर्थों में गमन करना और विष्णुकी भक्ति से रहित होवैंगे इस प्रकार इन छोटे मनुष्योंका थोड़े यत्नसे किस प्रकार उद्धार होनेवाला है ५ ॥

तीर्थानामुत्तमंतीर्थं क्षेत्राणामुत्तमंतथा ॥
मुमुक्षूणांकुतःसिद्धिःकुत्रवाऋषिसञ्चयः ६ ॥

तीर्थों में उत्तम तीर्थ कहां है और क्षेत्रों में उत्तम क्षेत्र कहां है मोक्ष चाहनेवालों को मुक्ति किस तीर्थमें होती है अथवा सब ऋषीश्वर कहां रहते हैं ६ ॥

कुत्रवाल्पप्रयत्नेन तपोमन्त्रैकसिद्धयः ॥
कुत्रवावसतिश्रीमान् जगतामीश्वरेश्वरः ७ ॥

अथवा किस तीर्थ में थोड़े यत्न करके तप और मन्त्रों की मुख्य सिद्धि होती है अथवा सुन्दर सब लोकों के ईश्वरों के भी स्वामी नारायण कहां वास कररहे हैं ७ ॥

भक्तानामनुरक्तानामनुग्रहकृतालयः ॥
एतदन्यच्चसर्व्वंमे परार्थैकप्रयोजनम् ॥
ब्रूहिभद्रायलोकानामनुग्रहविचक्षण ८ ॥

अत्यन्त प्रीति करनेवाले भक्तों के अनुग्रह के हित ईश्वरने तीर्थ में अपना घर किया है यह सब लोकों के कल्याण के निमित्त कहो जो प्रयोजन है सो केवल परोपकार के लिये है अनुग्रह करने में आप प्रवीन हो ८ ॥

सूतउवाच ॥ साधुसाधुमहाभागभगवान्परहितेरतः ॥
हरिभक्तिकृतासक्तिप्रक्षालितमनोमलः ९ ॥

सूतजी शौनकऋषि का वचन सुनके कहते भये धन्यहो धन्यहो पराये भलेमें जो तुम तत्परहो आप बड़े भाग्यवान्हो तुमने नारायणकी भक्ति में आसक्त होकर अपने मनका मल धोदिया है ९ ॥

अद्यमेदेवकीपुत्रो हृत्पद्ममधिरोहति ॥
प्रसङ्गात्तवविप्रर्षे दुर्लभःसाधुसङ्गमः १० ॥

आप ब्राह्मणों में श्रेष्ठहो तुम्हारे प्रसंग से आज देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण मेरे हृदयकमल में चढ़ते हैं साधुजनों का संगम मिलना कठिन है १० ॥

हरतिदुष्कृतसञ्चयमुत्तमां गतिमवातनुतेतनुमानिनाम् ॥
अधिकपुण्यवशादवशात्मनां जगतिसाधुसमागमदुर्लभम् ११ ॥

इस संसार में अपने वशमें नहीं है चित्त जिन्होंका ऐसे देहाभिमानी पुरुषों को साधुजनों का मिलाप होना दुर्लभ है वह अधिक पुण्यके वश से होता है जो साधुजनों का संग हुआ तो अपने कमायेहुये पापों को हरलेता है उत्तम गति को भी साधुसंगम विस्तारित करता है ११ ॥

हरतिहृदयग्रन्थं कर्म्मपाशार्दितानां
वितरतिपदमुच्चैरल्पजल्पैकभाजाम् ॥
जननमरणकर्म्मश्रान्तविश्रान्तिहेतु-
स्त्रिजगतिमनुजानां दुर्लभःसाधुसङ्गः १२ ॥

साधुजनों का संग तीनलोक में मनुष्यों को मिलना कठिन है साधु संगति कैसी है अपने कर्म्मरूप फांस से बँधेहुये पुरुषों के हृदय की गांठि खोलने वाली है और बहुत कम बोलते हुये पुरुषों कोभी उच्चपद देती है जन्मलेना हुआ मरना हुआ कर्म्म करना हुआ इनसे थकेहुये पुरुषों के विश्रामका कारण है १२ ॥

सूतउवाच ॥ अयंप्रश्नःपुरासाधोस्कन्देनाकारिशर्व्वतः ॥
कैलासशिखरेरम्ये ऋषीणांपरिशृण्वताम् १३ ॥

फिर सूत कहते हैं हे सज्जन शौनक! जो प्रश्न आपने मुझसे किया है यही प्रश्न पहिले रमणीय कैलास के शृंगमें कथा सुनने के वास्ते बैठेहुये ऋषियों के आगे महादेवजी से स्वामिकार्तिकेयने किया था १३ ॥

पुरतोगिरिजाभर्तुः कर्तुर्निःश्रेयसःसताम् ॥

सज्जनों के मोक्ष करनेवाले जो पार्व्वती के नाथ हैं तिनके आगे स्वामिकार्तिकेय बैठे भये ॥

कन्दउवाच ॥ भगवन्सर्व्वलोकानां कर्ताहर्तापितागुरुः ॥
क्षेमायसर्व्वजन्तूनां तपसेकृतनिश्चयः १४ ॥
कलिकालेत्वनुप्राप्ते वेदशास्त्रविवर्जिताः ॥
कुत्रवावसतिश्रीमान् भगवान्सात्वतांपतिः १५॥

स्वामिकार्तिकेय कहते हैं हे भगवन् ! सदाशिव सर्व्वलोकों के संहार कर-नेवाले पालनेवाले उपदेश करनेवाले ऐसे सब प्राणियों के कल्याण के वास्ते तप करने को जिन्होंने निश्चय किया है १४ वह भक्तों के नाथ शोभायमान जो भगवान् हैं सो वेदों व शास्त्रों करके रहित कलियुग के समय में कहां वास करते हैं १५ ॥

क्षेत्राणिकानिपुण्यानि तीर्थानिसरितस्तथा ।
केनवाप्राप्यतेसाक्षाद्भगवान्मधुसूदनः ॥
श्रद्दधानायभगवन् कृपयावदमेप्रभो १६ ॥

कौन तीर्थ पवित्र कहे हैं कौन क्षेत्र पवित्र हैं और कौन नदी पवित्र हैं अथवा किस प्रकार मधुदैत्य को मारनेवाले भगवान् साक्षात् पायेजाते हैं हे स्वामिन् सदाशिव! सुनने की श्रद्धा जो करता मैं हूं कृपा क-रके कहो १६ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ बहूनिसन्तितीर्थानि क्षेत्राणिचषडानन ॥
हरेर्वासनिवासौकः पुराणिपरमार्थिनः १७ ॥

महादेवजी कहने लगे छः हैं मुख जिसके हे कार्तिकेय! तीर्थ बहुत हैं क्षेत्र भी बहुत हैं प्राणियों का उद्धार करना चाहते नारायण का वास आधार स्थान और नगर यह गिने नहीं जाते हैं १७ ॥

काम्यानिकानिचित्सन्ति कानिचिन्मुक्तिदान्यपि ॥
इहामुत्रार्थदान्येव बहुपुत्रादिदान्यपि १८ ॥

कोई तीर्थ कामनाके देनेवाले हैं कोई मुक्तिके देनेवाले हैं कोई इसलोक का अर्थ देनेवाले हैं कोई पुत्रादिके देनेवाले हैं १८ ॥

गङ्गागोदावरीरेवा तापनीयमुनासती ॥
क्षिप्रासरस्वतीपुण्या गौतमीकौशिकीतथा १९ ॥

काबेरीताम्रपर्णी च चन्द्रभागामहेन्द्रजा ॥
चित्रोत्पलावेत्रवती सरयूर्वेणुमत्यपि २० ॥
चर्म्मण्वतीशतंरुद्रा पयस्विन्यन्त्रसम्भवा ॥
गण्डकीबाहुदापुण्या सर्व्वासर्व्वार्त्थसाधनाः ॥
भुक्तिमुक्तिप्रदाश्चैताः सेव्यमानामुहुर्मुहुः २१ ॥

गंगाजी हुई १ गोदावरी हुई २ नर्म्मदा ३ तापनी ४ यमुना ५ सती ६ क्षिप्रा ७ सरस्वती ८ गौतमी ९ कौशिकी १० कावेरी ११ ताम्रपर्णी १२ चन्द्रभागा १३ महेन्द्रजा १४ चित्रोत्पला १५ वेत्रवती १६ सरयू १७ वेणुमती १८ चर्म्मण्वती १९ शतरुद्रा २० पयस्विनी २१ अन्त्रसम्भवा २२ गण्डकी २३ बाहुदा हुई २४ इतनी सब गंगा पवित्र कही हैं सब प्रयोजनोंकी सिद्ध करने वाली हैं वारंवार सेवन कियाजावै तो इसलोक में भोग, परलोक विषे मुक्ति देनेवाली हैं १९ । २१ ॥

अयोध्यामथुरामाया काशीकाञ्चीह्यवन्तिका ॥
पुरीद्वारावतीचैव सप्तैतामोक्षदायिकाः २२ ॥

अयोध्या हुई १ मथुरा हुई २ मायापुरीहुई ३ काशी हुई ४ काञ्ची हुई ५ उज्जयिनी हुई ६ द्वारका हुई ७ यह सात नगरी मोक्ष देनेवाली कही हैं २२ ॥

कुरुक्षेत्रंमहाक्षेत्रं गया च पुरुषोत्तमम् ।
पुष्करंदर्दुरक्षेत्रं वाराहंविधिनिर्म्मितम् ॥
बदर्य्याख्यंमहापुण्यं क्षेत्रंसर्व्वार्त्थसाधनम् २३ ॥

कुरुक्षेत्र हुआ १ हरिक्षेत्र हुआ २ गया हुई ३ पुरुषोत्तमक्षेत्र हुआ ४ पुष्कर तीर्थहुआ ५ दर्दुर नाम क्षेत्रहुआ ६ वाराहक्षेत्र हुआ ७ ब्रह्मनिर्म्मित क्षेत्र हुआ ८ सब अर्थ सिद्ध करनेवाले महापवित्र बदरिकाश्रम क्षेत्र हुआ ९ इतने क्षेत्र ये सब अर्थ भुक्ति मुक्तिके देनेवाले कहे हैं २३ ॥

अयोध्यांविधिवद्दृष्ट्वा पुरींमुक्त्येकसाधनम् ॥
सर्व्वपापविनिर्मुक्ताः प्रयान्तिहरिमन्दिरम् २४ ॥

मुक्तिकी एक सिद्ध करनेवाली ऐसी अयोध्यापुरी को विधिपूर्व्वक देखके सब पाप जिनके दूर होगये हैं वह मनुष्य वैकुण्ठ को प्राप्त होते हैं २४ ॥

विविधविघ्नपराःपरितोजगुःकृतसमर्च्चननर्त्तनकीर्त्तनाः ॥

गृहमपास्यहरेरनुचिन्तनाज्जितगृहाजितमृत्युपराक्रमाः २५ ॥

किया है नारायण का पूजन और नारायण के आगे नृत्य किया है और नारायण का कीर्त्तन जिन्हों ने चारोंतरफ से विघ्न नानाप्रकारके जिनके शत्रुहैं तौभी नारायण के नित्य चिन्तन से गृहस्थाश्रम में रहके कमाया हुआ मृत्युका पराक्रम जिन्हों ने जीताहै ऐसे प्रकारके भक्त घरको छोड़ के गायन करते हैं २५ ॥

स्वर्गद्वारेनरःस्नात्वा दृष्ट्वारामालयंशुचिः ॥
नाकृतंतस्यपश्यामि कृतकृत्योभवेद्यतः २६ ॥

अयोध्याजी में स्वर्गद्वारनामा तीर्थ में स्नानकरके पवित्र होके रघुनाथजी का मन्दिर जिस पुरुष ने देखलिया है उस पुरुषको बाकी करना कुछ नहीं देखताहूं इतना किये से वह पुरुष सब कार्य्य करचुका है २६ ॥

द्वारकायांहरिःसाक्षात्स्वालयं नैवमुञ्चति ॥
अद्यापिभवनंकैश्चित्पुण्यवद्भिःप्रदृश्यते २७ ॥

नारायण द्वारकामें साक्षात् अपने मन्दिरको नहीं छोड़ते हैं अबतक भी कोई पुण्य करनेवाले उस स्थानका दर्शन करते हैं सब नहीं देखते हैं २७॥

गोमत्यान्तुनरःस्नात्वा दृष्ट्वाकृष्णमुखाम्बुजम् ॥
मुक्तिःप्रजायतेपुंसां विनासांख्यंषडानन २८ ॥

छः हैं मुख जिसके हे कार्त्तिकेय ! गोमती गंगाविषे स्नानकरके श्रीकृष्णके मुखारविन्द को देखके ज्ञानशास्त्र विना भी पुरुषों को मुक्ति मिलती है २८ ॥

अशीवरुणयोर्मध्ये पञ्चक्रोशंमहत्तरम् ॥
अमरामुक्तिमिच्छन्ति नराणांतत्रकाकथा २९ ॥

अशी और वरुणा इन दो नदियों के बीच पांच कोसतक उत्तम स्थान कहा है उस स्थान में देवता भी मुक्ति को चाहते हैं मनुष्यों की तो क्या वार्ता कही जावै २९ ॥

मणिकर्णिकाज्ञानवाप्योर्विष्णुपादोदकेतथा ॥
ह्रदेपञ्चनदेस्नात्वा नमातुस्तनपोभवेत् ३० ॥

मणिकर्णिकाजी में ज्ञानबावली में विष्णुपादोदक तीर्थविषे पञ्चनदनामा तालावविषे स्नानकरके पुरुष माताका स्तनपान करनेवाला नहीं होताहै ३० ॥

प्रसङ्गेनापिविश्वेशं दृष्ट्वाकाश्यांषडानन ॥
मुक्तिःप्रजायतेपुंसां जन्ममृत्युविवर्जिता ३१ ॥

हे कार्त्तिकेय ! दूसरे के प्रसंग करके भी काशी में विश्वनाथजीको देखके मनुष्यों को मुक्ति होती है फिर जन्म मरणसे छूटजाताहै ३१ ॥

बहुनाकिमिहोक्तेन नैतत्क्षेत्रसमंक्वचित् ॥
जपोपवासनिरतो मथुरायांषडानन ॥
जन्मस्थानंसमासाद्य सर्व्वपापैःप्रमुच्यते ३२ ॥

इसमें बहुत कहना क्या है इस काशी के समान दूसरा क्षेत्र कहीं भी नहीं है हे कार्त्तिकेय ! जप करताहुआ उपवास करताहुआ पुरुष मथुराजी विषे श्रीकृष्णके जन्मस्थानको पायके सब पापों से छूटजाता है ३२ ॥

विश्रान्तविधिवत्स्नात्वा पृथक्कृत्वातिलोदकम् ॥
पितॄनुद्धृत्यनरकाद्विष्णुलोकेसगच्छति ३३ ॥

विश्रामघाट विषे विधिपूर्व्वक स्नानकरके जुदा जुदा तिलजलसे तर्पण करके नरकसे अपने पितरोंका उद्धार करके वह पुरुष विष्णुलोक में वास करता है ३३ ॥

यदिकुर्य्यात्प्रमादेन पातकंतत्रमानवः ॥
विश्रान्तस्थानमासाद्य भस्मीभवतितत्क्षणात् ३४ ॥

कदाचित् जो कोई मनुष्य प्रमादकरके उस मथुराजी विषे पापकरै तो विश्रामघाटको जाय स्नानकरके उसी मुहूर्त्तविषे पाप भस्म होजाते हैं ३४ ॥

अवन्त्यांविधिवत्स्नात्वा क्षिप्रायांमाधवेनराः ॥
पिशाचत्वंनपश्यन्ति जन्मान्तरशतैरपि ३५ ॥

उज्जयिनीपुरी में क्षिप्रा गंगाजी विषे वैशाखके महीने में विधिपूर्व्वक स्नानकरके मनुष्य सैकड़ों जन्मोंतक भी पिशाचयोनि को नहीं देखते हैं ३५ ॥

कोटितीर्थेनरःस्नात्वा भोजयित्वाद्विजोत्तमान् ॥
महाकालंहरंदृष्ट्वा सर्व्वपापैःप्रमुच्यते ३६ ॥

मनुष्य कोटि तीर्थ विषे स्नानकरके उत्तम ब्राह्मणों को भोजन देके महाकालनामा शिवको देखके सब पापों से छूटजाता है ३६ ॥

मुक्तिक्षेत्रमिदंसाक्षान्‌ ममलोकैकसाधनम्‌ ॥
दानाद्दरिद्रताहानिरिहलोके परत्र च ३७ ॥

महादेवजी कहते हैं यह जो उज्जयिनीपुरी है वह साक्षात् मुक्तिका क्षेत्र है और मेरे लोकका वास देनेवाली है इस क्षेत्र में दान करने से इस लोक परलोक में दरिद्री नहीं होता है ३७ ॥

कुरुक्षेत्रेरामतीर्थे स्वर्णंदत्त्वास्वशक्तितः ॥
सूर्य्योपरागेविधिवत्‌ सनरोमुक्तिभाग्भवेत्‌ ३८ ॥

कुरुक्षेत्र में रामतीर्थ विषे अपनी सामर्थ्य माफिक विधिपूर्वक जो मनुष्य सूर्यग्रहण में सुवर्ण दान करता है वह मनुष्य मुक्ति पानेवाला होता है ३८ ॥

येतत्रप्रतिगृह्णन्ति नरालोभवशङ्गताः ॥
पुरुषत्वंनतेषांवै कल्पकोटिशतैरपि ३९ ॥

उस कुरुक्षेत्र में ग्रहण विषे लोभके वशमें आयके जो पुरुष दान लेते हैं उन को सौ कोटि कल्पों तक भी मनुष्य जन्म नहीं मिलता है ३९ ॥

हरिक्षेत्रेहरिंदृष्ट्वा स्नात्वापादोदकेजनः ॥
सर्व्वपापविनिर्म्मुक्तो हरिणासहमोदते ४० ॥

हरिक्षेत्रमें चरणोदक विषे स्नान करके नारायण को देख मनुष्य सब पापों से छूटकर नारायणके साथ वैकुण्ठ में विहार करता है ४० ॥

खगगणाविविधानिवसन्त्यहो
ऋषिगणाःफलमूलकृताशनाः ॥
पवनसंयमनक्रमनिर्जिते-
न्द्रियपराक्रमणामुनयस्त्विह ४१ ॥

इस हरिक्षेत्र में नानाप्रकार के पक्षियों के समूह और फल मूलके भोजन करनेवाले ऋषियों के समूह और प्राणायाम जो तीन प्रकार के पूरक १ कुम्भक २ रेचक ३ हैं इनके क्रमसे जीता है इन्द्रियोंका पराक्रम जिन्होंने ऐसे मुनि भी बसे हैं धन्य उनको है ४१ ॥

विष्णुकाञ्च्यांहरिःसाक्षाच्छिवकाञ्च्यांशिवःस्वयम् ॥
अभेदादुभयोर्भक्त्या मुक्तिःकरतलेस्थिता ४२ ॥

विष्णुकांची में साक्षात् विष्णु हैं शिवकांची में शिव हैं शिव विष्णु के भेद न करने वाले मनुष्यों के मुक्ति हाथ के तले रहती है ४२ ॥

विभेदजननात्पुंसामधोगातिरुदीर्य्यते ।
सकृद्दृष्ट्वाजगन्नाथं मार्कण्डेयह्रदेप्लुतः ॥
विनाज्ञानेनयोगेन नमातुःस्तनपोभवेत् ४३ ॥

शिव विष्णुके भेद करने से मनुष्यों की अधम गति होती है मार्कण्डेय तीर्थ में स्नान करने से एक बार जगन्नाथजी के दर्शन से मनुष्य ज्ञान विना योग विना माताका स्तनपायी नहीं होता है ४३ ॥

रोहिण्यामुदधौस्नात्वा इन्द्रद्युम्नह्रदेतथा ॥
भुक्त्वानिवेदितंविष्णोर्वैकुण्ठेलभतेरतिम् ४४ ॥

तैसेही समुद्र में इन्द्रद्युम्न के सरोवर में रोहिणी नक्षत्र में स्नान करके जगन्नाथजीका महाप्रसाद भोजन करके वैकुण्ठ में सुख पाता है ४४ ॥

दशयोजनविस्तीर्णं क्षेत्रंसंख्यापरिस्थितम् ॥
चतुर्भुजत्वमायान्ति कीटाअपिनसंशयः ४५ ॥

श्रीजगन्नाथ क्षेत्र चारों तरफ से दशयोजन विस्तार का कहा है जिसके भीतरके कीड़े भी चतुर्भुज रूपको पाते हैं इसमें सन्देह नहीं ४५ ॥

कार्त्तिक्यांपुष्करेस्नात्वा श्राद्धंकृत्वासदक्षिणम् ॥
भोजयित्वाद्विजान्भक्त्या विष्णुलोकेमहीयते ४६ ॥

कार्त्तिकी पौर्णमासी के दिन पुष्कर में स्नानकरके श्राद्धकरके भक्तिकरके दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को भोजन देके विष्णुलोक में जाताहै ४६ ॥

सकृत्स्नात्वाह्रदेतस्मिन् यूपंदृष्ट्वासमाहितः ॥
सर्व्वपापविनिर्मुक्तो जायतेद्विजसत्तमः ४७ ॥

एक बार उस पुष्कर में स्नानकरके एकाग्रचित्त होके यज्ञस्तम्भ को देखके सर्व्व पापोंसे छूटकर उत्तम ब्राह्मणका जन्म पाता है ४७ ॥

षष्टिवर्षसहस्राणि योगाभ्यासेनयत्फलम् ॥
सौकरंविधिवद्दृष्ट्वा क्षेत्रेप्राप्नोतितत्फलम् ४८ ॥

साठहजार वर्षतक योगाभ्यास करके जो फल मिलताहै वह फल विधि-पूर्व्वक वाराहक्षेत्रका दर्शन करने से पाताहै ४८ ॥

वाराहेविधिवत्स्नात्वा पूजयित्वाहरिंशुचिः ॥
सप्तजन्मकृतंपापं नाशमाप्नोतितत्क्षणात् ४९ ॥

वाराहतीर्थ में विधिपूर्व्वक स्नानकरके पवित्र होकर नारायण का पूजन करके उसी क्षण में सातजन्मके कियेहुये पाप नष्ट होजाते हैं ४९ ॥

तीर्त्थराजंमहापुण्यं सर्व्वतीर्त्थनिषेवितम् ॥
कामिनांसर्व्वजन्तूनामीप्सितंकर्म्मभिर्लभेत् ५० ॥

सब तीर्त्थ जहां विराजरहे हैं महापवित्र वाराहक्षेत्र तीर्थों का राजा है नानाप्रकारके कामना करनेवाले सब प्राणियों का अभिलाष कर्म्म कर्मों के करने से मिलता है ५० ॥

वेण्यांस्नात्वाशुचिर्भूत्वा कृत्वामाधवदर्शनम् ॥
भुक्त्वापुण्यवतांभोगानन्तेमाधवतांव्रजेत् ५१ ॥

त्रिवेणी में स्नानकर पवित्र हो और माधवका दर्शन करने से पुण्यवानों के भोग भोग के अंतकाल में माधवके स्वरूपको प्राप्त होताहै ५१ ॥

माघेमासिनरःस्नात्वा त्रिवेण्यांभक्तिभावतः ॥
बदरीकीर्त्तनात्पुण्यं तत्रप्राप्नोतिमानवः ५२ ॥

भक्तिभावसे मनुष्य त्रिवेणी में माघके महीने में स्नानकरके जो फल पुरुष पाता है वह फल केवल बदरी नारायणजी के नाम उच्चारण करने से प्राप्त होताहै ५२ ॥

दशाश्वमेधिकंतीर्त्थं दशयज्ञफलप्रदम् ॥
संक्षेपात्कथितंवत्स किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ५३ ॥

प्रयागमें दशाश्वमेधक नाम जो तीर्त्थ है वह दशयज्ञकिये का फल देनेवाला है हे कार्त्तिकेय ! संक्षेपसे तीर्त्थोंका माहात्म्य कहा अब और क्या सुननेकी इच्छा करते हो ५३ ॥

स्कन्दउवाच ॥ बदर्य्याख्यंहरेःक्षेत्रं श्रोतुमिच्छाम्यशेषतः ॥
किंपुण्यंकिंफलंतस्य कृपयावदमेपितः ५४ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहने लगे कि बदरी जिसका नाम है वह नारायणका क्षेत्र

विस्तारपूर्वक सुनने की इच्छा करताहूं और उसका क्या पुण्य है क्या क्या फल है हे पिताजी! कृपाकरके मुझसे कहो ५४ ॥

श्रीशिवउवाच॥साधुपृष्टंत्वयावत्स गुह्याद्गुह्यंवदामिते ॥
बदर्य्याख्यंमहापुण्यं त्रिषुलोकेषुदुर्लभम् ५५ ॥

शिवजी कहते भये हे कार्तिकेय! तुमने अच्छा प्रश्न किया गोप्यसे गोप्य महापवित्र तीनोंलोकों में दुर्लभ ऐसा बदरीक्षेत्र तुझसे कहताहूं ५५ ॥

क्षेत्रस्यस्मरणादेव महापातकनाशनम् ॥
विमुक्तःकिल्बिषात्सद्यः स्मरणान्मुक्तिभागिनः ५६ ॥

बदरीक्षेत्र के स्मरण करनेही से महापातकों का नाश होके शीघ्रही मनुष्य मुक्ति पानेवाले होजाते हैं ५६ ॥

अन्यतीर्थेकृतंयेन तपःपरमदारुणम् ॥
तद्देशाद्बदरीयात्रा मनसापिप्रजायते ५७ ॥

जिसने और तीर्थ में बड़ा दारुण तप किया होवै उस देशसे बदरीक्षेत्र की यात्रा मनसे स्मरण करने से ही होती है ५७ ॥

बहूनिसन्तितीर्थानि दिविभूमौरसासुच ॥
बदरीसदृशंतीर्थं न भूतं न भविष्यति ५८ ॥

स्वर्ग पृथ्वी और पातालों में भी बहुत तीर्थ हैं परन्तु बदरीक्षेत्र के समान तीर्थ न हुआ न होनेवाला है ५८ ॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानिच ॥
कृतानियेनतत्पुण्यं बदरीस्मरणाद्भवेत् ५९ ॥

हजार अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञ जिसने किये होवैं उन यज्ञों का जो पुण्य है वह बदरी के स्मरण से होता है ५९ ॥

षष्टिवर्षसहस्राणि वायुभोजनतःफलम् ॥
क्षेत्रान्तरेविशालायां तत्फलंक्षणमात्रतः ६० ॥

और तीर्थ में साठ हजार वर्ष तक वायुभोजन करके तप करने से जो फल होता है वह फल विशालाक्षेत्रमें क्षणमात्र में मिलता है ६० ॥

कृतेमुक्तिप्रदात्रेतायुगे योगैकसिद्धिदा ॥
विशालाद्वापरेप्रोक्ता कलौबदरिकाश्रमः ६१ ॥

सत्ययुग में मुक्ति देनेवाली व त्रेतायुग में व द्वापर में योगोंकी एक सिद्धि

देनेवाली विशाला कही है और कलियुग में बदरिकाश्रम मुक्ति देनेवाला कहा है ६१ ॥

स्थूलंसूक्ष्मंशरीरन्तु जीवस्यवसतिस्थलम् ॥
तद्विनाशयतिज्ञानाद्विशालातेनकथ्यते ६२ ॥

जीवके रहनेका स्थान जो स्थूल (बड़ा) सूक्ष्म (छोटा) दो प्रकारका शरीरहै उसको ज्ञानसे नाश करती है इस कारण से विशाला नाम कहीजाती है ६२ ॥

अमृतस्यस्रवन्तीत्वाद्बदरीनत्वयोगतः ॥
बदरीकथ्यतेप्राज्ञैर्ऋषीणांयत्रसञ्चयः ६३ ॥

ज्ञानी पुरुषों के गमन करने से अमृत वर्षाती है इससे प्राज्ञ बदरी उसको कहते हैं नहीं गमन करने से बदरी अमृत नहीं वर्षा है इसीवास्ते वहां ऋषियों का समूह वास कररहा है ६३ ॥

त्यजेत्सर्वाणितीर्थानि कालेकालेयुगेयुगे ॥
बदरींभगवान्कृष्णो नमुञ्चतिकदाचन ६४ ॥

समय समय में युग युगमें सब तीर्थों को छोड़देते हैं परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण कदापि बदरीक्षेत्र को नहीं छोड़ते हैं ६४ ॥

सर्वतीर्थावगाहेन तपोयोगसमाधिना ॥
यत्फलंप्राप्यतेसम्यग् बदरीदर्शनाद्गुह ६५ ॥

हे कार्तिकेय ! सब तीर्थों में स्नान करके तप करके योग करके ईश्वर में चित्त एकाग्र करके विधिपूर्वक जो फल मिलता है वह बदरीके दर्शन करने से पाया जाता है ६५ ॥

षष्टिवर्षसहस्राणि योगाभ्यासेनयत्फलम् ॥
वाराणस्यांदिनैकेन तत्फलंबदरीगतः ६६ ॥

काशी में साठ हजार वर्ष तक योगाभ्यास करने से जो फल होता है वह फल बदरीक्षेत्र को गया हुआ पुरुष एक दिन में पाता है ६६ ॥

तीर्थानांवसतिर्यत्र देवानांवसतिस्तथा ॥
ऋषीणांवसतिर्यत्र विशालातेनकथ्यते ६७ ॥

सब तीर्थोंका वास जहां है सब देवतोंका वास जहां है सब ऋषियोंका वास जहां है इस कारण करके विशाला कही जाती है ६७ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेसपादलक्षसंहितायांसह्याद्रिखण्डेशिवकार्तिकेयसंवादे बदरीमाहात्म्येदेवानन्दपुरीकृतभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः १ ॥

स्कन्दउवाच ॥ कथमेतत्समुत्पन्नं कैर्वाक्षेत्रंनिषेवितम् ॥
कोवातस्याप्यधीशस्तु ह्येतद्वर्णयमेप्रभो १ ॥

स्वामिकार्तिकेय कहते भये हे पिताजी ! यह बदरीक्षेत्र किस तरह उत्पन्न हुआ है अथवा वह बदरीक्षेत्र किन्होंने सेवन किया है अथवा उस बदरी क्षेत्रका स्वामी कौन है यह मुझसे वर्णन करो १ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ अनादिसिद्धमेतत्तु यथावेदाहरेस्तनुः ॥
अधिष्ठाताहरिःसाक्षान्नारदाद्यैर्निषेवितम् २ ॥

महादेवजी कहते हैं कि यह बदरीक्षेत्र अनादिसिद्ध है जैसे चारों वेद नारायण के शरीर हैं जहां साक्षात् भगवान् इस क्षेत्रके स्वामी बैठे हैं जिसको नारदादिक ऋषियोंने सेवन किया है २ ॥

पुराकृतयुगस्यादौ स्वीयांदुहितरंत्वजः ॥
रूपयौवनशुद्धाङ्गीं सम्भोगयितुमुद्यतः ३ ॥

पहिले सत्ययुग के आदि में रूप और जवानी से जिसके अंग स्तुति करने के योग्य हैं ऐसी अपनी लड़की को ब्रह्मा संग करने को तैयार हुआ था ३ ॥

तंदृष्ट्वाताहशंरोषाच्छिरःखड्गेनपञ्चमम् ॥
छिन्नंचतत्कपालंमे ब्रह्महत्यापनुत्तये ४ ॥
हस्तेकृत्वाजगामाहं तत्तत्तीर्थनिषेवया ॥
दिविभूमौरसायांच तपश्चरणपूर्व्वकम् ५ ॥

ऐसा कर्म करने को उद्यत ब्रह्मा को देखके क्रोध से पांचवां शिर ब्रह्मा का मैंने खड्ग से काट दिया तब ब्रह्माका कपाल मेरे हाथमें चिपटगया, तो ब्रह्महत्या को दूर करने के लिये कपाल हाथमें लेके स्वर्ग में पृथ्वी में पाताल में सब तीर्थों में स्नान करता हुआ तपस्या करता करता मैं फिरता भया ४ । ५ ॥

नगताब्रह्महत्यातु कपालंताहशंकरे ॥
तदावैकुण्ठमगमं विष्णुंलक्ष्मीपतिं सुत ६ ॥
विनयावनतोभूत्वा नमस्कृत्वा पुनःपुनः ॥
सर्व्वमाख्यातवांस्तस्मै व्यसनंकरुणात्मने ७ ॥

ब्रह्महत्या तौ भी मेरी न गई ब्रह्माका कपाल भी तैसाही हाथमें रहा है

कार्तिकेय ! तब मैं वैकुण्ठ को गया वहां जायके लक्ष्मीके पति श्रीनारायण को वारंवार अति नम्रता से नमस्कार करके अपना सब दुःख दयाके समुद्र नारायण के पास मैं कहता भया ६ । ७ ॥

तस्योपदिष्टमादाय बदरींसमुपागतः ॥
तत्क्षणाद्ब्रह्महत्यामे वेपमानापुनःपुनः ८ ॥
अन्तर्हिताकपालन्तु कराद्विगलितंतदा ९ ॥

तिस नारायणका उपदेश लेके बदरिकाश्रम को मैं गया तो उसी मुहूर्त्त में मेरी ब्रह्महत्या फेर फेर कांपतीहुई छिपती भई ब्रह्मकपाल भी मेरे हाथ से उसी कालमें छूटता भया ८ । ९ ॥

ततःप्रभृतितत्क्षेत्रे पार्व्वत्यासहसादरम् ॥
तिष्ठामितपआस्थाय ऋषीणांप्रीतिमावहन् १० ॥

उस दिन से लेके ऋषियों को प्रसन्न करता हुआ तपमें बैठके आदरपूर्वक पार्व्वती के साथ उस बदरिकाश्रम में मैं रहता भया १० ॥

वाराणस्यांयथाप्रीतिः केदारेतीवमेस्थितिः ॥
कैलासेगिरिजासार्द्धं ततोनन्तगुणाधिका ११ ॥

जैसी काशीजी विषे मुझको प्रीति होती है जैसी मेरी अत्यन्त रहने की जगह केदार में है जैसी पार्व्वती के साथ कैलास में मेरी स्थिति है इन तीन स्थानों से भी बदरीमें अधिक अनन्त जिसके गुण हैं ऐसी मेरी प्रीति है ११ ॥

अन्यत्रमरणान्मुक्तिः स्वधर्म्मविधिपूर्व्वकम् ॥
बदरीदर्शनादेव मुक्तिःपुंसांकरेस्थिता १२ ॥

और तीर्थ में विधिपूर्व्वक अपने धर्म्म करतेहुये पुरुषों को देहछोड़ के मुक्ति होती है बदरीक्षेत्र के दर्शन करनेही से मुक्ति मनुष्यों के हाथमें स्थित रहती है १२ ॥

हरेश्चरणसान्निध्यं यत्रवैश्वानरःस्वयम् ॥
तत्रकेदाररूपेण ममलिङ्गंप्रतिष्ठितम् १३ ॥

नारायण के चरणों के निकट जहां आप अग्नि बैठा है तहां केदार रूप होके मेरालिङ्ग विराज रहा है १३ ॥

केदारदर्शनात्स्पर्शादर्चनाद्भक्तिभावतः ॥
कोटिजन्मकृतंपापं भस्मीभवतितत्क्षणात् १४ ॥

केदार के दर्शन से स्पर्श से भक्तिभाव संयुक्त पूजन करने से कोटिजन्मों के किये हुये पाप उसीक्षण में भस्म होते हैं १४ ॥

कलामात्रेणतिष्ठामि तत्रक्षेत्रेविशेषतः ॥
कलापञ्चदशीचात्र मूर्त्तिमत्येवतिष्ठति १५ ॥

उस बदरीक्षेत्र में विशेष से मैं कलामात्र करके विराजमान इस कैलास में तो मूर्त्तिमान् मेरी पन्द्रह कला रहती हैं १५ ॥

जितकृतान्तभयाःशिवयोगिनः
कृतमृगार्दनकृत्तिसुवाससः ॥
वरविभूतिजटाकृतभूषणाः
स्वयमुपासतएवजटाधरम् १६ ॥

धर्म्मराज का भय जिन्होंने जीता है सिंह के चर्मका जिन्होंने सुन्दर वस्त्र किया है विभूति और जटा जिन्होंने श्रेष्ठ भूषण कररक्खी है इस प्रकार शिवयोगी स्वयं बदरिकाश्रम में उपासना करते हैं १६ ॥

फलदलाम्बुसमीरणतोषिताः
शिवमनोज्झितमृत्युपरिश्रमाः ॥
गिरिदरीगतनिर्ज्जितमानसाः
प्रसरनिर्म्मलबुद्धिमहोदयाः १७ ॥

फल पत्ते जल वायु भोजन करके प्रसन्न रहते हैं शुद्ध मनसे जिन्होंने मृत्युका भय दूर करदिया है पर्व्वत की गुफामें जायके जीता है मनका विकार जिन्होंने इस करके जिनकी निर्म्मल बुद्धिका बड़ा उदय हुआ है ऐसे भक्त मेरा ध्यान करते हैं १७ ॥

कमलकोमलकान्तिमुखाम्बुजाः
शिवदयार्ज्जितनिर्भयवैरिणः ॥
करधृताञ्जलिमौलिशिवेक्षणाः
शिवमुपासतएवनिशामुखे १८ ॥

कोमल कमल कान्ति सम मुखारविन्द वाले व शिवजी के दयापात्र होने से भय नहीं करते वैरी भी जिनका नहीं अञ्जलि धारेहुये दृष्टि जिनकी शिव के मुकुट में है ऐसे भक्त सायंकालमें शिव को ध्यान करते हैं १८ ॥

करधृतजपमालाः शान्तिसन्तोषभाजः
परहितकृतनित्यप्रार्थनाश्चन्द्रमौलेः ॥
हरचरणसरोजध्यानविज्ञानमूर्त्ति-
व्यथितयममनोजाः पूर्णभावानितान्तम् १६ ॥

हाथमें जपकी माला धारते व शान्त रहते व सन्तोष करते व महादेवजी से पराये भलेके लिये नित्य प्रार्थना करते और शिवजी के चरणारविन्द का जो ध्यान है तिस करके जो अनुभव की मूर्त्ति है तिससे पीड़ित की हैं यमस्वरूप कामवासनायें जिन्होंने और अत्यन्त पूर्ण है भजन जिन्हों का ऐसे भक्त मुझको बदरी में सेवा करते हैं १९ ॥

देशेग्नेरुपरिभ्राजद्भगवच्चरणान्तिके ॥
केदाराख्यंमहालिङ्गं दृष्ट्वानोजन्मभाग्भवेत् २० ॥

अग्नि के ऊपर देदीप्यमान नारायण के चरण हैं जहां ऐसे स्थानमें केदारनामवाला मेरा महालिंग है उसको देखके फेर जन्म नहीं धारताहै २० ॥

स्कन्दउवाच ॥

कथंवैश्वानरःश्रीमान् सर्व्वलोकैककारणम् ॥
बदरीमनुसन्तस्थौ तन्मेवदमहामते २१ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहने लगे कि आपकी बड़ी बुद्धिहै हे पिताजी ! सब लोकों का एक कारण व शोभायमान ऐसा जो अग्निहै वह किसतरह बदरी में स्थित रहता है वह कारण मुझसे कहो २१ ॥

श्रीशिवउवाच ॥

पुरासमाजःसमभूदृषीणामूर्द्ध्वरेतसाम् ॥
गङ्गाभगवतीयत्र कालिन्द्यासहसङ्गता २२ ॥

शिवजी कहते भये कि भगवती भागीरथी जहां यमुनाजी के साथ मिली हैं ऐसे प्रयाग में वीर्य्य जिनका नीचे न गिरा ऐसे ऋषियों की पहिले सभा होती भई २२ ॥

दशाश्वमेधिकंनाम तीर्थंत्रैलोक्यदुर्लभम् ॥
तत्राऽऽबभूवभगवान् हुतभुक्प्रश्रयानतः ॥
ऋषीणामग्रतःस्थित्वा प्रष्टुंसमुपचक्रमे २३ ॥

तीनलोक में दुर्लभ ऐसे प्रयाग में जो दशाश्वमेधिक नाम तीर्थ है तिस विषे भगवान् अग्नि विनय करके नम्र होताभया सभामें ऋषियों के आगे स्थित होके पूछनेको तैयार होताभया २३ ॥

अग्निरुवाच ॥ दृष्टादृष्टैकदृग्ज्ञाना भवन्तोब्रह्मवित्तमाः ॥
दीनार्त्थे करुणापूर्णहृदया हि दयालवः २४ ॥

अग्नि कहताभया एक दृष्टिका है सब जगह ज्ञान जिन्हों को ऐसे ब्रह्म जाननेवालों विषे भी श्रेष्ठ तुम मैंने बड़े भागसे देखेहो तुम सरीखे जो दयावान् लोगहैं वह दुर्ब्बलों के निमित्त कृपासे पूर्णचित्त करते हैं २४ ॥

सर्व्वभक्षसमुद्भूतपातकाऽऽलिप्ततेजसः ॥
कथंस्यान्निरयान्मोक्षो ममब्रह्मविदुत्तमाः २५ ॥

हे मुनयः ! भृगुके शापसे सब भला बुरा भक्षण करने से उत्पन्न हुआ जो पातकहै तिसकरके तेज जिसका नष्ट होगया है ऐसा जो मैं हूं मेरा इस दुःखसे छूटना किस तरह होवैगा कहो २५ ॥

सर्व्वेषामृषिवर्य्याणामाज्ञयाबादरायणः ॥
गङ्गाम्भसिसमाप्लुत्य वाक्यंचेदमुवाचह २६ ॥

तब अग्निका वचन सुनकरके सब ऋषीश्वरों की आज्ञासे गंगाजी के जल में स्नानकरके व्यासदेव यह वचन कहने लगे २६ ॥

व्यासउवाच ॥ अस्त्येकःपरमोपायो भवतःपापनिष्कृतौ ॥
सर्व्वभक्षकृतःपुंसो बदरीशरणंमहत् २७ ॥

व्यासदेव अग्निको कहतेभये तेरे पापके प्रायश्चित्त में एक परम उपायहै सब भक्षण करनेवाले पुरुषका उत्तम शरण बदरी क्षेत्रहै २७ ॥

यत्रास्तेभगवान्साक्षाद्देवदेवोजनार्द्दनः ॥
भक्तानामप्यभक्तानामघहामधुसूदनः २८ ॥

जिस बदरीक्षेत्र में देवताओं का देवता मधुदैत्यका मारनेवाला साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण भक्तोंका नहीं भक्ति करनेवालों का भी पाप दूर करने वाला बैठाहै २८ ॥

तत्रगङ्गाम्भसिस्नात्वा विष्णोःकृत्वापरिक्रमाम् ॥
दण्डवत्प्रणिपातेन सर्व्वपापक्षयोभवेत् २९ ॥

तिस बदरीक्षेत्र में अलकनन्दाजी के जल विषे स्नानकरके नारायणकी परिक्रमा करके साष्टांग प्रणामकरके सब पापों का क्षय होताहै २९ ॥

ततोव्यासमुखाच्छ्रुत्वा ऋषीणामनुवादतः ॥
उत्तराभिमुखोवह्निर्गन्धमादनमाययौ ३० ॥

तब ऋषीश्वरों के कहने से व्यासदेवके मुखसे वचन सुनकरके उत्तरदिशा के सम्मुख होके अग्निदेवता गन्धमादन पर्व्वतको आवतेभये ३० ॥

ततोबदरिकांप्राप्य स्नात्वागङ्गाम्भसिस्वयम् ॥
नारायणाश्रमंगत्वा नत्वाप्रोवाचभक्तिमान् ३१ ॥

तब बदरीक्षेत्रको पायके आप अग्निदेवता अलकनन्दाजी के जलमें स्नान करके श्रीनारायणके आश्रमको गमन कर भक्तियुक्त नमस्कार करके कहने लगे ३१ ॥

अग्निरुवाच ॥

विशुद्धविज्ञानघनंपुरातनं सनातनंविश्वसृजःपतिंगुरुम् ॥
अनेकमेकंजगदेकनाथं नमाम्यनन्ताश्रितशुद्धिबुद्धिम् ३२ ॥

अग्निदेवता स्तुति करतेभये निर्म्मल जो अनुभवहै तिसकरके पूर्ण प्राचीन सदा नये ब्रह्माके स्वामी और पैदाकरनेवाले भी अनेक रूपके जगत् के एक नाथ निर्म्मल बुद्धिने जिनका आश्रय कररक्खा है जिसका पार नहीं मिलता ऐसे प्रकारके तुमको मैं नमस्कार करता हूं ३२ ॥

मायामयींशक्तिमुपेत्यविश्वकर्त्तारमुद्यद्रजसोपयुक्तम् ॥
सत्त्वेनचास्यस्थितिहेतुमुग्रप्रख्यन्तमोनिर्ग्रसितारमीडे ३३ ॥

योगमाया रूप शक्तिको अंगीकार करके उदय होताहुआ जो रजोगुण है तिसकरके युक्त ब्रह्मरूप होके विश्वको करनेवाला सत्त्वगुण करके इस विश्वका पालन करनेका कारण तमोगुण करके विश्वको ग्रास करनेवाले रुद्रहै नाम जिसका ऐसे तुमको नमस्कार करता हूं ३३ ॥

अविद्ययाविश्वविमोहआत्मन् विश्वैकरूपंविततंत्रिलोक्याम् ॥
विद्यासितंत्वांसकलज्ञमेतत् स्वविद्ययाजीवमयंप्रपद्ये ३४ ॥

अविवेक करके विश्वको मोहन करनेवाले ऐसे अपने विषे तीनलोक में फैलरहा विश्वका एकरूप होरहा चैतन्यशक्ति करके शुद्धभी इस विश्वको

सम्पूर्ण जाननेवाले भी अपनी ज्ञानशक्ति करके जीवस्वरूप होरहेभी तुमको नमस्कार करताहूं ३४ ॥

भक्तेच्छयास्वीकृतदेहयोगं माभोगभोग्यायतभोगयोगम् ॥
कौशेयपीताम्बरजुष्टमिष्टविचित्रशक्तीष्टमजेष्टमीडे ३५ ॥

भक्तोंकी इच्छाकरके अंगीकार कियाहै देहका धारना जिन्हों ने लक्ष्मी के भोगके वास्ते शेषनाग के लम्बायमान देहविषे जिसका योगहै उत्तम पीताम्बर ओढरहे नानाप्रकारकी शक्तियों के प्यारे योगमायाके नाथ ऐसे प्रकार के स्वामी की मैं स्तुति करताहूं ३५ ॥

इतिप्रसन्नोभगवान् स्तुतःसर्व्वहृदिस्थितः ॥
प्रोवाचमधुरंवत्स पावकंपावनार्थिनम् ३६ ॥

हे कार्त्तिकेय ! सबके हृदय में स्थित होरहे भगवान् इसतरहै स्तुति किये गये प्रसन्न होके पवित्र होने की इच्छा करते ऐसे अग्निको मधुर वचन कहतेभये ३६ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ वरंवरयभद्रन्ते वरदोहमुपागतः ॥
स्तवेनानेनतुष्टोहं विनयेनतवानघ ३७ ॥

श्रीभगवान् कहतेभये तुझको कल्याण होवै वरको मांग मैं वर देनेवाला तेरे निकट आय पहुँचाहूं तेरे इस स्तुति करने से और नम्रतासे भी तेरे ऊपर प्रसन्न हूं ३७ ॥

अग्निरुवाच ॥ ज्ञातंभगवतासर्व्वं यदर्थमिहचागतः ॥
तथापिकथयाम्येतदीश्वराज्ञानुपालनम् ३८ ॥

अग्नि कहतेभये जिस निमित्त मैं यहां आयाहूं वह सब आपका जानाहुआहै तौभी यह मैं कहता हूं क्योंकि ईश्वरकी आज्ञा पालन करनी चाहिये ३८ ॥

सर्व्वभक्षभवाघौघविनिवृत्तिःकथंभवेत् ॥
अत्यन्तभयसम्पत्तिरेतस्माज्जायतेमम ३९ ॥

सब भक्षण करने से उत्पन्न हुआ जो पापका समूह है तिससे किसतरह मेरी छुट्टी होवे इस पातकसे मुझको अत्यन्त भयकी वृद्धि होती है ३९ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

क्षेत्रदर्शनमात्रेण प्राणिनांनास्तिपातकम् ॥
मत्प्रसादात्पातकन्तु त्वयिमास्तुकदाचन ४० ॥

श्रीभगवान् कहते भये इस क्षेत्रके देखनेमात्रसे प्राणियों का पाप नहीं रहता है मेरे प्रसन्न होने से तो तेरे विषे कदाचित् भी पातक स्थिर नहीं रहसक्ता है ४० ॥

ततःप्रभृतिपूतात्मा पावकःसर्व्वतोदिशम् ॥
कलयावस्थितश्चात्र द्रवत्वेनावतिष्ठते ४१ ॥

उस दिनसे लेके अग्निदेवता पवित्र स्वरूप होके सब दिशाओं में रहते भये इस बदरीक्षेत्र में भी एक कला करके स्थित होके तप्त जलके रूपसे तप करता भया ४१ ॥

यएतत्प्रातरुत्थाय शृणोतिश्रद्धयाशुचिः ॥
अग्नितीर्थकृतस्नानफलमाप्नोत्यसंशयः ४२ ॥

जो पुरुष प्रातःकाल में उठकरके पवित्र होके श्रद्धा से इस कथा को सुनताहै वह तप्तकुण्डमें स्नान कियेके फल को पाताहै इसमें सन्देह नहीं है ४२॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे शिवकार्त्तिकेयसंवादे बदरीमाहात्म्ये देवानन्दपुरीकृत भाषाटीकायांद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

स्कन्दउवाच ॥ भगवन्भूतभव्येश सर्व्वधर्म्मविशारद ॥
अग्नितीर्थस्यमाहात्म्यं कृपयावदमेपितः १ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये भूत भविष्य वर्त्तमान के स्वामी सब धर्मों के विषे आप प्रवीण हो पिताजी कृपा करके मेरे पास अग्नितीर्थ का माहात्म्य कहो १ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ अतिगुह्यमिदंतीर्थं सर्व्वतीर्थेषुदेहिनाम् ॥
संक्षेपात्कथयाम्येतत्त्वादरवशादहम् २ ॥

महादेवजी कहनेलगे सब तीर्थों विषे यह अग्नितीर्थ प्राणियों को अतिगुप्त है इस तीर्थ को तेरे आदर के वश से संक्षेप से कहता हूं २ ॥

महापातकिनोयेच अतिपातकिनस्तथा ॥
स्नानमात्रेणशुद्ध्यन्ति विनायासेनपुत्रक ३ ॥

बड़े पाप करनेवाले भी तैसाही नित्य पातक करनेवाले ऐसे पुरुष विना परिश्रम करके हे कार्त्तिकेय ! स्नान करनेही से शुद्ध होजाते हैं ३ ॥

प्रायश्चित्तैनयत्पापं नगच्छेन्मरणान्तिकम् ॥
स्नानमात्रेणतीर्थेस्य पातकंतद्विशुद्ध्यति ४ ॥

जो पाप मरण पर्य्यन्त प्रायश्चित्त करने से नहीं दूर होवे वह पातक अग्नितीर्थ के स्नान करनेही से शुद्ध होता है ४ ॥

अत्यन्तमलसंबन्धाद्यथाशुद्ध्यतिहाटकम् ॥
तथाग्नितीर्थस्नपनाद्देहीपापैर्विमुच्यते ५ ॥

जैसे अग्नि बिषे रखके अत्यन्त मैल फूंकेजाने से सुवर्ण शुद्ध होता है तैसेही पुरुष अग्नितीर्थ बिषे स्नान करने से पापों करके छूट जाता है ५ ॥

नीरबिन्दुंकुशाग्रेण पीत्वावर्षत्रयंजनः ॥
अन्यक्षेत्रेतपःकृत्वा तदत्रस्नानमात्रतः ६ ॥

और क्षेत्रों में मनुष्य को तीनवर्ष तक कुशके अग्रभाग करके जलके बूंद को पी करके तप करने से जो फल होता है वह फल इस तीर्थ बिषे स्नान करने से होता है ६ ॥

ब्राह्मणान्भोजयित्वास्मिन् यथाविभवसम्भवैः ॥
दरिद्रताकुलेतेषां नकदाचित्प्रजायते ७ ॥

अपनी सम्पत्ति के अनुसार पैदा कियेगये अन्नादि पदार्थ करके जिन्होंने इस तीर्थ में ब्राह्मणों को भोजन देदिया है उन पुरुषों के कुलमें कदाचित् भी दरिद्र नहीं होता है ७ ॥

उपवासेनयःप्राणान् वह्नितीर्थेत्यजेन्नरः ॥
साभित्त्वासूर्य्यलोकादीन् विष्णुलोकंप्रपद्यते ८ ॥

जो मनुष्य उपवास करके अग्निके तीर्थ में प्राणों को त्याग करता है वह पुरुष सूर्य्यादि देवतों के लोकों को भेद करके विष्णु के लोक को प्राप्त होता है ८ ॥

चान्द्रायणसहस्रैस्तु कृच्छ्रैःकोटिभिरेवच ॥
यत्फलंलभ्यतेमर्त्यैस्तत्स्नानाद्वह्नितीर्थतः ९ ॥

हजार चान्द्रायणों करके कोटि कृच्छ्रनाम व्रतों करके भी मनुष्यों को जो फल मिलता है वह फल अग्नितीर्थ में स्नान करने से पाया जाता है ९ ॥

प्रमादादत्रकुर्वन्ति पापमस्मिन्षडानन ॥
जपेनपवनायामाद्विशुद्धिरितिमेमतिः १० ॥

हे कार्त्तिकेय ! इस बदरीक्षेत्र में प्रमाद से जो पाप करते हैं उन पुरुषोंकी

निर्मलता जप करके प्राणायाम करने से इस अग्नितीर्थ में होती है यह मेरी सम्मति है १० ॥

ज्ञानेनमोहवशतः पापंकुर्वन्तियेधमाः ॥
पैशाचींयोनिमायान्ति यावदिन्द्राश्चतुर्दश ११ ॥

जो अधम पुरुष जानकरके मोहके वशसे बदरीक्षेत्र में पाप करते हैं वह जब तक चौदह इन्द्र बदलेजाते हैं तब तक पिशाचयोनि को प्राप्त होते हैं ११ ॥

अनाश्रमावाश्रमावा यावद्देहस्यधारणम् ॥
नतीर्थेपातकंकुर्य्युः पुरुषाबुद्धिपूर्व्वकम् १२ ॥

ब्रह्मचारी या गृहस्थ या वानप्रस्थ या दण्डी अथवा इन आश्रमों से बाह्य पुरुष के जब तक देहका धारण होता है तब तक जाके तीर्थ में पातक नहीं करैं १२ ॥

स्नानंदानंजपोहोमो ध्यानंदेवार्चनंतथा ॥
अत्रानन्तगुणंप्रोक्तमन्यतीर्थात्षडानन १३ ॥

स्नान करना दान देना जप करना होम करना ध्यान करना तैसेही देवता पूजना हे कार्त्तिकेय! दूसरे तीर्थ से इस अग्नितीर्थ में अनन्त गुण कहा है १३ ॥

बहूनिसन्तितीर्थानि पावनानिमहान्त्यपि ॥
वह्नितीर्थसमंतीर्थं नभूतंनभविष्यति १४ ॥

तीर्थ तो बड़े और बहुत हैं पवित्र करनेवाले भी हैं परन्तु अग्नितीर्थ के समान पवित्र न हुआ न होवैगा १४ ॥

नब्रह्मानशिवःशेषो नदेवानचतापसाः ॥
शक्नुवन्तिफलंनालं वक्तुंपावकतीर्थजम् १५ ॥

अग्नितीर्थ का माहात्म्य सम्पूर्ण कहने को ब्रह्माकी भी सामर्थ्य नहीं न मेरी सामर्थ्य है शेषनागकी भी सामर्थ्य नहीं देवतोंकी सामर्थ्य नहीं ऋषियों को सामर्थ्य नहीं है १५ ॥

किंतेषांबहुभिर्यज्ञैः किंदानैर्नियमैर्यमैः ॥
येषांपावकतीर्थेस्मिन् स्नानंपञ्चदिनम्भवेत् १६ ॥

उन मनुष्यों के बहुत यज्ञों करके क्या है दानों करके क्या है व्रतों करके क्या है प्राणायाम इन्द्रियों के दमन करके भी क्या है जिन मनुष्यों का पांच दिन तक इस अग्निके तीर्थ में स्नान होवै है १६ ॥

उपवासत्रयंकृत्वा पूजयित्वाजनार्दनम् ॥
नरःपावकतीर्थेस्मिन् सभवेत्पावकोपमः १७ ॥

इस अग्निके तीर्थ विषे जो पुरुष तीन उपवास करके नारायण को पूजन करके रहता है वह पुरुष अग्निके समान रूपका होता है १७ ॥

शिलापञ्चकमध्यस्थं सान्निध्यंनित्यदाहरेः ॥
तत्रैवपावकंतीर्थं सर्व्वपापप्रणाशनम् १८ ॥

पांच शिलाओं के बीच में सबकाल विषे नारायणका निकट वास है उसी जगह सब पापोंका नाश करनेवाला अग्निका तीर्थ है १८ ॥

स्कन्दउवाच ॥ कथंतत्रशिलापञ्च केनवातत्रनिर्मिताः ॥
किंपुण्यंकिंफलंतासां वक्तुमर्हसिमेपितः १९ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये हे पिताजी ! उस जगह पांच शिला किस तरह हुई हैं अथवा उस अग्नितीर्थ विषे वह पांच शिला किसने रची हैं तिन शिलों का क्या पुण्य है क्या फल है मेरे पास कहने को आप योग्य हो १९ ॥

श्रीशिवउवाच ॥

नारदीनारसिंहीच वाराहीगारुडीतथा ॥
मार्कण्डेयीशिलारम्याःशिलाःसर्वार्थसिद्धिदाः २० ॥

शिवजी कहते भये नारद की शिला १ नरसिंहजीकी शिला २ वाराहजी की शिला ३ गरुड़की शिला ४ मार्कण्डेयकी शिला ५ यह रमणीय पांच शिला सब प्रयोजनोंकी सिद्धिदायक हैं २० ॥

नारदोभगवानत्र प्रतेपेपरमंतपः ॥
दर्शनार्थमहाविष्णोर्वायुभक्षोजितेन्द्रियः २१ ॥
षष्टिवर्षसहस्राणि शिलायांवृक्षवृत्तिमान् २२ ॥

इस अग्नितीर्थ के धोरे भगवान् नारदमुनि वायु भोजन करते जितेन्द्रिय होके शिला विषे वृत्तके समान स्थित होके श्रीनारायण के दर्शनके वास्ते साठि हजारवर्ष तक अद्भुत तप करते भये २१ । २२ ॥

तदासौभगवान्विष्णुर्वृद्धब्राह्मणरूपधृक् ॥
जगामपुरतस्तस्य कृपयामुनिसत्तमम् २३ ॥
उवाचवचनञ्चारु किमिहक्लिश्यतेऋषे ॥
किंतपस्यसितद्ब्रूहि तपसाक्षीणकल्मष २४ ॥

उस समय बिषे भगवान् विष्णुने वृद्धब्राह्मणका रूप धारणकर तिस नारदके आगे जातेभये कृपाकरके ऋषियों बिषे श्रेष्ठ नारदको सुन्दर वचन कहते भये हे नारद ! इस जगह क्यों कष्ट कियाजाता है क्या तप करते हो वह मेरे पास कहो तपकरके आपके पातक दूर होगये हैं २३।२४ ॥

नारदउवाच ॥ कोभवान्विजनेरण्ये ममानुग्रहतत्परः ॥
चेतःप्रसन्नतामेति दर्शनात्तेद्विजोत्तम २५ ॥

नारदमुनि कहते भये मनुष्यों करके रहित इस वनमें मेरे ऊपर अनुग्रह करना चाहते ऐसे आप कौनहैं तुम ब्राह्मणों विषे उत्तम हो तुम्हारे दर्शन से मेरा चित्त प्रसन्नताको प्राप्त होताहै २५ ॥

इत्युक्तोनारदेनासौ शङ्खचक्रगदाधरः ॥
पीताम्बरलसत्पद्मवनमालाविभूषणः २६ ॥
श्रीवत्सकौस्तुभभ्राजत्कमलाविमलालयः ॥
सुनन्दनन्दप्रमुखैः स्तूयमानोजनार्दनः ॥
दर्शयामासरूपंस्वं नारदायकृपार्द्रितः २७ ॥

नारदमुनि ने जब इस ब्राह्मणको ऐसा कहा तब शंख चक्र गदा के धारने वाले वस्त्र जिनके पीतहैं कमलहुआ पत्र पुष्पोंकी मालाहुई भूषणहुये इनकरके शोभायमान हैं भृगुलता हुई कौस्तुभमणि हुआ इनकरके देदीप्यमान लक्ष्मी का निर्म्मल स्थान सुनन्द नन्दहैं जिसके मुख्य ऐसे पार्षद जिसकी स्तुति कर रहेहैं कृपाकरकेयुक्त नारायण नारदके वास्ते अपना रूप दिखलातेभये २६।२७॥

तंदृष्ट्वासहसोत्थाय तनुःप्राणमिवागतम् २८ ॥
कृताञ्जलिपुटोभूत्वा नमस्कृत्यपुनःपुनः ॥
तुष्टावप्रणतोभूत्वा जगतामीश्वरेश्वरम् २९ ॥

जैसे प्राणके आने में शरीर खड़ा होवै ऐसे नारायणको अकस्मात् देख के उठके अञ्जलि बांधके फेर फेर नमस्कार करके नम्रहोके सब भुवनों के ईश्वरों के ईश्वरकी नारद स्तुति करताभया २८।२९ ॥

नारदउवाच ॥

यःसर्व्वसाक्षीजगतामधीश्वरो भक्तेच्छयाजातशरीरसन्ततिः ॥
कृपामहाम्भोनिधिराश्रितानां प्रसीदतांपावनदिव्यमूर्त्तिः ३० ॥

नारद कहतेभये जो ईश्वर सबका साक्षी होरहाहै सब भुवनोंका स्वामी

है भक्तों की इच्छाकरके होते हैं अनेक देह जिसके दयाका महासमुद्र जो आश्रय करनेवालोंका है दर्शन करनेवालों को पवित्र करनेवाली जिसकी दिव्यमूर्त्ति है वह प्रसन्न होवै ३० ॥

हितायलोकस्यसतोसतःपुनर्निशातनायाविरभूत्कलाभिः ॥
प्रसन्नलीलाहसितावलोकनः प्रसीदतांसत्त्वनिकायमूर्त्तिः ३१ ॥

सज्जन लोगों के भले के निमित्त व दुर्ज्जन लोगों के नाशके लिये सब काल में प्रसन्न लीलाकरके हँसता देखता पूर्णकलाओं करके जो प्रकट होता है वह सम्पूर्ण सत्त्वगुणकी मूर्त्ति धारनेवाला ईश्वर प्रसन्न होवै ३१ ॥

कन्दर्पलावण्यविलाससुन्दरः प्रसन्नगम्भीरगिरेन्दिरोत्सवः ॥
समाश्रितानांवरकल्पपादपः प्रसीदतांदीनदयालुवर्य्यः ३२ ॥

कन्दर्प्प के समान रमणीय विलास करके सुन्दर प्रसन्न और गम्भीर जो वाणी है तिसकरके लक्ष्मी के उत्सव करनेवाला आश्रय करनेवालों को श्रेष्ठ कल्पवृक्ष दुर्ब्बलों के ऊपर दया करनेवालों में श्रेष्ठ ऐसे प्रकारका ईश्वर प्रसन्न होवै ३२ ॥

यदङ्घ्रिपद्मार्चननिर्म्मलान्तरं ज्ञानासिनाशातितबन्धहेतवः ॥
विन्दन्तितद्ब्रह्मसुखंगतक्लमाः प्रसीदतांदीनदयार्द्रचेताः ३३ ॥

जिस ईश्वरके चरणारविन्दका पूजन करने से निर्म्मल हुआ जो भीतर का ज्ञान है वही जो खड्ग है तिसकरके काटे हैं बन्धनके कारण जिन्हों ने परिश्रम जिनका दूर होगयाहै ऐसे होके ज्ञानी पुरुष सुखपूर्व्वक उस ब्रह्मको प्राप्त होते हैं दयाकरके कोमल दुर्ब्बलों में चित्त जिसका रहता है वह प्रसन्न होवै ३३ ॥

संसारवारांनिधिबद्धसेतुर्यःसृष्टिपालान्तविधानहेतुः ॥
उपात्तनानागुणलब्धमूर्त्तिः प्रसीदतांब्रह्मसुखानुभूतिः ३४ ॥

संसाररूप समुद्र तरने को जिसने पुल बांधा है व जिसने रज सत्त्व तम गुणों करके देह ग्रहण करके ब्रह्मा विष्णु महेश्वरनाम पाके सृष्टिपालन संहार के विधानका कारण किया है वह ब्रह्मसुखका अनुभव करनेवाला ईश्वर प्रसन्न होवै ३४ ॥

यइन्द्रियाधिष्ठितभूतसूक्ष्मविधानहेतुर्द्युमतांवरिष्ठः ॥
जीवात्मतांगच्छतिमाययास्वयासएकईशोभगवान्प्रसीदताम् ३५

दश इन्द्रिय दश उनके देवता दश गुण महत्तत्त्व अहङ्कार पञ्च महाभूत मन बुद्धि चित्त के रचने का कारण प्रकाश करनेवालों में श्रेष्ठ जो ईश्वर अपनी त्रिगुण माया करके जीवात्मा के स्वरूप को प्राप्त होता है वह एक स्वामी भगवान् प्रसन्न होवै ३५ ॥

सद्ग्गुणैर्योनविलिप्यतेमहान् गुणाश्रयत्वेपियथावियद्घनैः ॥
एकोहिनानागुणसंप्रयुक्तः प्रसीदतांदीनदयालुवर्य्यः ३६ ॥

गुणों के आश्रित होने में भी समान और अनन्त जो ईश्वर है गुणों करके नहीं लिप्त होता है जैसे बादलों के आश्रय होरहा भी आकाश उन बादलों करके लीपा नहीं जाताहै गुणों करके युक्त जो एक ईश्वर नाना प्रकार का होरहा है वह दीनों के ऊपर दया करने वालों में श्रेष्ठ प्रसन्न होवै ३६ ॥

यस्यानुवर्तिनोदेवा विपदांपदमम्बुधिम् ॥
कृत्वावत्सपदंस्वर्गे निरातङ्कावसन्तिहि ३७ ॥

जिस ईश्वरकी आज्ञा करनेवाले देवता सब विपत्तियों का स्थान इस संसारसमुद्र को बछड़े के खुरके बराबर करके स्वर्गलोक में निर्भय होके वास कररहे हैं ३७ ॥

नमस्तेवासुदेवाय नमःसङ्कर्षणायच ॥
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सर्वभूतात्मनेनमः ३८ ॥

श्रीकृष्ण जो तुमहो तुमको नमस्कार है बलभद्र जो तुमहो तुमको नमस्कार है प्रद्युम्न रूप के तुमको नमस्कार है अनिरुद्ध रूपके तुमको नमस्कार है सब प्राणियों के अन्तर्यामी तुमको नमस्कार है ३८ ॥

अद्यमेजीवितंब्रह्मन्नद्यमेसफलंतपः ॥
अद्यमेसफलंज्ञानं दर्शनात्तेजनार्दन ३९ ॥

हे नारायण! आपके दर्शन से आज मेरा जीवन सफल हुआ आज मेरा तप किया सफल हुआ आज मेरा ज्ञान सफल हुआ है ३९ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ तुष्टोहंतपसानेन स्तोत्रेणतवनारद ॥
त्वत्तोभक्तोनमेकश्चित्त्रिषुलोकेषुविद्यते ४० ॥

श्रीनारायण कहते भये हे नारद ! तेरे इस तप व स्तुति करके मैं प्रसन्न हूं तीनों लोकों में तुझ से दूसरा भक्त मेरा कोई नहीं है ४० ॥

वरंवरयभद्रंते वरदोहंतवागतः ॥
मद्दर्शनान्तःकामानां सर्वेषांविद्धिनारद ४१ ॥

हे नारद ! तुझको कल्याण होवे वर मांगिये तेरे वर देनेवाला मैं आय पहुँचा हूं सब अभिलाषों की समाप्ति मेरे दर्शनसेही होती है तू निश्चय करके जान ४१ ॥

नारदउवाच ॥ वरदोसियदादेव वरार्होयदिचाप्यहम् ॥
भक्तिंस्वचरणाम्भोजे निश्चलांदेहिमेविभो ४२ ॥

नारद जी कहते भये हे देव ! जो आप वर देनेवाले हो और जो मैं भी वरपाने के योग्य हूं तो अपने चरणारविन्द में मुझको निश्चल भक्ति दीजिये ४२ ॥

मच्छिलासन्निधानंच नत्याज्यंतेकदाचन ४३ ॥
मत्तीर्थदर्शनात्स्नानात्स्पर्शाद्वाचमनात्तथा ॥
देहैर्नयुज्यताद्देही तृतीयोस्तुवरोमम ४४ ॥

मेरी शिला का निकट भी तुमको कदापि नहीं त्याग करना चाहिये और मेरे तीर्थके दर्शनसे स्नानकरनेसे अथवा तैसेही आचमन करनेसे पुरुष शरीरों का संयोग न पावै यह तीसरा वर मुझको होवै ४३।४४ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ एवमस्तुतवस्नेहात्तवतीर्थेवसाम्यहम् ॥
चराचराणांजन्तूनांकल्याणायनसंशयः ४५ ॥

श्रीनारायण कहते भये कि ऐसाही होवै तेरे स्नेहसे तेरे तीर्थ में नित्य वास करूंगा स्थावर जंगम प्राणियोंके कल्याणके निमित्त इसमें संदेह नहीं है ४५ ॥

एवमुक्त्वाहरिःसाक्षात्तत्रैवान्तरधीयत ॥
नारदोपिमहातेजादिनैःकतिपयैर्गुह ॥
बदरीमावसन्हृष्टोययौमधुपुरींततः ४६ ॥

इतना कहकरके आप नारायण उसी जगह छिपजाते भये हे कार्तिकेय! बड़े तेजका धारनेवाला नारदमुनि भी कितनेही दिनोंतक प्रसन्न होके बदरी में वास करता हुआ तहांसे मथुरा नगरी को जाताभया ४६ ॥

स्कन्दउवाच ॥ मार्कण्डेयशिलायास्तुमाहिमानंवदस्वमे ॥
किंपुण्यंकिंफलंतस्याःसंज्ञावाताद्दशीकथम् ४७ ॥

कार्तिकेय कहते भये मार्कण्डेय की शिलाकी महिमा मुझ से कहो क्या पुण्य क्या फल उस शिलाका है अथवा किसतरह मार्कण्डेयशिला नाम उसका हुआहै ४७ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ पुरात्रेतायुगस्यान्तेमृकण्डुतनयोमहान् ॥
स्वल्पायुषंनिजंज्ञात्वाजजापपरमंजपम् ४८ ॥

शिवजी कहतेभये पहिले त्रेतायुगके अन्त में मृकण्डु ऋषिका पुत्र मार्कण्डेयऋषि बड़ा ज्ञानी अपनी थोड़ी आयु जानके परम जप जपता भया ४८ ॥

द्वादशाक्षरमन्त्रेणपूजितोहरिरव्ययः ॥
चिरायुस्त्वंददौतस्यविष्णुरन्तर्द्धिमाययौ ४९ ॥

ॐ नमोभगवतेवासुदेवाय यह जो बारह अक्षरका मंत्रहै इसकरके नारायण पूजेगये उस मार्कण्डेय ऋषिको बड़ी आयु देकर भगवान् अन्तर्धान होगये ४९ ॥

मार्कण्डेयस्ततःकृत्वातीर्थाटनपरिश्रमम् ॥
दर्शनंनारदस्यासीन्मथुरायांषडानन ५० ॥

तिसके उपरान्त मार्कण्डेयऋषि तीर्थों के घूमनेका परिश्रम करके हे कार्तिकेय ! मथुरा नगरी में जाके नारदके देखने में अवतार भये ५० ॥

पूजितोवन्दितस्तेननारदोमुनिपुङ्गवः ॥
कथयामासमाहात्म्यंबदर्य्यायत्रकेशवः ५१ ॥

तिस मार्कण्डेयऋषिने पूजन किया नमस्कार किया मुनियों में श्रेष्ठ जो नारदहै वह बदरीका माहात्म्य कहताभया जहां श्रीनारायण हैं ५१ ॥

नारदउवाच ॥ किमितिक्लिश्यसेसाधोतीर्थाटनपरिश्रमैः ॥
बदर्य्याख्यंमहातीर्थंसान्निध्यंनित्यदाहरेः ५२ ॥

नारद कहते भये हे मार्कण्डेय ! अनेक तीर्थों में भ्रमण करने के परिश्रम से फिरके ऐसा क्यों क्लेश पातेहो सब काल में नारायणका जहां निकट वासहै ऐसा बदरिकाश्रम बड़ा तीर्थहै ५२ ॥

तद्गच्छतुभवान्साक्षाद्धरिंद्रक्ष्यतिचक्षुषा ॥
तच्छ्रुत्वाविस्मयापन्नोविशालामाययावृषिः ॥
स्नात्वाशिलोपविष्टः सन् जजापाष्टाक्षरंमुनिः ५३ ॥

तहां बदरिकाश्रम में जावो आप श्रीनारायणको नेत्रनके तुम देखोगे

वह वचन नारदका सुन करके आश्चर्य मानते हुये मार्कंण्डेय ऋषि बदरी को आते भये स्नान करके शिला में बैठ के मार्कण्डेयजी ॐ नमो नारायणाय इस आठ अक्षर के मंत्रको जपने लगे ५३ ॥

ततःप्रसन्नोभगवांस्त्रिरात्र्यन्तेजनार्दनः ॥
शङ्खचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितः ५४ ॥
तंदृष्ट्वासहसोत्तस्थौप्रेमगद्गदयागिरा ॥
तुष्टावप्रणतोभूत्वामार्कण्डेयोजनार्दनम् ५५ ॥

तिससे उपरांत तीन रात्रि के अंतमें भगवान् श्रीनारायण शंख चक्र गदा पद्म वनमाला करके शोभायमान प्रसन्न होके दर्शन देते भये उस नारायण को देखके मार्कण्डेयऋषि शीघ्र उठ प्रेम से पूर्ण न निकलती वाणी करके नम्र होके श्रीनारायणकी स्तुति करते भये ५४।५५ ॥

मार्कण्डेयउवाच ॥ असारेखलुसंसारेसारंतेचरणाम्बुजम् ॥
समुद्धारःकथंनॄणांत्राहिमांपरमेश्वर ५६ ॥

मार्कण्डेयऋषि कहते भये जिसमें सार कुछ भी नहीं ऐसे संसार में निश्चय करके सार आपका चरणारविंद है नहीं तो मनुष्योंका उद्धार किस तरह होना था हे नारायण ! मेरी रक्षा करो ५६ ॥

तापत्रयपरिश्रान्तमनन्तज्ञानजृम्भितम् ॥
संसारकुहरेभ्रान्तंत्राहिमांकृपयाच्युत ५७ ॥

तीनप्रकार के तापों करके थक रहा नानाप्रकार के ज्ञानोंने जिसको मोहित किया है संसार रूप गुफा में भ्रमण कर रहा ऐसे मुझ को हे नारायण ! कृपा करके रक्षा करो ५७ ॥

अनेकयोनियन्त्रेषुनिष्पिष्टंबहुवेदने ॥
गर्भवासकृतायासंत्राहिमांकरुणाम्बुधे ५८ ॥

अनेक प्रकार के योनिरूप चक्रमें पीसा गया बहुत जिसको पीड़ा होरहीहै गर्भवास के लिये फिर जिसने परिश्रम कियाहै ऐसे मुझको हे दया के समुद्र ! रक्षाकरो ५८ ॥

कृमिभक्षितसर्वाङ्गंक्षुत्पिपासाकुलंबहिः ॥
अन्त्रमालावृतंगर्भेत्राहिमांमधुसूदन ५९ ॥

बाहर आके सब अंग जिसके कीड़े भक्षण करते हैं क्षुधा से प्यास से भी

व्याकुल होरहा गर्भ में आंतों की माला करके लिपटा ऐसे मुझ को हे मधु दैत्य के मारनेवाले ! रक्षाकरो ५९ ॥

अमेध्यादिभिरालिप्तंनिश्चेष्टंभ्रमणाकुलम् ॥
स्मरन्तंनिजकर्मौघंत्राहिमांभक्तवत्सल ६० ॥

मल मूत्रादि करके पुता हुआ चेष्टा जिसकी जाती रही बारंबार घूमने से व्याकुल इस तरह गर्भ में अपने कर्मों के समूह को याद करता ऐसे मुझ को हे भक्तों के प्यारे ! रक्षाकरो ६० ॥

वचनादानविश्वासासक्तंभयमुपागतम् ॥
गर्भवासमहादुःखात्राहिमांकृपयाव्यय ६१ ॥

वचन का जो ग्रहण करना है तिसके विश्वास में लगा हुआ गर्भवास के बड़े दुःख से भयको प्राप्त होरहा ऐसे मुझ को हे नारायण ! कृपा करके रक्षाकरो ६१ ॥

जरामरणरोगादिदुःखसंसारपीडितम् ॥
दुःखाब्धौसुखबुद्धिंमांकृपासिन्धोनिशामय ६२ ॥

वृद्ध होना मरना रोग इतने मुख्य दुःख जिसमें हैं ऐसे संसारकरके पीड़ित होरहा दुःखों के समुद्र में सुख जानरहा ऐसे मुझको हे कृपाके समुद्र ! देखिये ६२ ॥

कदाविट्कृमितामाप्तंकदाचिद्दमरेश्वरम् ॥
कदाचिदुद्भिजत्वंचतिर्यक्त्वंनरतांतथा ६३ ॥
सर्वयोनिसमापन्नमापन्नंविगतप्रभम् ॥
अनाथंत्वांसमापन्नंत्राहिमांमधुसूदन ६४ ॥

कभी विष्ठाके कीड़ेकी योनिको प्राप्त हुआ कभी इन्द्ररूपको प्राप्त हुआ कभी वृक्षादि जन्मको प्राप्त हुआ कभी पशु पक्ष्यादिरूप को प्राप्त हुआ कभी मनुष्यरूप को प्राप्त हुआ सब योनियों को प्राप्त कष्टदशाको प्राप्त कांति जिसकी नष्ट हुईहै नाथ जिसका नहीं आज आपकी शरण हुआ ऐसे मुझ को हे मधु दैत्यके मारनेवाले ! रक्षाकरो ६३।६४ ॥

एवंस्तुतिंततःकृत्वामार्कण्डेयेनधीमता ॥
प्रीतस्तमाहविप्रर्षेवरंमेव्रियतामिति ६५ ॥

इसप्रकार से बुद्धिमान् मार्कण्डेयऋषिने स्तुति करके प्रसन्न किया श्रीनारायण उस मुनिको कहते भये हे मार्कण्डेय ! मुझसे वरमांगिये ६५ ॥

मार्कण्डेयउवाच ॥ यदितुष्टोभवान्मह्यंभगवान्दीनवत्सलः६६॥
निश्चलात्वयिमेभक्तिःपूजायांदर्शनंतथा ॥
शिलायांतवसान्निध्यमेवमेषवृतोमया ६७ ॥

मार्कण्डेयऋषि कहतेभये जो तुम भगवान् दुर्बलोंके प्यारे मेरे ऊपर प्रसन्न हो तो तुम्हारे में मेरी भक्ति निश्चल होवै तैसेही पूजा में आपका दर्शन होवै इस शिला में तुम्हारा निकट वास होवै यह वर मैंने बराहै ६६।६७ ॥

सूतउवाच ॥ तथेत्युक्त्वामहाविष्णुर्ययावन्तर्हितंद्विजाः ॥
मार्कण्डेयस्तुसन्तुष्टोजगामपितुराश्रमम् ६८ ॥

सूत नैमिषारण्य में कहते भये हे ब्राह्मणो ! तैसेही होगा ऐसा कहकर श्रीनारायण जी अन्तर्द्धानहुये और मार्कण्डेय मुनि जी प्रसन्न होतेहुये अपने पिताके आश्रमको चलेगये ६८ ॥

उपाख्यानमिदंपुण्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥
शृणुयाच्छ्रावयेन्मर्त्योगोविन्देलभतेरतिम् ६९ ॥

पुण्य बढ़ानेवाले व सब पापों के नाश करनेवाले इस वृत्तान्त को जो पुरुष श्रवण करै जो औरोंको सुनावै वह श्रीनारायण में प्रीति पाताहै ६९ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेबदरीमाहात्म्येदेवानन्दपुरीकृतभाषाटीकायां
तृतीयोध्यायः ३ ॥

स्कन्दउवाच ॥ वैनतेयशिलायास्तुमाहात्म्यंवदमेपितः ॥
किंपुण्यंकिंफलंतस्याअनुभावंचकिंभवेत् १ ॥

स्वामिकार्तिकेय कहते भये हे पिताजी ! गरुड़शिलाका माहात्म्य मुझ से कहो उस शिलाका क्या पुण्यहै क्या फलहै क्या प्रभाव है १ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ कश्यपाद्विनतागर्भेमहाबलपराक्रमौ ॥
गरुडारुणौप्रजायेतामरुणःसूर्यसारथिः २ ॥

शिवजी कहने लगे बड़े बलके बड़े पराक्रम के कश्यप प्रजापति से विनताके गर्भमें गरुड़ अरुण दो पुत्र होते भये अरुण तो सूर्यका सारथि होताभया २॥

बदर्य्यादक्षिणेभागेगन्धमादनशृङ्गके ॥
गरुडस्तपआतेपेहरिवाहनकाम्यया ३ ॥

बद्रीके दाहिने भागमें गंधमादन पर्वतके शृंगमें नारायणका मैं वाहन होऊं इस कामनाकरके गरुड़ तपको करता भया ३ ॥

फलमूलजलाहारोनिर्द्वन्द्वस्तपतत्परः ॥
पदैकेनोपसंगम्यभुवंतस्थौनिरामयः ४ ॥

फल मूल जल इनको भोजन करता व शीतको सहता तप में तत्परहोके एक चरण से पृथ्वी को दबाके दुःख जिसका जाता रहा ऐसा खड़ारहता भया ४ ॥

त्रिंशद्वर्षसहस्राणिहरिदर्शनलालसः ॥
ततस्तुभगवान्साक्षात्पीतवासानिजायुधः ॥
आविरासीद्यथाप्राच्यांदिशीन्दुरिवपुष्कलः ५ ॥

तीस हजारवर्षतक नारायण का दर्शन चाहता हुआ रहताभया तब तो भगवान् आप पीताम्बर ओढ़े व शङ्ख चक्र गदा पद्म धारण किये प्रकट होत भये जैसे पूर्वदिशा में पूर्ण चन्द्रमा प्रकट होवै ५ ॥

उवाचवचनंसम्यग्मेघगम्भीरानिःस्वनः ॥
तथापिनबहिर्वृत्तिर्दध्मौदरवरंहरिः ॥ ६ ॥

मेघके समान गम्भीर जिसका शब्द है ऐसे भगवान् भले प्रकार से कहते भये तौभी गरुड़ ने बाहर दृष्टि न की तब नारायण पांचजन्य शङ्ख को बजावते भये ६ ॥

तथापिनबहिर्वृत्तिर्गरुडस्यमहात्मनः ७ ॥
ततःप्रविश्यभगवानन्तरंपवनक्रमात् ॥
बहिरुन्मुखतांचेतउन्नीयबहिराबभौ ८ ॥

तौभी महात्मा गरुड़ की चित्तवृत्ति बाहर न हुई तब भगवान् वायु के क्रमसे गरुड़ के भीतर प्रवेश करके चित्तको बाहर सन्मुख करके आप बाहर शोभित भये ७।८ ॥

भगवन्तंहरिंदृष्ट्वागरुडोगतसाध्वसः ॥
पुलकाङ्कितसर्वाङ्गस्तुष्टावविहिताञ्जलिः ९ ॥

भगवान् श्रीनारायण को देखके भय जिसका जातारहा सब अङ्गों में जिसके रोमांच का चिह्न हर्ष से हुआ है ऐसा होके अंजलि बांध गरुड़ स्तुति करता भया ६ ॥

गरुडउवाच ॥

जयजयत्रिभुवनजनमनोभवघनगुण विदलितसकलगीर्वाण वन्दितचरणकमलयुगलवहलविदलितरिपुवनसबलाभितो विद्योतमानः सकलसुरासुरमुकुटकोटिविलसितचरणकमलपीठ निरसितनिजजनहृदयातिमिरपटलवहलहिमकर इव त्रिविधसन्तापसन्दोहतिमिरहरणनिजजनमानससरोजषट्पदाविदिताशेषब्रह्माण्डजगदुदयस्थितिलयविलासविविधसन्तापे विलासितः त्रिविधमूर्त्तिकीर्तिविस्फूर्जितजगदन्धसन्दोहतिमिरदिनकरं विदितसकलवेदविद्योतमानमानिनीजनविनोदपञ्चबाणः पदनखनीरपवित्रीकृतगीर्वाणमुनिमानसवन्दितचरणप्रसारभूत जगतामधीशनमस्ते १० ॥

गरुड़ कहते भये कि जयहोय जयहोय तीनलोक के जीवों के कामहो व घने जिस में गुण हैं ऐसे हो व्याकुल होरहे जो सब देवता हैं वह जिसके दो चरण कमलों को प्रणाम कररहे हैं बहुत नष्ट किया है शत्रुओं का बन जिसने बल सहित चारों तरफ से प्रकाशमान हो सब देव दानवों के मुकुटों के अग्रभाग करके शोभायमान जो चरणकमलों का सिंहासन है तिस से दूर किया है अपने भक्तों के हृदय का अन्धकार का मण्डल जिसने परिपूर्ण चन्द्रमा जैसा तीनप्रकार का जो सन्ताप का समूह है उसी अन्धकार को हरनेवालेहो अपने भक्तों के मन रूप कमल के भ्रमरहो मालूम है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का जगत् का सृष्टि पालन संहार का विलास जिसको विश्वके निमित्त अनेक सन्तापों करके विराजमान हो तीन प्रकार की मूर्त्तियोंकी कीर्त्ति करके जगत्की शोभा कररहे हैं अज्ञान का समूह रूप अँधेरे के सूर्य्यहो जानेहुये सम्पूर्ण वेद जो हैं उनसे विराजते हैं स्त्रियों को तृप्त करनेवाले कामहो पैरों के नखों के जलसे पवित्र किये हैं देवता जिसने मुनियों के मनसे पूजेगये जो चरण कमल हैं वही है सार जिन में ऐसे लोकों के स्वामी हो तुमको नमस्कार है १० ॥

अपिचअष्टशक्तिपरितोवनमाली
पीतचैलकुसुमावलिशोभः ॥

पङ्कजारकरविराजिपदाब्जः
पातुमामवहितेन्द्रियवर्गः ११ ॥

फिर भी गरुड़ स्तुति करते भये आठ सिद्धियों करके वेष्टित वनमाला धारनेवाले पीतवस्त्र से फूलों के हारों से शोभरहे कमलों के समूह करके चरणारविन्द जिसके विराजे हैं सब इन्द्रिय सावधान जिसके हैं ऐसे होके नारायण मुझको रक्षाकरैं ११ ॥

भक्तहृत्कमलराजितमूर्त्तिर्दुष्टदैत्यदलनोच्छ्रितकीर्तिः ॥
बद्धसेतुरवतुश्रितलोकंप्रीतिमाननुदिनंभुवनेशः १२ ॥

भक्तों के हृदय कमल में स्वरूप जिसका शोभरहा है दुष्ट राक्षसोंके नाश करने से कीर्त्ति जिसकी फैलरही है मर्यादा बांधनेवाले सब लोकोंके स्वामी प्रसन्न होके दिन दिन में अपनेको आश्रय कररहे पुरुषकी रक्षाकरैं १२ ॥

एकएवबहुधाकृतवेषोमाययावतुमहामतिरेषः ॥
भक्तचिन्तनकृतेकृतरूपःशैशवेनबहुशासितभूपः १३ ॥

एक तुम नानाप्रकार के स्वरूप धारते योगमाया करके भक्तों के चिन्तन करने के वास्ते तुम रूपको रखतेहो बालक अवस्थाहीसे बहुत राजा जिसने मारे हैं वह महाबुद्धिमान् श्रीकृष्णावतार रक्षाकरैं १३ ॥

वेदमार्गउरुधाहितकारी रीतिरीशितुरियंगुणशाली ॥
यज्ञभुग्हृदयबन्धनहारी विश्वमूर्तिरमलांशुकहारी १४ ॥

वेदके मार्ग में अनेक प्रकार करके हित करनेवाले यही रीति स्वामीकी है सब गुणों करके शोभित यज्ञों के भोगनेवाले हृदयके बन्धन हरनेवाले विश्व की मूर्त्ति जो हैं निर्मल वस्त्र और हारधारनेवाले जो हैं १४ ॥

पालनेपिजगतांबहुदेहोरासमण्डलधृतोत्सवएषः ॥
प्रेमभक्तिपुरुषेषुसुलभ्यः पूरुषाश्रितसमस्तनिवासः १५ ॥

लोकों के पालने में भी बहुत जिसके देहहैं रासमण्डल में जिसने उत्सव बांधा है प्रीतिकरके भक्ति करनेवाले पुरुषों में सुलभ हो सबका आधार आपने किया है वह पुरुष तुमहो १५ ॥

दासवर्गहृषितोनिजदासप्रेक्षितैककरुणोवतुविश्वम् ॥
कण्ठलम्बिततरक्षुनखाग्रःक्षुब्धगोपरमणीकुचभारः १६ ॥

दासों के समूह में हर्षकर्त्ता अपने भक्तों के ऊपर दृष्टिकरते एक दयावान् सेहरिके नखों के अग्रभाग जिसके कण्ठमें लम्बायमान होरहे हैं मर्दन किये हैं गोपाङ्गनाओं के कुच मण्डल जिसने ऐसे श्रीकृष्ण विश्वकी रक्षा करें १६ ॥

लीलयायुवतिभिःकृतवेषःशेषएषभवतादुपशान्त्यै १७॥
दण्डपाणिरयमेवजनानांमुक्तिरात्मनिजमुक्तहितानाम् ॥
पावनायनहतामनुशास्ताविश्वदुःखशमनोभवतान्नः १८॥

क्रीडाकरके स्त्रियों ने जिसका स्वरूप किया है व प्रलय होने में बाकी रहते मनुष्यों का धर्मराज यही हैं अपने वैष्णव शास्त्रका कहा हुवा जिनका हितहै उनको मुक्तिरूपहै यह मेरे मुक्ति के वास्ते होवै पवित्रकरके शास्त्रने महात्माओं को शिक्षा करनेवाले वह श्रीकृष्ण हमारे संसार के दुःखों को नाश करने वाले होवैं १७।१८ ॥

एवंस्तुतस्ततःसाक्षाद्गरुडेनमहात्मना ॥
पूजार्थमाजुहावैनांगङ्गांत्रिपथगामिनीम् १९ ॥

इस प्रकार से महात्मा गरुड़ ने नारायण की स्तुति करी तब गरुड़ पूजाके वास्ते तीन मार्गों में गमन करती ऐसी गंगाजी को बुलाता भया १९ ॥

ततःपञ्चमुखीसाक्षादाविरासीन्नगोपरि ॥
तेनोदकेनपादार्घंचकारविनतासुतः २० ॥

तिसके उपरांत आप गंगाजी पर्वत के ऊपर पांच मुखकी प्रकट होती भई तिस जलकरके विनताका पुत्र गरुड़ नारायण के चरणोंको अर्घ देताभया २०॥

व्रियतांवरइत्युक्तोगरुडोहरिणाततः ॥
तवैकवाहनःश्रीमान्बलवीर्यपराक्रमैः ॥
अजेयोदेवदैत्यानांस्यामहंतेप्रसादतः २१ ॥

तब वर मांग करके नारायण ने ऐसा गरुड़ को कहा तो वर मांगता भया तुम्हारा मुख्य वाहन बड़ी कांतिका धारनेवाला बल तेज पराक्रमों करके देवतों व दानवों करके जीतने को शक्य नहीं ऐसा आपके प्रसाद से मैं होऊँ २१ ॥

इयंमन्नामविख्यातासर्वपापहराशुभा ॥
गङ्गायत्स्मरणात्पुंसांविषव्याधिर्नजायते २२ ॥

यह निर्मल गंगा सब पापों की नाश करनेवाली मेरे नाम करके जगत् में विख्यात होवै जिसके स्मरण से मनुष्योंको सर्पके विषका भय न होवै २२ ॥

एवमुक्त्वाततस्तूष्णींबभूवविनतासुतः ॥
ॐमित्युक्तात्ततोविष्णुरुवाचेदंवचोहितम् २३ ॥

इतना वचन कह करके तिसके उपरांत गरुड़ चुप होगया तब जो तैंने कहा सोई होगा करके ऐसा कहके भगवान् फेर गरुड़को यह वचन कहतेभये २३॥

बदरींत्वंप्रयाहीतिनारदेननिषेविताम् २४ ॥
स्नात्वानारदतीर्थादौउपवासत्रयंशुचिः ॥
कृत्वामद्दर्शनंतत्रसुलभंतेभविष्यति २५ ॥

नारद मुनि करके सेवन किया हुवा बदरी क्षेत्रको तू जा नारद का तीर्थ आदि लेके तीर्थों में स्नान करके शुद्ध होके तीन उपवास करके वहां मेरा दर्शन तुझको सुलभ होवेगा २४।२५ ॥

इत्युक्त्वान्तर्दधेविष्णुर्विद्युत्सौदामिनीयथा ॥
गरुडस्तुततःशीघ्रमाययौबदरींमुदा २६ ॥

इतना वचन कह करके भगवान् जैसे बिजली छिपजाती है ऐसे छिपते भये तिसके उपरांत प्रसन्न होके गरुड़ बदरी को आता भया २६ ॥

वह्नितीर्थंसमासाद्यशिलामाश्रित्यतत्परः ॥
स्नात्वाबदरीतीर्थेषुव्रतत्रयमथाकरोत् २७ ॥

अग्नि के तीर्थ को पाय करके एकाग्र होके शिलाको आश्रय करके बदरी के तीर्थों में स्नान करके इसके उपरांत तीन उपवास करता भया २७ ॥

ततस्तुनारदेतीर्थेदृष्ट्वाभगवतःस्थितिम् ॥
नमस्कृत्यविधानेनतदाज्ञातःपुनर्ययौ ॥
ततःप्रभृतिसालोकेगारुडीतिशिलोच्यते २८ ॥

तिसके उपरान्त नारदके तीर्थ में नारायण की स्थिरता देख करके विधान करके नमस्कार करके नारायण की आज्ञासे फेरजाता भया उस दिनसेलेके संसार में वह शिला गरुड़की कहीजाती है २८ ॥

स्कन्दउवाच ॥ वाराह्यावदमाहात्म्यं कीदृशंवामहेश्वर ॥
किंपुण्यंकिंफलंचास्या अभिधानंतथाकथम् २९ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये हे सदाशिव ! बराह की शिलाका माहात्म्य किसतरहका है क्या पुण्य है क्या फल है तैसेही इस शिला का वाराही नाम किसतरह हुआ है कहो २९ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ रसातलात्समुद्धृत्य महींदैवतवैरिणम् ॥
हिरण्याक्षंरणेहत्वा बदरींसमुपागतः ३० ॥

शिवजी कहते भये पहिले वाराही जी पाताल से पृथ्वीको ऊपर निकाल करके देवतों का वैरी हिरण्याक्ष दानव को संग्राम में मारकरके बदरी को आते भये ३० ॥

आकल्पान्तेमहादेवो योगधारणमाश्रितः ॥
बदर्य्याःसौष्ठवःदेव विदधेस्तुतिमात्मनः ३१ ॥

कल्पान्त पर्यन्त योगकी धारणा को आश्रय करता बदरी के अच्छे स्वरूप से श्रेष्ठ देवता वराह अपनी स्तुति को आप करते भये ३१ ॥

शिलारूपेणभगवान् स्थितिंतत्रचकारह ॥
तत्रगत्वातुमनुजः स्नात्वागङ्गाजलेमले ३२ ॥
दानंदत्त्वास्वशक्तयावै गङ्गाम्भःक्षान्तमानसः ॥
अहोरात्रंस्थिरोभूत्वा जपेदेकाग्रमानसः ३३ ॥

उस बदरिकाश्रम में भगवान् वराह शिलाका रूप कर स्थिरता करते भये तिस वराह शिला के धोरे जायके निर्मल अलकनन्दाजी के जल में स्नान करके अपनी सामर्थ्य देखके दान देके गङ्गाजी के जलसे मन जिसका क्षमायुक्त है दिन रात्रितक खड़ा हो एकचित्त होके मनुष्य जपकरै ३२।३३ ॥

शिलायांदेवदृष्टिस्तु तस्यपुंसःप्रजायते ॥
बहुनाकिमिहोक्तेन यद्यदिच्छतिसाधकः ३४ ॥
तस्यतत्सिद्धयतिक्षिप्रं यद्यपिस्यात्सुदुष्करम् ३५ ॥

उस पुरुष को शिला में वराहजी का दर्शन होता है बहुत कहकरके क्या होताहै इस लोकमें साधन करनेवाला पुरुष जो जो इच्छा करताहै उस पुरुषका जो कठिन पदार्थ करना होवे तौभी वह सिद्ध होताहै ३४।३५ ॥

नारसिंहशिलायास्तु माहात्म्यंवदमेपितः ॥
त्वत्प्रसादान्महादेव दुर्लभंश्रुतवानहम् ३६ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये हे पिताजी ! नरसिंह शिला का माहात्म्य मेरे पास कहो आप सब देवतों के देवताहो आपके प्रसाद से दुर्लभ माहात्म्य भी मैंने श्रवण कियाहै ३६ ॥

श्रीशिवउवाच॥ हिरण्यकशिपुंहत्वानखाग्रेणैवलीलया ॥
क्रोधाग्निनाप्रदीप्ताङ्गः प्रलयानलसन्निभः ३७ ॥
तदादेवैःसमागत्यस्थित्वादूरेभयात्मभिः ॥
स्तुतोसौभगवान्देवो लीलयाकृतविग्रहः ३८ ॥

महादेवजी कहते भये पहिले हिरण्यकशिपु को विना परिश्रम नखों के अ-ग्रभाग करके मारके नृसिंह जी क्रोधकी आगकरके अङ्ग जिसके प्रज्वलित होरहे हैं प्रलयकाल के अग्नि के समान भी होतेभये उस समय में डरतेहुये सब देवतों ने इकट्ठे होके दूरखड़े होकर के खेल करके जिसने शरीर धारण कियाहै ऐसे वह भगवान् नृसिंह स्वामीकी स्तुति करके प्रसन्नकिया ३७।३८॥

तदाप्रसन्नोहरिरुग्रविक्रमः
स्वतेजसाक्रान्तसुरासुरोत्तमः ॥
उवाचमत्तोवरमावृणुध्वं
गीर्व्वाणनिर्वाणसुखैकहेतुम् ३९ ॥

तब भगवान् ने उग्रकहिये भयानक पराक्रम करनेवाले अपने तेज करके देवतों में दानवों में उत्तम जिन्हों ने दवाय दिये हैं ऐसे नृसिंह प्रसन्न होके सब देवतों का निरन्तर सुखके मुख्य कारण ऐसे वरको मुझ से मांगो करके सब देवतों को यह कहते भये ३९ ॥

तदासुराणामधिपःस्वयम्भू-
रुवाचवाक्यंस्मितशोभिताननः ॥
रूपंस्वमत्युग्रमशेषदेहिनां
भयावहंसंहरनारसिंह ४० ॥

तिस समय में सब देवतों के स्वामी ब्रह्मा हंस से शोभ रहे हैं मुख जिसके ऐसे होके वचन कहते भये कि हे नारसिंह ! अतिभयानक सब प्राणियों का भय देनेवाला अपना यह रूप संहार करो ४० ॥

अनेकधैतद्विधिवद्विधाय
निधायशैलादिषुदिव्यमूर्त्तिः ॥
उवाचकिंवःकथयन्तुकृत्यं
हरिःप्रसन्नस्त्रिदशाःपरन्तप ४१ ॥

तिसके उपरांत विधिपूर्वक इस स्वरूप को नाना प्रकारका बनाके पर्वत आदि लेके स्थानों में रखके दिव्य जिनका देह है ऐसे नृसिंह प्रसन्न होके हे देवता-ओ ! तुम्हारा करने के योग्य कार्य क्या है कहो करके देवतों को कहतेभये ४१ ॥

ततोमराऊचुरलंतवैत-
द्रूपेणसंक्षोभितविश्वमूर्त्ते ॥
प्रशान्तमन्तःसुखहेतुमद्धा
चतुर्भुजंत्वां वरमीप्सिताङ्गम् ४२ ॥

तिसके उपरांत देवता कहते भये इस रूप करके तुमने विश्वकी मूर्त्तियों को त्रासदे दिया है अब त्रास नहीं होवै अत्यन्त शांत भीतर सुख देनेका कारण ऐसे प्रकार के चारभुजा धारनेवाले आपको देखने की हमारी इच्छाहै ४२ ॥

ततोहरिर्वीक्ष्यनिरीक्षणेन
दिष्टेनविश्वस्ययथौविशालाम् ॥
गङ्गाजलेक्रीडितवान्सुरेशः
सुरासुरेन्द्रोभगवानुवास ४३ ॥

तिसके उपरांत नृसिंह स्वामी दृष्टि से सब जगह देख के संसार के प्रारब्ध से बदरिकाश्रमको जाते भये देवताओं के नाथ अलकनन्दाजीके जलमें खेल करते भये देव दानवों के प्रभु नृसिंह उस दिनसे वहीं रहते भये ४३ ॥

ततोमराःशान्तभयाअथैनं
निरीक्ष्यदेवंजलमध्यसंस्थम् ॥
नत्वापरिक्रम्यतदाज्ञयाययु-
र्निरूढभावाःस्वपुरस्ततःक्रमात् ४४ ॥

तब शान्त होगया है भय जिनका ऐसे देवता जलके बीचमें स्थित होरहे नृसिंहजीको देखके नमस्कार करके परिक्रमा देके नृसिंहजी की आज्ञा पाके नृसिंहजीका भजन करते हुये क्रमसे अपने अपने लोकों को जातेभये ४४ ॥

ततःसमस्ताऋषयस्तपोधनाः
समाययुर्भक्तिभरावनम्राः ॥
नृसिंहमत्यद्भुतविक्रमंहरिं
समीडिरेबद्धकरावचोभिः ४५ ॥

तिसके उपरान्त तपस्याही जिन्हों का धनहै ऐसे सम्पूर्ण ऋषीश्वर भक्तिके भारकर के नम्रहोते हुये आते भये अति आश्चर्य देनेवाला जिसका पराक्रमहै ऐसे भगवान् नृसिंहजी को मधुरवाणी करके अंजलि बांधतेहुये स्तुति करतेभये ४५ ॥

ऋषयऊचुः ॥ नमोनमस्तेजगतामधीश
विश्वेशविश्वाश्रयविश्वमूर्त्ते ॥
कृपाम्बुराशेभजनीयतीर्थ
पदाम्बुजश्रीशदयांविधेहि ४६ ॥

सब ऋषि कहते भये सब लोकोंके स्वामी हो विश्वके प्रभुहो विश्व जिस के आश्रय में है विश्व जिस की मूर्त्ति है कृपाका समुद्र जो है सेवन करने के योग्य और पवित्र करनेवाले जिसके चरणारविन्द हैं लक्ष्मी के नाथ जो हैं ऐसे तुम को नमस्कार है नमस्कार है हमारे ऊपर दयाकरो ४६ ॥

एकोसिनानानिजमाययास
धनञ्जयोयद्वदुपाधिभिन्नः ॥
भक्तेच्छयोपात्तविचित्रविग्रहः
प्रसीदविश्वानतविश्वभावन ४७ ॥

एक तुम अपनी योगमाया करके नानाप्रकार के शोभतेहो जैसे काष्ठ की उपाधि करके एक अग्नि अनेक प्रकारका दीखताहै भक्तोंकी इच्छासे ग्रहण किये हैं नानाप्रकार के देह जिसने विश्व जिसको नमस्कार करताहै विश्वके पालनेवालेहो हमारे ऊपर प्रसन्नहो ४७॥

ततःप्रसन्नोभगवान्नृसिंहःसिंहविक्रमः ॥
उवाचवचनंचारु वरंमेव्रियतामिति ४८ ॥

उसके उपरान्त सिंह के समान पराक्रम करनेवाले भगवान् नृसिंह प्रसन्न होके ऋषियों को मुझसे वरमांगो करके यह सुन्दर वचन कहते भये ४८ ॥

ऋषयऊचुः ॥ यदिप्रसन्नोभगवान् कृपयाजगतांपतिः ॥
विशालानपरित्याज्यावरोस्माकमभीप्सितः ४९ ॥

सब ऋषि कहते भये सब भुवनों के पति आप भगवान् कृपाकरके जो हमारे ऊपर प्रसन्नहो तो आप बदरी को त्याग न करें यही हमारे मनके अभिलाषका वरहै ४९ ॥

एवमस्तुततस्सर्वे स्वाश्रमंऋषयोययुः ॥
नृसिंहोपिशिलारूपी जलक्रीडापरोभवत् ५० ॥

ऐसाही होगा करके यह सुनके सब ऋषि अपने आश्रम को जाते भये नृसिंहस्वामी भी शिला के रूपहोके जलकी क्रीड़ा में तत्पर होतेभये ५० ॥

उपवासत्रयंकृत्वाजपध्यानपरायणाः ॥
नृसिंहरूपिणंसाक्षात् पश्यन्त्येवनसंशयः ५१ ॥

तीन उपवास करके नृसिंहजी के मन्त्र जपने में ध्यानकरने में एकाग्र होतेहुये पुरुष प्रत्यक्ष नृसिंहरूपी प्रभुको देखते हैं इसमें सन्देह नहीं है ५१ ॥

यएतच्छ्रद्धयामर्त्यः शृणुयाच्छ्रावयेच्छुचिः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो वैकुण्ठेवसतिंलभेत् ५२ ॥

इस नृसिंहजीके माहात्म्य को जो मनुष्य श्रद्धाकरके शुद्धहोके श्रवण करै औरों को सुनावै वह पुरुष सब पापोंसे छूटके वैकुण्ठ में वास पाताहै ५२ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेशिवकार्त्तिकेयसंवादेबदरीमाहात्म्ये
देवानन्दपुरीकृतभाषाटीकायांचतुर्थोध्यायः ४ ॥

स्कन्दउवाच ॥ किमर्थंभगवानत्रवसतिश्रद्धयायुतः ॥
किंपुण्यंकिंफलंतस्य दर्शनस्पर्शनादिभिः १ ॥
नैवेद्यभक्षणस्यापि विष्णुपूजाकृतस्तथा ॥
प्रदक्षिणस्यचफलंब्रूहिमेकृपयापितः २ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये कि इस बदरिकाश्रममें किस वास्ते श्रद्धा करके युक्त भगवान् वास कर रहे हैं उस नारायण के दर्शन स्पर्शन स्मरण कीर्त्तन करने से क्या पुण्य क्या फल होता है महाप्रसाद भक्षण कियेका भी तैसाही विष्णुकी पूजा करनेवालेको परिक्रमा करनेका भी क्या फल होताहै पिताजी कृपा करके मुझसे कहो १।२ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ पुराकृतयुगस्यादौसर्वभूतहितायच ॥
मूर्त्तिमान्भगवानत्रतपोयोगंसमाश्रितः ३ ॥

शिवजी कहते भये पहिले सत्ययुग के आदि में सब प्राणियों के भलेके वास्ते देहधारके भगवान् नारायण इस बदरी में तपस्या करने को आश्रय करते भये ३ ॥

त्रेतायुगेऋषिगणैर्योगाभ्यासैकतत्परः ॥
द्वापरेसमनुप्राप्तेध्यानानिष्ठोतिदुर्लभः ४ ॥

त्रेतायुग में ऋषियों के समूहों के साथ केवल योगके अभ्यास में तत्पर नारायण रहते भये द्वापरयुगके प्राप्त होने में ध्यान में स्थित होके नहीं पाये जातेभये ४ ॥

ऋषीणांदेवतानाञ्चदुर्दर्शोभगवानभूत् ॥
ततोऋषिगणादेवाअलभ्यभगवद्गतिम् ॥
स्वायम्भुवंपदंयाताविस्मयाकुलचेतसः ५ ॥

तब भगवान् ऋषियों व देवतों के भी देखने में नहीं आते भये तिसके उपरांत ऋषियोंके समूह देवता भी नारायणकी गतिको नहीं पायके आश्चर्य करके चित्त जिन्होंका व्याकुल हुआहै ब्रह्माके लोकको जातेभये ५ ॥

तत्रगत्वानमस्कृत्यऊचुर्लोकेश्वरंसुराः ॥
बृहस्पतिंपुरस्कृत्यऋषयश्चतपोधनाः ६ ॥

सत्यलोकमें जाके बृहस्पतिको आगे रखके सब देवता ऋषीश्वर तप करनेवाले भी लोकोंके स्वामी ब्रह्माको नमस्कार करके कहते भये ६ ॥

देवाऊचुः ॥ नमस्तेसर्वलोकानामाश्रयःशरणार्तिहा ७ ॥
वृत्तिदःकरुणापूर्णःपितागुरुरधीश्वरः ॥
निवेदनीयाविपदःसमुद्धर्तावितासिनः ८ ॥

देवता ऋषि कहते भये सब लोकोंके आश्रयहो शरणागतोंकी पीड़ा हरनेवाले आपहो सबकी आजीविका देनेवालेहो दयासे भरेहो पिताहो शिक्षा करनेवालेहो सब करनेको समर्थहो विपत्ति आपके आगे कहने को योग्यहै विपत्ति से उद्धार करनेवाले हमारे रक्षा करनेवाले भी आपहो ७।८ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ किमर्थमागतायूयंविस्मयाकुलमानसाः ॥
मिलिताऋषिभिःसाकंब्रूतागमनकारणम् ९ ॥

ब्रह्माजी कहते भये आश्चर्य करके व्याकुल है चित्त जिन्हों का ऐसे सब ऋषियों के साथ मिलकरके सब देवता तुम किस वास्ते आयेहो यहां आने का कारण कहो ९ ॥

देवाऊचुः ॥ द्वापरेसमनुप्राप्तेविशालायांविशालधीः ॥
भगवान्दृश्यतेनैवतत्रकिंकारणंवद १० ॥

देवता कहतेभये द्वापर युगके प्राप्त होनेमें विशाला क्षेत्र में बड़ी है धारणा जिसकी ऐसा भगवान् नहीं देखपड़ताहै इसमें क्या कारणहै कहो १० ॥

विशालाकिंपरित्यक्ताततोवाक्वगतःस्वयम् ॥
अपराधोस्त्यतोस्माकंकथंवासौप्रसीदति ११ ॥

नारायणने बदरी क्यों त्याग करीहै अथवा उस बदरी से आप कहां गयाहै अथवा हमारा कुछ अपराध है अथवा यह नारायण किस तरह प्रसन्न होताहै ११ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ नाहमेतद्विजानामिश्रुतवान्वोमुखालयम् ॥
कोहेतुर्हकूपथातीतोभगवान्भवतामुत १२ ॥

ब्रह्माजी कहते भये यह बात मैं नहीं जानताहूं तुम्हारे मुखसे सम्पूर्ण यह वार्ता सुनताहूं कौन कारण होगा जो भगवान् तुम्हारे दृष्टिके मार्गसे दूर हुआ है १२ ॥

आगच्छन्तुवयंयामस्तीरंक्षीरपयोनिधेः ॥
इत्युक्तास्तेपुरोधायब्रह्माणंत्रिदिवौकसः १३ ॥
ययुःक्षीराम्बुधेस्तीरमृषयश्चतपोधनाः १४ ॥

हम क्षीरसमुद्र के तीरको चलेंगे सब मेरे साथ आवो करके इतना ब्रह्मा ने कहा तो वह सब देवता ऋषि भी तप करनेवाले भी ब्रह्माजीको आगे रखके क्षीरसमुद्रके तीरको जाते भये १३।१४ ॥

तत्रगत्वाजगन्नाथंदेवदेवंवृषाकपिम् ॥
गीर्भिश्चित्रपदार्थाभिस्तुष्टुवुर्जगदीश्वरम् १५ ॥

तिस क्षीरसमुद्र में जायके जगत् का नाथ देवतों का देवता जगत् में सब करनेको समर्थ श्रीनारायणको नानाप्रकार के जिन्हों के पद हैं और प्रयोजन है ऐसी वाणी करके सब स्तुति करते भये १५ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ नमस्तेपुरुषाध्यक्षसर्वभूतगुहाश्रय ॥
वासुदेवाखिलाधारजगद्धेतोजगन्मय १६ ॥

ब्रह्माजी कहते भये सब जीवों के शिक्षा करनेवालेहो सब प्राणियों की गुफा में आश्रय कर रहे हो सबके आधार होरहे हो जगत् के कारणहो जगत् तुम्हीं होरहे हो हे वासुदेव ! तुम को नमस्कार है १६ ॥

त्वमेवसर्वभूतानांहेतुःपतिरुताश्रयः ॥
मायाशक्तीरुपाश्रित्यविचरसीहसुन्दर १७ ॥

सब प्राणियों का हेतु कारण पति कहिये स्वामी भी व आश्रय भी तुम्हींहो माया की शक्तियों को आश्रय करके इस संसार में सुन्दर रूपधार के फिरते हो १७ ॥

एकोनानाकृतिर्योसौनटवत्तत्पदंभजे १८ ॥
व्यापकोपिकृपालुत्वाद्भक्तहृत्पद्मषट्पदः ॥
ददातिविविधानन्दंवन्देहंजगतीपतिम् १९ ॥

जौन यह नारायण नट के बराबर इकल्ले अनेक प्रकारका स्वरूप लेताहै उसके चरणको मैं सेवन करताहूं सब जगह व्याप्त होरहा भी दयावान् के भाव से भक्तों के हृदय रूप कमल का भ्रमर होके नाना प्रकार का आनंद देताहै ऐसे जगत् के पति को मैं प्रणाम करताहूं १८।१९ ॥

देवाऊचुः ॥

विपद्वनान्तोहुतभुग्जनानांगृहीतसत्त्वस्त्रिदशावनीशः ॥
चराचरात्माभगवानधीश्वरःकृपाकटाक्षैरवलोकतान्नः २०

देवता कहते भये मनुष्यों के विपत्तिरूप वनका नाश करनेवाले अग्निरूप तुमहो सत्त्वगुण से अवतार लेके देवतों के पृथ्वी के पालनेवालेहो स्थावर जंगम जगत् के अंतर्यामीहो छः प्रकार के ऐश्वर्ययुक्तहो प्रेरणा करनेवालेहो कृपायुक्त कटाक्षों से हमारे ऊपर देखो २० ॥

ऋषयऊचुः ॥ सकृद्यन्नामपीयूषरसपानरताःपुनः ॥
निःश्रेयसंतृणमिवप्रार्थयन्तिहरिंनुमः २१ ॥

ऋषि कहते भये एकबार जिसके नामरूप अमृतके रसके पीनेमें तत्पर होतेहुये भक्त फिर मोक्षको तृण जैसा चाहते हैं ऐसे नारायण को हम नमस्कार करते हैं २१ ॥

अविद्याप्रतिविम्बत्वाज्जीवभावमुपागतः ॥
विम्बत्वादुपशान्तात्मासपुनातिजगत्त्रयम् २२ ॥

जो प्रभु अविद्याकरके प्रतिबिम्ब की प्रतीति होने से जीव स्वरूप को प्राप्त होरहा है बिम्बाकार से तो आप शांत स्वरूप है वह तीन लोकको पवित्र करता है २२ ॥

गन्धर्वाऊचुः ॥ पिबन्तियेहरेःपरंपदाम्बुजोद्भवंमधु ॥
स्तनंपयोनतेपुनःपिबन्तिमातुरङ्कतः २३ ॥

गन्धर्व कहते भये जो पुरुष केवल नारायणके चरणारविन्द से उत्पन्न मकरन्दको पीते हैं वह पुरुष गोदमें बैठके फिर माताके स्तनके दूधको नहीं पीते हैं २३ ॥

प्रसंगतोभिधासुधान्निपीयमानवामृताः ॥
मृतिंव्रजन्त्यधोनतेर्नजातुपानशङ्किताः २४ ॥

दूसरे के प्रसंग से जिसका नाम स्वरूप अमृतको पीकरके मरेहुये वह मनुष्य अधोगतिको नहीं प्राप्त होतेहैं कदाचित् भी उनको माताके स्तन पीनेकी शंका नहीं होतीहै २४ ॥

ततःस्तुतोहरिःसाक्षात्सिद्धैरुत्थायचाब्रवीत् ॥
अलक्षितोमरैर्ब्रह्मापरन्तद्वेदनापरः २५ ॥

तिसके उपरान्त इस तरह स्तुति कियेगये भगवान् ऋषियों व देवतोंकरके नहीं देखे जाते हुये उठके प्रत्यक्ष कहते भये केवल उस कहेहुये वचन को ब्रह्मा जानता भया और नहीं जानता भया २५ ॥

ब्रह्मातदुपधार्य्यार्थनत्वातस्मैदिवौकसः ॥
बोधयामाससकलान्गिरासूनृतयासुत २६ ॥

हे कार्त्तिकेय ! वह वचन सुनके ब्रह्मा नारायणको प्रणाम करके उपरान्त सम्पूर्ण देवतों को सच्च और प्यारी वाणीकरके समझावता भया २६ ॥

यातयूयंनिजंधामऋषयश्चतपोधनाः ॥
भगवान्बदरीनाथोबदर्य्यामेवतिष्ठति ॥
एकान्तशालीसमयेदृष्टिमार्गमुपेष्यति २७ ॥

ऋषीश्वर भी तप करनेवाले भी सब तुम अपने स्थानको गमन करो भगवान् बदरीनाथजी बदरिकाश्रम में विराजरहे हैं एकान्त रहना अच्छा मानते हैं समय में तुम्हारे देखने में आनेवाला है २७ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ प्राप्तेकलियुगस्यादौतीर्थेनारदसञ्ज्ञके ॥
अन्तर्हितोसौभवितादृष्ट्वालोकान्कुमेधसः२८॥

शिवजी कहते भये कलियुगके प्रथम आने में नारद मुनिके तीर्थ में वह बदरीनाथजी दुष्टबुद्धिके लोकोंको देखके छिप जानेवालाहै २८ ॥

ततोहंयतिरूपेणतीर्थान्नारदसञ्ज्ञितात् ॥
उद्धृत्यस्थापयिष्यामिमूर्तिंलोकहितेच्छया २९ ॥

तिसके उपरान्त मैं दंडीका रूप लेके नारदमुनिके कुण्डसे बदरीनाथकी मूर्ति को ऊपर निकालके लोकोंके भलेकी इच्छा करके स्थापन करनेवालाहूं २९ ॥

यस्यादर्शनमात्रेणपातकानिमहान्त्यपि ॥
विलीयन्तेक्षणादेवसिंहंदृष्ट्वामृगाइव ३० ॥

तिस मूर्ति के देखनेही से बड़े भी पातक क्षणमात्र में जैसे सिंहको देखके मृग छिपैं तैसे छिपजाते हैं ३० ॥

सर्वधर्मोज्झितादेवंबदरीशंहरिंप्रभुम् ॥
तंदृष्ट्वामुक्तिमायान्तिविनायासेनपुत्रक ३१ ॥

हे कार्त्तिकेय ! पापोंका नाश करनेवाला देवतोंका देवता ऐसे बदरीनाथ स्वामीको देखके सब धर्मके छोड़नेवाले भी विना परिश्रमकरके मुक्तिको प्राप्त होते हैं ३१ ॥

त्यक्त्वासर्वाणितीर्थानिहरिःसाक्षात्कलौयुगे ॥
बदरीमनुसंप्राप्यसाक्षादेवावतिष्ठते ३२ ॥

कलियुग विषे सब तीर्थोंको छोड़के आप नारायण बदरीको पायकरके प्रत्यक्ष स्थित रहते हैं ३२ ॥

कलिकालेह्यनुप्राप्तेमुक्तिर्येषांमनीषितम् ॥
द्रष्टव्याबदरीतैस्तुहित्वातीर्थान्यनेकशः ३३ ॥

कलियुग के प्राप्त होने में जिन मनुष्यों का मनोभिलाष मुक्ति होवै उन पुरुषों करके अनेक तीर्थोंको छोड़के बदरी देखनी कही है ३३ ॥

विनाज्ञानेनयोगेनतीर्थाटनपरिश्रमैः ॥
एकेनजन्मनाजन्तुःकैवल्यंसमवाश्नुते ३४ ॥

विना ज्ञानकरके विना योगकरके विना तीर्थों में गमन करने के परिश्रम करके एक जन्मकरके प्राणी मोक्षको भोग करता है ३४ ॥

जन्मान्तरसहस्रैस्तु सम्यगाराधितोहरिः ॥
यदीच्छेद्बदरींद्रष्टुं ययाजन्तुर्नशोच्यते ३५ ॥

हजारों जन्मान्तरों करके जो नारायणकी भले प्रकारसे पूजन किया होवै

तो पुरुष बदरी को देखने को चाहता है जिसके चाहने से प्राणी नहीं शोचताहै ३५ ॥

बदरीबदरीत्युक्त्वा प्रसङ्गान्मनुजोत्तमः ॥
संसारतिमिराबाधादीपमुज्वालयत्यसौ ३६ ॥

किसी प्रसंग से मनुष्यों में उत्तम बदरी बदरी ऐसा कहकरके संसार रूप अन्धकार के दूर करने को वह दीपक बालता है ३६ ॥

यथादीपावलोकेन तमोबाधानजायते ॥
तथैवबदरींदृष्ट्वा पुंसोमृत्युभयंकुतः ३७ ॥

जैसे दीप के दर्शन करके अन्धकार की माया नहीं होती है तैसेही बदरी को देखके पुरुषको मृत्युका भय कहां से है ३७ ॥

दर्शनाद्यस्यपापानि रुदन्तिव्याहतानिच ॥
मुक्तिमार्गमिवालक्ष्यं तंवन्देबदरीपतिम् ३८ ॥

जिस बदरीनाथ जीके दर्शनसे पीड़ित होतेहुये बड़े भी पातक रोदनकरते हैं मुक्तिका मार्ग जैसे देखने को कठिन ऐसे उस बदरीनाथ जीको मैं प्रणाम करताहूं ३८ ॥

सशैलकाननाभूमिर्दशधादक्षिणीकृता ॥
हरेःप्रदक्षिणात्पुंसा बदर्य्यांतत्पदेपदे ३९ ॥

पर्व्वतों वनों सहित पृथ्वी की दशबार परिक्रमा करके जो फल होता है वह फल बदरिकाश्रम में नारायण की प्रदक्षिणा से पैर पैर में पुरुषों को मिलता है ३९ ॥

अतिकृच्छ्रमहाकृच्छ्रैर्द्वादशाब्दैःकृतेभवेत् ॥
हरेःप्रदक्षिणात्पुंसां बदर्य्यान्तत्पदेपदे ४० ॥

बारह वर्षतक अतिकृच्छ्र नाम प्रायश्चित्तों करके जो फल होता है वही फल बदरीमें नारायणकी परिक्रमा करनेसे पुरुषोंको पैरपैरमें मिलताहै ४० ॥

बदर्य्यांविष्णुनैवेद्यं कणमात्रंषडानन ॥
अनेकाञ्छोधयेत्पापांस्तुषाग्निरिवकाञ्चनम् ४१ ॥

हे कार्त्तिकेय ! बदरी में नारायण का महाप्रसाद एक कणमात्रभी अनेक पापियों को शुद्धकरता है जैसे बूसेकी अग्नि सुवर्णको शुद्धकरता है ४१ ॥

यदन्नंभगवानत्तिऋषिभिर्नारदादिभिः ॥
तदन्नत्त्वाच्छुद्धिवत्सद्भिर्भोक्तव्यमविचारयन् ४२ ॥

जिस अन्नको नारदादि ऋषियों के साथ भगवान् भोजन करते हैं वह अन्न सत्स्वरूप से निर्मल करनेवाला सज्जनों करके विना विचारपूर्वक भोजन करना योग्यहै ४२ ॥

अमराअपिजन्तूनां नररूपपरिच्छदाः ॥
भोक्तुंबदरिकांविष्णोर्नैवेद्यंयान्तितत्पराः ४३ ॥

देवता भी प्राणियों के बीचमें मनुष्य रूप धारण करते हुये एकाग्र होके बदरीनारायण के महाप्रसाद भोजन करने को जातेहैं ४३ ॥

भोजनानन्तरंविष्णोः प्रच्छन्नयतिमूर्त्तयः ॥
प्रह्लादप्रमुखाभक्ताः प्रविशन्तिगृहंहरेः ४४ ॥

नारायण के भोजन करने से उपरान्त छिपेहुये परमहंसों की मूर्तिधारते प्रह्लाद आदिक भक्त नारायण के मन्दिर को प्रवेश करते हैं ४४ ॥

बाल्ययौवनवार्द्धक्यैर्यत्पापंजानताकृतम् ॥
नैवेद्यभक्षणाद्विष्णोर्बदर्य्यान्तद्विलीयते ४५ ॥

बालक अवस्था में जवानी में वृद्धाअवस्था में जानके पुरुषने जो पाप किया है वह पाप बदरी में नारायण के महाप्रसाद भक्षण करने से नष्ट होजाता है ४५ ॥

प्राणान्तंयस्यपापस्य प्रायश्चित्तंप्रकीर्त्तितम् ॥
विष्णोर्निवेदितान्नेनबदर्य्यांतन्निवर्तते ४६ ॥

मरणपर्यन्त जिस पापका प्रायश्चित्त कहाहै वह पातक बदरीमें नारायण के चढाये हुये अन्न करके हटजाता है ४६ ॥

तीर्थान्तरेषुयत्नेनमुक्तिर्भवतिमानवः ॥
नैवेद्यंभक्षणाद्विष्णोःसालोक्यंलभतेनरः ४७ ॥

और तीर्थों में यत्नकरके मुक्ति होवै अथवा न होवै बदरी में महाप्रसाद भक्षण करने से नारायण के समान लोकको पावता है ४७ ॥

हृदिरूपंमुखेनामनैवेद्यमुदरेहरेः ॥
पादोदकंचनिर्माल्यंमस्तकेयस्य[illegible]तुः ४८ ॥

जिस पुरुषके हृदय में बदरीनाथ का रूप होवै मुखमें नाम होवै पेटमें महाप्रसाद और चरणामृत होवै मस्तक में चन्दन पुष्पधारे होवै वह पुरुष आप नारायण है ४८ ॥

ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः ॥
नैवेद्यभक्षणाद्विष्णोर्बदर्य्यांयातिसंक्षयम् ४९ ॥

ब्राह्मण मारना हुआ मदिरापान करना हुआ सुवर्ण चोराना हुआ गुरु स्त्रीगमनकरना हुआ यह चार महापातक बदरी में नारायण के नैवेद्य भक्षण करने से नष्टहोते हैं ४९ ॥

बदरीसदृशंक्षेत्रंनैवेद्यसदृशंवसु ॥
नारदीयसमंतीर्थंनभूतंनभविष्यति ५० ॥

बदरी के समान क्षेत्र नैवेद्यके समान रत्न नारदकुण्ड के समान दूसरा तीर्थ न हुआ न होवैगा ५० ॥

बदर्यांयत्नतोगत्वाभोक्तव्यन्तान्निवेदितम् ॥
द्रष्टव्योभगवान्वह्नितीर्थस्नानंसुदुर्लभम् ५१ ॥

यत्नसे बदरी को जाके नारायण का चढ़ाहुआ प्रसाद भोजनकरना भगवान्का दर्शनकरना तप्तकुण्ड का स्नानकरना यह बड़ादुर्लभ है ५१ ॥

पृथिव्यांयानितीर्थानियेचदेवर्षयस्तथा ॥
मध्याह्नेऋषितीर्थेतेस्नात्वादेवमुपासते ५२ ॥

पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं तैसेही जितने देवता व ऋषि हैं वह सब दुपहर में नारदकुण्ड में स्नानकर नारायण की उपासना करते हैं ५२ ॥

तावत्तीर्थानिभासन्तेव्रतानिनियमायमाः ॥
पादोदकंविशालायांयावन्नपुरतोभवेत् ५३ ॥

तबतक सब तीर्थ सब व्रत सब नियम इन्द्रियों के साधन भी शोभते हैं जब तक बदरी में चरणोदक आंखों से नहीं देखतेहैं ५३ ॥

किंतस्यदानैस्तपसातीर्थाटनपरिश्रमैः ॥
बदर्य्यांविष्णुपादोदबिन्दुमात्रंलभेद्यदि ५४ ॥

उस पुरुषके दानकरने से क्या होता है तपस्या करने से तीर्थों में गमन करने के परिश्रम करने से भी क्या होता है जो पुरुष बदरी में बूंदमात्र चरणोदकको पाता है ५४ ॥

प्रायश्चित्तानिजल्पन्तितावद्देवषडानन ॥
यावन्नलभतेविष्णोर्बदर्य्यांचरणोदकम् ५५ ॥

हे कार्त्तिकेय ! तबतक सब प्रायश्चित्त बलबलाते हैं जबतक बदरी में नारायण का चरणोदक पुरुष नहीं पाताहै ५५ ॥

किंतेषांगुणशीलेनस्वाध्यायाभ्यसनेनवा ॥
येषांनजायतेभक्तिर्बदर्य्यांचरणोदके ५६ ॥

उन पुरुषोंके गुण व अच्छेस्वभावसे अथवा वेदाध्ययन के अभ्यास करने से क्या है जिन मनुष्यों की बदरी के चरणोदक में भक्ति नहीं होती है ५६ ॥

अनायासेनयेषांवाइच्छामुक्तिपथेनृणाम् ॥
कर्तव्यंतैःप्रयत्नेनविष्णोर्नैवेद्यभक्षणम् ५७ ॥

जिन मनुष्योंकी विना परिश्रम करके मुक्तिमार्ग में इच्छाहोवै उनमनुष्यों को यत्नकरके नारायण का नैवेद्य भक्षणकरना योग्य है ५७ ॥

येनरानप्रगृह्णन्तिपापाःसंसारभागिनः ॥
यात्राकृतंफलंतेषांनकदाचित्प्रजायते ५८ ॥

जो पुरुष महाप्रसाद को नहीं ग्रहण करतेहैं वहपापी संसार में फिरते रहते हैं उनको कदाचित् भी यात्रा किये का फल नहीं होताहै ५८ ॥

नैवेद्यनिन्दनाद्विष्णोर्नितान्तेनतमोगतिः ॥
विशालायांविशेषेणतस्मादश्नीतवैबुधः ५९ ॥

नारायण के महाप्रसाद की निन्दाकरनेसे अत्यन्त करके नरकगमन होताहै इस कारणसे विशेष करके बदरीमें बुद्धिमान् नैवेद्य भक्षणकरैं ५९ ॥

विवादोनैवकर्त्तव्योबदरीमेत्यमानवैः ॥
नैवेद्यभक्षणाद्वस्तुशुद्धिमेतिनसंशयः ६० ॥

बदरी को प्राप्तहोके मनुष्यों को झगड़ा करना नहीं कहा है महाप्रसादके भक्षण करने से आत्मा निर्मल होताहै इसमें सन्देह नहीं है ६० ॥

नैवेद्यंस्वयमानीयब्राह्मणान्भोजयन्तिये ॥
तुलापुरुषदानेनकिंफलंतेकृतार्थिनः ६१ ॥

नैवेद्य को आप लाके जो पुरुष ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं वह कृतार्थ इतनेही से होचुके तुला पुरुष दानकरके क्या फलहोता है ६१ ॥

कुरुक्षेत्रंसमासाद्यराहुग्रस्तेदिवाकरे ॥
महादानेनयत्पुण्यंबदर्य्यांग्रासमात्रतः ६२ ॥

कुरुक्षेत्र को जाके सूर्यविम्ब राहुकरके ग्रास किये जाने में सुवर्णदान करनेसे पुरुषको जो पुण्य होताहै वह पुण्य बदरी में एक ग्रासमात्र नैवेद्य दिये से होताहै ६२ ॥

बदरीक्षेत्रमासाद्यग्रासमात्रंप्रयत्नतः ॥
यतिभ्योविधिवद्दद्यात्कृतकृत्योभवेन्नरः ६३ ॥

बदरीक्षेत्रका वास पायके बड़े यत्नसे एक ग्रासमात्र श्रद्धाकरके परमहंसों को जो देवै वह मनुष्य जन्मलेके जो कुछ करनाचाहिये सो करचुका है ६३ ॥

उपायोयंमहानत्रबदर्य्यांहरितोषणे ॥
यतीनांभोजनाद्विष्णोरपराध्यतिवल्लभः ६४ ॥

बदरी में नारायण के प्रसन्नहोने का उपाय यही बड़ा है जो नारायण का अपराध करता है तौभी परमहंसों के भोजन देने से पुरुष विष्णुका प्यारा होता है ६४ ॥

नविष्णुसदृशोदेवोनविशालासमापुरी ॥
नभिक्षुसदृशंपात्रमृषितीर्थसमंनहि ६५ ॥

विष्णुके समान दूसरा देवता नहीं बदरी के समान दूसरी पुरी नहीं परमहंसके समान दूसरा पात्रनहीं नारदकुण्डके समान दूसरातीर्थ नहीं ६५ ॥

चातुर्मास्यंप्रकुर्वन्तियेनराःपुण्यभागिनः ॥
तेषांपुण्यफलंवक्तुंब्रह्मणापिनशक्यते ६६ ॥

पुण्यके भोग करनेवाले जो मनुष्य चौमासे में बदरीवास करते हैं उन पुरुषों के पुण्यका फल कहने को ब्रह्मा भी समर्थ नहीं है ६६ ॥

भिक्षुकाणांफलाप्तिर्वैविशेषादिहवर्तते ॥
वेदान्तश्रवणात्पुण्यंदशधायत्प्रकीर्तितम् ६७ ॥
बदरीदृष्टमात्रेणभिक्षुकाणान्तदिष्यते ६८ ॥

इस बदरी में यतियों को फलकी प्राप्ति विशेष से होती है वेदांत के श्रवण करे से जो पुण्य दश गुणा करके होताहै वह पुण्य परमहंसों को बदरी के देखने ही मात्र करके होता है ६७।६८ ॥

चातुर्मास्येविशेषेणकैवल्यफलभागिनः ॥
न्यासिनोबदरीस्नात्वाविनायासेनपुत्रक ६९ ॥

हे कार्तिकेय ! विशेष करके चौमासे में बदरी में स्नान करके सन्यासी बिना परिश्रम करके मोक्ष के फल भोगनेवाले होते हैं ६९ ॥

येमूर्खाजडतापन्नादण्डकाषायवाससः ॥
बदरीदर्शनात्तेषांमुक्तिःकरतलेस्थिता ७० ॥

जो कोई भ्रष्ट बुद्धिके अज्ञान से भरे हुये दंड के धारनेवाले भागवां वस्त्रके ओढ़ने वाले होते हैं ऐसे पाखण्डियों के भी बदरी के दर्शन से मुक्ति हाथ में स्थित रहती है ७० ॥

ज्ञानिनोज्ञानिनोवापिन्यासिनोनियतव्रताः ॥
द्रष्टव्याबदरीतैस्तुफलावाप्तिमभीप्सुभिः ७१ ॥

ज्ञानी हुये अथवा अज्ञानीहुये संन्यासी हुये नियम व्रत करनेवाले हुये इन पुरुषों को फल की प्राप्ति चाहनी होवै तो बदरी दर्शन करना योग्य है ७१ ॥

श्रुत्वाध्यायमिमंपुण्यंप्रसङ्गेनापिमानवः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकेमहीयते ७२ ॥

इस पवित्र अध्याय को किसी प्रसंग करके भी मनुष्य श्रवण करके सब पापों से छूटके विष्णु के लोक में गमन करताहै ७२ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेशिवकार्त्तिकेयसंवादेबदरीमाहात्म्येदेवानन्दपुरीकृत भाषाटीकायांपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

स्कन्दउवाच ॥ कराद्विगलितंयत्रकपालंतेमहेश्वर ॥
तस्यतीर्थस्यमाहात्म्यंकृपयावदमेपितः १ ॥

स्वामिकार्तिकेय कहतेभये कि हे सबके ईश्वर पिताजी ! जिस जगहमें तुम्हारे हाथ से ब्रह्मकपाल छूटा है उस तीर्थका माहात्म्य कृपाकर मुझसे कहो १ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ अतिगुह्यमिदंतीर्थंसुरासुरनमस्कृतम् ॥
ब्रह्महापिनरोयत्रस्नानमात्रेणशुद्ध्यति २ ॥

शिवजी कहते भये देव दानव जिसको नमस्कार करते हैं ऐसा यह तीर्थ अत्यन्त गुप्त तैंने पूछा है जिस तीर्थ में ब्राह्मण का मारनेवाला पुरुष भी स्नान करके शुद्ध होताहै २ ॥

पञ्चकुण्डानितिष्ठन्तिकपालेपापनाशने ॥
स्नानंदानंतपोहोमःसर्वमक्षयमिष्यते ३ ॥

पापों के नाश करने वाले ब्रह्मकपाल में पंच कुंड स्थित होरहे हैं तहां स्नान करना दान देना तप करना होम करना सब अक्षय फल होताहै ३॥

पिण्डंविधायविधिवत्पातकात्त्रायतेपितॄन् ॥
पितृतीर्थमिदंप्रोक्तंगयातोष्टगुणाधिकम् ४ ॥

विधिपूर्वक ब्रह्मकपाल में पिंडदान करके पातक से पुरुष पितरों को तारता है यह पितरों का तीर्थ गयासे आठ गुणा अधिक कहा है ४ ॥

पितृतर्पणतोयान्तिपितरःस्वर्गमुत्तमम् ॥
अहोरात्रंस्थिरोभूत्वाजपंस्तिष्ठन्समाहितः ५ ॥
तस्येष्टसिद्धिर्महतीतत्क्षणादेवजायते ६ ॥

पितरों के तर्पण करने से पितर उत्तम स्वर्ग को जाते हैं जो दिन रात्रि तक स्थिर होके एकाग्रचित्त करके जपकरता हुआ रहै उसी क्षण से तिस पुरुष की बड़ी इष्ट की सिद्धि होती है ५।६ ॥

पारलौकिककर्माणिसर्वाण्यव्याहतानिच ॥
कपालमोचनेतीर्थेधिकंकिंवानिगद्यते ७ ॥

कपालमोचन तीर्थ में सब परलोक के कर्म किये हुये अक्षय फल देनेवाले होते हैं अथवा अधिक क्या कहाजाता है ७ ॥

बहूनिसन्तितीर्थानिविशालायांषडानन ॥
कपालमोचनंतीर्थमधिकंपितृकर्मणि ८ ॥

हे कार्तिकेय ! बदरी में और भी बहुत तीर्थ हैं पितरों के कर्म में तो अधिक तीर्थ कपालमोचन कहा है ८ ॥

स्कंदउवाच ॥ कुत्रवाब्रह्मतीर्थंवैफलंवाकीदृशंभवेत् ॥
केतत्रनिवसन्तिस्मकृपयावदमेपितः ९ ॥

स्वामिकार्तिकेय कहताभया वह ब्रह्मतीर्थ कहांहै अथवा किस तरहका फल होताहै तिस तीर्थ में कौन वास करते हैं पिताजी कृपाकरके मुझसे कहो ९ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ एकदैवमुपाहृत्यशयानस्यप्रजापतेः ॥
वेदान्मुखाम्बुजाद्धृत्वाजग्मतुर्मधुकैटभौ १० ॥

शिवजी कहते भये एक समय में इस विश्वको संहार करके शयन करते हुये ब्रह्माके मुखकमल से चारों वेदों को हरके मधुकैटभ नाम दो दानव गमन करते भये १० ॥

ततउत्थायशयनात्सिस्रक्षुरब्जसम्भवः ॥
स्रष्टुंविनागमंलोकान्नाशशाकगतस्मृतिः ११ ॥

तिससे उपरांत नाभिकमल से जिसका जन्म है ऐसा ब्रह्मा शय्या से उठके सृष्टि करनेकी इच्छा करता स्मरण जिसका दूर होगया है वेदों विना लोकों के रचने को नहीं समर्थ होताभया ११ ॥

तदाबदरिकामेत्यहरिणापरिपालिताम् ॥
ययाजप्रणतोभूत्वाभगवन्तंसनातनम् १२ ॥

तब ब्रह्मा नारायण की पालीहुई बदरी को जायके नम्रहोके अनादि प्रभु को यज्ञों करके प्रसन्नकरता भया १२ ॥

ततःकुण्डात्समुद्भूतोहयशीर्षानिजायुधः ॥
पीताम्बरधरःशुक्लश्चतुर्बाहुःसुदीप्तदृक् १३ ॥

तिससे उपरांत हवनकुण्ड से घोड़े का शिर धारता हुआ शङ्ख चक्र गदा पद्म धारके पीतवस्त्र धारण करता चार जिसके भुजा हैं शुद्धवर्ण का प्रज्वलित जिसके नेत्र हैं ऐसा नारायण उत्पन्न हुआ १३ ॥

अत्यद्भुतःप्रकटकठोरलोचनश्चलच्छटाविघटितमेघमण्डलः ॥
स्वतेजसाहतनिखिलप्रभाकुलःकृतान्वितोद्रुहिणपुरःसरोभवेत् १४

अति आश्चर्य देने वाला प्रत्यन्त कठोर जिसके नेत्र हैं चंचलहो रहे जो गर्दनके बाल हैं तिन करके मेघोंका समूह जिसने चीरा है अपने तेजसे सबों का कांतिमण्डल जिसने नष्टकिया है दया से युक्त होके ब्रह्माके आगे स्थित होता भया १४ ॥

निरीक्ष्यतंविधिरपिविस्मयाकुलः
स्खलद्गिरादरमतिमुद्वहन्हृदि ॥
उवाचतंजनवसतिस्तुतंमुदा
हृदान्वितोगलदमलाश्रुलोचनः १५

ब्रह्मा भी आश्चर्ययुक्त होके हयग्रीवजीका रूपदेखके हृदयमें त्रासकी बुद्धि को धारताहुआ प्रीति करके रोम जिसके अङ्ग में उठे हैं छूटते जाते हैं नेत्रों

से निर्मल आंसुके बूंद जिसके गद्गदवाणी करके तीनलोक जिसकी स्तुति करते हैं ऐसे नारायण को कहता भया १५ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ नमःकमलनाभायनमस्तेकमलाश्रय ॥
नमस्तेकमलावासविलासवनमालिने १६ ॥

ब्रह्मा कहते भये कमल जिसके नाभिमें है तुमको नमस्कार है लक्ष्मी जिसके आश्रय होरही है तुमको नमस्कार है कमलों के स्थान में क्रीड़ा करते पत्रपुष्पों की माला धारते ऐसे तुमको नमस्कार है १६ ॥

हृषीकेशायशान्तायतुभ्यंभगवतेनमः ॥
स्वभक्तविदितासक्तिधृतदेहायहारिणे १७ ॥

विषयइन्द्रियों की प्रेरणा करनेवालेहो शान्तहो अपने भक्तोंकी आसक्ति अपने में जानके धारण किये हैं देह जिसने ऐसे हारको धाररहे जो भगवान् तुमहो तुमको नमस्कार है १७ ॥

अनन्तक्लेशविच्छेदकारिणेब्रह्मणेनमः ॥
संसारविविधासारनिवृत्तिकृतकर्मणे १८ ॥

जिनका अन्त नहीं ऐसे क्लेशों के नाशकरनेवाले हो संसारमें नानाप्रकार के तुच्छ पदार्थों से हटने के वास्ते किये हैं कर्म जिसने ऐसे ब्रह्महो तुमको नमस्कार है १८ ॥

शरण्यःसर्वजन्तूनांविष्णवेजिष्णवेनमः ॥
नमोविश्वम्भराशेषनिवृत्तगुणवृत्तये १९ ॥

सब प्राणियों के शरण देनेवाले हो सब जगह व्याप्तहो सब जीतनेवाले हो विश्वके पालनेवालेहो सम्पूर्ण हटगये हैं गुणोंसे व्यापार जिसके ऐसे तुमको नमस्कार है १६ ॥

सुरासुरगरुस्तम्भनिवृत्तिस्थितकीर्तये २० ॥

देवतों का दानवों का भारी गर्व दूरकरने में यश जिसका विख्यात है ऐसे तुमको नमस्कार है २० ॥

इतीडितःसुरपतिनासईश्वरो
हृदिस्थितोमतिविदशेषकर्मणि ॥
ततोन्तरेसपदिनियुद्ध्यतोहरिः
सुरद्रुहोपयसिजघानलीलया २१ ॥

इस प्रकार से देवतों के स्वामी ब्रह्माने स्तुति किया हृदय में स्थित हो-

रहा वह नारायण सबकर्म में बुद्धि करके जाननेवाला तिसबीच बाहुयुद्ध करके उनदोनों मधुकैटभ राक्षसों को विना परिश्रम करके उसीक्षण जलमें मारता भया २१ ॥

ततोनिगममादाय ब्रह्मणोन्तिकमाययौ ॥
दत्त्वास्मनिगमंतस्मैययावन्तर्द्धिमीडितः २२

तब वेदों को लाके भगवान् ब्रह्मा के निकट आते भये ब्रह्माके पासवेद देके वे स्तुति किये गये प्रभु अन्तर्द्धान होते भये २२ ॥

ततःप्रभृतितत्तीर्थब्रह्मणाप्रकटीकृतम् ॥
ब्रह्मकुण्डमितिख्यातंत्रिपुलोकेषुविश्रुतम् २३ ॥

उस दिन से लेके वह तीर्थ ब्रह्माने प्रकट किया है तीनोंलोकों में श्रेष्ठ ब्रह्मकुण्ड नाम से विख्यात हुआ है २३ ॥

यस्यदर्शनमात्रेणमहापातकिनोनराः ॥
विमुक्तकिल्बिषाःसद्योब्रह्मलोकंव्रजन्तिते २४ ॥

जिसके देखनेही से महापातक करनेवाले भी पुरुष उसी काल में सब पापों से छूटके वह ब्रह्माके लोकको जाते हैं २४ ॥

स्नानंकुर्वन्तियेलोकाव्रतत्रयसमन्विताः ॥
ब्रह्मलोकमतिक्रम्यविष्णुलोकंव्रजन्तिते २५ ॥

जो लोग तीन उपवास करते हुये तहां स्नानकरते हैं वह लोग ब्रह्मा के लोकको लंघन करके विष्णुके लोकको गमनकरते हैं २५ ॥

स्कन्दउवाच ॥ ततःकिमकरोद्धातालब्ध्वावेदान्जनार्द्दनात् ॥
एतदन्यच्चसर्वंमेकृपयावदसाम्प्रतम् २६ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये तिससे उपरान्त हयग्रीवजी से वेदों को पायके ब्रह्मा क्या करते भये यह भी और सब कृपाकरके इस समय में मुझ से कहो २६ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ चतुर्णामपिदेवानांदृष्ट्वाबदरिकाश्रमम् ॥
मतिर्नजायतेगन्तुंब्रह्मणासहपुत्रक २७ ॥

शिवजी कहते भये कि हे कार्त्तिकेय ! बदरिकाश्रमको देखके ब्रह्माके साथ चारोंवेदों की भी बुद्धि गमनकरन को नहीं चाहती भई २७ ॥

ततस्तुविकलंदृष्ट्वाब्रह्माणंजनवासिनः ॥
वेदांस्तुविधिवत्स्तुत्वाप्रणिपत्येदमब्रुवन् २८ ॥

तिसके उपरान्त जनलोक के रहनेवाले ऋषि ब्रह्माको एकाग्र देखके प्रणामकर वेदोंकी स्तुति करके विधिपूर्व्वक यह कहते भये २८ ॥

आज्ञाभगवतःकार्य्यासर्वैःस्थावरजङ्गमैः ॥
भगवान्सर्वभूतानांस्थित्युत्पत्त्यन्तकारकः २९ ॥

सब वृक्षपत्तादि मनुष्यादि जीवोंको भगवान् की आज्ञा करनीचाहिये सब प्राणियों का पालन उत्पत्ति संहार करनेवाला भगवान् है २९ ॥

स्थितिर्ब्रह्मान्तिकेतुभ्यंहरिणैवानुकम्पिता ॥
निर्जनीवर्ततेचैषातथाप्येवनिशामय ३० ॥

तुम्हारी स्थिरता श्रीनारायणने वेदों के निकट आप कृपायुक्तकरी है यहां स्थिर रहना आपका शून्याकार है तौभी यह निश्चय श्रवण करिये ३० ॥

एकातेद्रवरूपेणमूर्तिरत्रावतिष्ठताम् ॥
द्वितीयाब्रह्मणासार्द्धंब्रह्मलोकंव्रजत्वितः ३१ ॥

एक मूर्त्ति आपकी वेदों के साथ इस तीर्थ में जलके रूपकरके स्थितरहै दूसरी मूर्त्ति तुम्हारी वेदोंके साथ यहांसे ब्रह्मलोकको गमनकरै ३१ ॥

ततःसन्तुष्टहृदयावेदाद्वेधीकृतात्मना ॥
ब्रह्मणाब्रह्मलोकन्तुययुःसार्द्धंप्रहर्षिताः ३२ ॥

तिसके उपरान्त प्रसन्न जिन्होंका हृदय हुआहै ऐसे चारोंवेद दो प्रकारका किया है शरीर जिसने ऐसे ब्रह्माके साथ हर्ष करते हुये ब्रह्मलोक को जाते भये ३२ ॥

ततस्त्रिलोकंविविधंससर्जचतुराननः ॥
द्रवरूपेषुवेदेषुस्नानदानतपःक्रियाः ३३ ॥
कृताःक्षयिष्णवोनस्युर्य्यावदाहूतसंप्लवम् ३४ ॥

तिससे उपरान्त चारमुख हैं जिसके ऐसे ब्रह्मा नानाप्रकार के तीनलोक को उत्पन्न करते भये तिस तीर्थ में जलरूप होरहे चारोंवेदों में स्नान दान तप क्रिया करीहुई कल्पान्त पर्य्यन्त क्षय होनेवाली नहीं होवै हैं ३३।३४ ॥

फलमुद्दिश्ययेकुर्वन्त्युपवासचतुष्टयम् ॥
चतुर्णामपिवेदानांव्याख्यातारोनसंशयः ३५ ॥

फलको मनमें ठहरायके जो कोई पुरुष चार कुण्डों के धेरे चार उपवास करते हैं वह पुरुष चारोंवेदों के भी व्याख्यान करनेवाले होतेहैं इसमें सन्देह नहीं है ३५ ॥

अनुक्रमेणतिष्ठन्तिवेदाश्चत्वारएवहि ॥
ऋग्यजुःसामाथर्वाख्याभगवत्पार्श्ववर्तिनः ३६ ॥

ऋक्, यजुः, साम, अथर्वण जिनके नाम हैं ऐसे चारों वेद क्रमकरके श्री नारायण के निकट रहते हैं ३६ ॥

येपुण्यवन्तोकलुषावेदवेदाङ्गपारगाः ॥
तेब्रह्मघोषंविरलाःशृण्वन्त्यपिकलौयुगे ३७ ॥

पाप जिन्होंने नहीं किये हैं पुण्य करनेवाले जो हैं वेदों व वेदाङ्गों के पार गमन करनेवाले जो हैं ऐसे कोई पुरुष कलियुग में भी वेदों का शब्द श्रवण करते हैं ३७ ॥

चतुर्णामपिवेदानामुदगस्तिसरस्वती ॥
दृष्टापापंनृणांहन्तिजडतांखलरूपिणाम् ३८ ॥

चारों वेदों के भी उत्तर की तरफ सरस्वती है नेत्रों से देखीगई सरस्वती मनुष्यों का जडत्व मूर्खत्वस्वरूप का पाप नाश करती है ३८ ॥

सरस्वतीजलेस्थित्वाजपंकृत्वासहस्रकम् ॥
मनस्तस्यानविच्छेदंकदाचिदपिजायते ३९ ॥

सरस्वतीजीके जल में स्थित होके हजारबार मंत्र जप करके तिस सरस्वती से कदाचित् भी मन दूर नहीं होताहै ३९ ॥

वेदव्यासोपिभगवान्यत्प्रसादादुदारधीः ॥
पुराणसंहिताकर्त्ताबभूवात्रनसंशयः ४० ॥

साक्षात् नारायण वेदव्यास भी जिस सरस्वती के प्रसादसे बड़ी बुद्धिका धारनेवाला पुराणों का संहिताओं का करनेवाला होता भया इस में सन्देह नहीं है ४० ॥

त्रयाणामपिलोकानांहितायजगतांहरिः ॥
स्नापयामासविधिना[illegible]म्भवप्रदाम् ४१ ॥

भुवनों के पाप हरनेवाले नारायण तीनों लोकों के भी भले के लिये ग्रंथ बनाने के ऐश्वर्य को देती सरस्वतीको विधिपूर्वक स्नान करवाते भये ४१ ॥

दर्शनस्पर्शनस्नानपूजास्तुत्यभिवन्दनैः ॥
सरस्वत्यनविच्छेदःकुलेतस्यकदाचन ४२ ॥

देखने से स्पर्श करने से स्नान करने से पूजा करने से स्तुति करनेसे प्रणाम करनेसे उस पुरुषके कुलमें कदाचित् भी सरस्वतीका वियोग नहीं होताहै ४२ ॥

मन्त्रसिद्धिर्विशेषेणसरस्वत्यास्तटेनृणाम् ॥
जपतामचिरेणैवजायतेनात्रसंशयः ४३ ॥

सरस्वती के तीर में जप करनेवाले मनुष्यों की थोड़ेही काल में विशेष करके मन्त्रों की सिद्धि होती है इसमें संदेह नहीं है ४३ ॥

बहुनाकिमिहोक्तेनवाणीवाग्विभवप्रदा ॥
द्रवरूपधरान्नृणांदर्शयन्मतिमुज्ज्वलाम् ४४ ॥

बहुत कहने से क्या होता है इस तीर्थ में जल रूप धारण करती सरस्वती मनुष्योंकी उज्ज्वल बुद्धिको दिखलाती हुई ग्रंथ बनानेको सामर्थ्य देतीहै ४४ ॥

ततोवादक्षिणेभागेइन्द्रधारेतिविश्रुता ॥
तीर्थमिन्द्रपदंयत्रतपश्चक्रेपुरन्दरः ४५ ॥

तिस सरस्वती के दहिनेभाग में इंद्रधारानदी विख्यात है जहां इन्द्र तप करता भया वह इन्द्रपदतीर्थ कहा है ४५ ॥

सुदारुणंतपःकृत्वा परितोष्यजनार्दनम् ॥
पदमैन्द्रंसमालेभेसुरासुरनमस्कृतम् ४६ ॥

अतिभयानक तप करके श्रीनारायणको प्रसन्न करके देव दानवों के नमस्कार करने को योग्य इन्द्रपदको इन्द्र पावताभया ४६ ॥

तपोदानंजपोहोमःसंयमानियमायमाः ॥
तत्रानन्तगुणंप्रोक्तंतत्तीर्थमतिदुर्लभम् ४७ ॥

तप दान जप होम संयम नियम यम इतने सेवन किये हुये तिस इन्द्रपद तीर्थ में अनन्तगुण के होते हैं वह तीर्थ अतिदुर्लभ कहा है ४७ ॥

प्रतिमासंत्रयोदश्यां शुक्लायांहरिदर्शनम् ॥
स्नात्वास्वतीर्थेसुत्रामाछन्नरूपोहिसङ्गतः ४८ ॥

महीने महीने में शुक्लपक्षकी त्रयोदशी तिथि में अपने तीर्थ में स्नान करके अपने रूपको छिपाय के इन्द्र श्रीनारायण के दर्शनको आवताहै ४८ ॥

उपवासद्वयंकृत्वामन्त्रमष्टाक्षरंजपन् ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तःशक्रलोकेमहीयते ४९ ॥

दो उपवास करके अष्टाक्षर मन्त्र को जप करता हुआ पुरुष सब पापों से छूट के अन्तकाल में इन्द्र के लोक में पूजा जाता है ४९ ॥

तदुदग्मानसोद्भेदः सर्वपापप्रणाशनः ॥
दुर्लभःसर्वजन्तूनांयत्रतस्थुर्महर्षयः ५० ॥

तिस इन्द्रपद तीर्थसे उत्तरकी तरफ सबपापों का नाश करनेवाला सब प्राणियों को दुर्लभ जहां सब ऋषि स्थित होरहे हैं ऐसा मानसोद्भेदनामतीर्थहै ५० ॥

मानसंचिदचिद्ग्रन्थमुद्ग्रन्थयतिसर्वतः ॥
मानसोद्भेदइत्याख्याऋषिभिःपरिगीयते ५१ ॥

सब तरफसे मनकी चैतन्यरूपनेही अचैतन्यरूप गांठको खोल देताहै इस वास्ते ऋषियोंने मानसोद्भेद इस तीर्थका नाम गान किया है ५१ ॥

भिनत्तिहृदयग्रन्थिंछिनत्तिसर्वसंशयान् ॥
हरत्यघंचयत्नेनमानसोद्भेदइत्यभूत् ५२ ॥

हृदय की गांठको भेदकरता है सब सन्देहों को काटता है पापों के समूह को हरता है इस प्रकारसे भी मानसोद्भेद नाम होताभया ५२ ॥

यदिभाग्यवशादम्बुबिन्दुमात्रंपिबेन्नरः ॥
तद्वशान्मुक्तिमाप्नोतिकिमतस्त्वाधिकंभवेत् ५३ ॥

जो कदाचित् प्रारब्ध के वशसे मनुष्य तिस तीर्थमें एक बूँद प्रमाण जल को पानकरै तिस जलके पीने से मुक्ति होजाती है इसके उपरान्त अधिक पदार्थ क्या होवे है ५३ ॥

गिरिदरीनिलयेनिवसन्त्यमी ऋषिगणाःफलमूलकृताशनाः ॥
जितमनोविषयाः सितबुद्धयःकलिभयादिवपापभयाकुलाः ५४ ॥

कन्द मूल फल जिन्होंने भोजन किये हैं मनको विषयों में डुलना जिन्होंने जीता है निर्मल जिनकी बुद्धि है पापकी भयसे डरते हुये कलियुग

की भयसे मानों यह ऋषियों के समूह पर्वतकी जो गुफा है वही घर में वास कररहे हैं ५४ ॥

फलसमित्कुशगह्वरनिर्भराश्रमभरादुपलब्धपदोत्तमाः ॥
ऋषिवनक्रमनिर्जितदुर्जयेन्द्रियपराक्रमणामुनयस्त्वमी ५५ ॥

फल समिधा कुशों के जङ्गलों करके भरेहुये ऐसे आश्रमों में रहने से पाया है उत्तम पद जिन्होंने तपकरने को वनों के फिरने से जीता है इन्द्रियों का पराक्रम जिन्होंने ऐसे यह ऋषि जहां विराज रहे हैं ५५ ॥

साधनानिबहून्येवकायक्लेशकराण्यहो ॥
सुलभंसाधनंत्वेकंमानसोद्भेददर्शनम् ५६ ॥

शरीर के क्लेश करनेवाले ऐसे तो बहुत उपाय हैं केवल मानसोद्भेद नाम तीर्थका दर्शन करना सहज उपाय है ५६ ॥

यस्मिन्दिवसेजलमेवतल्लभतेतत्रलाभानियतम् ॥
पुरुषस्यभवत्ययमपितत्सदसत्कर्मणोभयहृत् ५७ ॥

जिस दिन तिस तीर्थ में केवल जलमात्र पीनेको मिलता है उस पुरुष का निश्चय करके यह भी लाभ नानाप्रकार के भलेबुरेकर्म्म के भयको हरने वाला होताहै ५७ ॥

काम्यतीर्थमिदंनृणांकामनात्रशतःसुत ॥
अकामतस्तुमुक्तिःस्यादुभयोरेषनिश्चयः ५८ ॥

हे कार्त्तिकेय ! कामना के वशसे मनुष्यों का अभिलाष सिद्धकरनेवाला यह तीर्थ है निष्काम होने से तुम्हारी मुक्ति होवै दोनों प्रकारके पुरुषों का निश्चय तीर्थ है ५८ ॥

यदाकिञ्चित्प्रमादेनकामनांकुरुतेनरः ॥
फलभुक्तेपुनर्मुक्तिर्भवत्येवनसंशयः ५९ ॥

जिस समय में कुछ प्रमाद करके पुरुष कामना को करता है जब कामना का फलभोग कियाजावै तब फिर निःसन्देह करके मुक्ति होती है ५९ ॥

महदादिषुलोकेषुभुक्त्वाभोगान्यथेप्सितान् ॥
हरिमन्तेपुनर्यातिकामनावशतोजनः ६० ॥

कामना के वशसे मनुष्य जैसे चाहे हुये तैसे भोगों को मह जन तप सत्य इन चारोंलोक विषे भोगके पीछे फिर नारायण को प्राप्त होता है ६० ॥

पुरुषार्थसमग्रंवायत्रप्राप्तंमनीषिभिः ॥
मानसोद्भेदनेतीर्थेनान्यत्रैवेतिमेमतिः ६१ ॥

जिस मानसोद्भेदन नाम तीर्थ में पण्डितों ने सम्पूर्ण पुरुषार्थ पायाहै ऐसा और तीर्थमें नहीं यह मेरा निश्चय है ६१ ॥

मानसोद्भेदनात्प्रत्यग्दिशिसर्वमनोहरम् ॥
वसुधारेतिविख्यातंतीर्थंत्रैलोक्यदुर्लभम् ६२ ॥

मानसोद्भेदन तीर्थ से पश्चिम दिशामें सब कामना हरनेवाला तीनोंलोकों में दुर्लभ वसुधारा नाम तीर्थ विख्यात है ६२ ॥

त्रिलोक्यांसर्वतीर्थेभ्यःश्रेष्ठंबदरिकाश्रमम् ॥
श्रुत्वातन्नारदात्सर्वेवसवःसमुपागमन् ६३ ॥

तीनलोक विषे सवतीर्थों में श्रेष्ठ बदरिकाश्रम को नारद मुनिसे श्रवण करके सब आठ वसुदेवता तिस वसुधारा तीर्थ में आतेभये ६३ ॥

त्रिंशद्वर्षसहस्राणितपःपरमदारुणम् ॥
दलाम्बुप्राशनात्सर्वेततःसिद्धिमुपाययुः ६४ ॥

तीसहजारवर्षतक अत्यन्त भयानक तपकरके पत्ते खाने व जलके पान करने से सब वसुदेवता तिसीसे सिद्धिको प्राप्त होते भये ६४ ॥

भगवद्दर्शनामोदनिवृत्तविविधक्लमाः ॥
हृदयानन्दसन्दोहप्रफुल्लितमुखाम्बुजाः ६५ ॥
स्तुत्वानारायणंदेवंवरंलब्ध्वामनोहरम् ॥
हरिभक्तिपरैर्वर्य्यंपदंप्राप्यदिवंययुः ६६ ॥

श्रीनारायण के दर्शन करने से जो हर्ष हुआ तिससे हटगये हैं नानाप्रकारके परिश्रम जिनके हृदय के आनन्द के समूह करके प्रसन्नहोरहे हैं मुखारविन्द जिनके ऐसे वसुदेवता श्रीनारायण की स्तुति करके मनप्रसन्न करनेवाला वर पायके विष्णुभक्ति में तत्पर पुरुषोंका श्रेष्ठपद पाय के स्वर्गको गमन करते भये ६५ । ६६ ॥

अत्रस्नात्वाजलंपीत्वापूजयित्वाजनार्दनम् ॥
इहलोकेसुखंभुक्त्वायात्यन्तेपरमांगतिम् ६७ ॥

इस वसुधारा में स्नानकरके जलको पीके श्रीनारायणको पूजनकरके इस लोक में सुखको भोगके अन्तकाल में परमगति को पुरुष पावता है ६७ ॥

अत्रपुण्यवतांज्योतिर्दर्शनंजलमध्यतः ॥
यद्दृष्ट्वानपुनर्मर्त्योगर्भवासंप्रपद्यते ६८ ॥

इस वसुधारा में पुण्य करनेवाले मनुष्यों को जलके बीच से ज्योतिका दर्शन होता है जिस ज्योतिको देखके मनुष्य फिर गर्भवासको नहीं पावता है ६८ ॥

येशुद्धपितृजाःपापाःपाखण्डमतिवृत्तयः ॥
नतेषांशिरसिप्रायःपतन्त्यापःकदाचन ६९ ॥

जो जारसे पैदाहोरहे हैं जो पाप करनेवाले हैं पाखण्डबुद्धि के जो हैं पाखण्ड व्यापार जिन्होंका है उन पुरुषों के शिर में बहुत करके कदाचित् भी जल नहीं पड़ते हैं ६९ ॥

दिनत्रयंशुचिर्भूत्वापूजयित्वाजनार्दनम् ॥
उपोष्यभगवद्भक्त्यासिद्धान्पश्यन्तिसाधवः ७० ॥

तीन दिनतक पवित्र होके श्रीनारायण को पूजनकरके उपवासकरके नारायणकी भक्तिसे साधुपुरुष सिद्धोंको देखते हैं ७० ॥

येत्वत्रचखलास्तथ्यंनवदन्त्यपिलोलुपाः ॥
परहासपरद्रव्यपरस्त्रीकपटग्रहाः ७१ ॥
मलचैलावृषाशान्ताशुचित्यक्तनिजक्रियाः ॥
तेषांमलिनचित्तानांफलमत्रनजायते ७२ ॥

इस वसुधारा में जो दुर्जन होके रहते हैं सत्यवचन नहीं बोलते हैं लोभकरते हैं दूसरेका हास्य करते हैं दूसरेकी द्रव्यग्रहण करते हैं परस्त्री जो रखते हैं अपना कर्म जिन्होंने छोड़दियाहै चित्त जिनका अशुद्धहै उन मनुष्यों का फल इस तीर्थ में नहीं होताहै ७१।७२ ॥

येत्वत्रसाधवःशान्ताविमलाविधिवर्त्मगाः ७३ ॥
तेषांजपस्तपोहोमोदानंव्रतंसुभक्तितः ॥
क्रियमाणायथाशक्त्याफलन्त्यक्षयवत्फलम् ७४ ॥

जो पुरुष इस वसुधारा में साधु होके रहते हैं शान्त रहते हैं शुद्ध होके रहते हैं विधान का मार्ग चलनेवाले हैं उन पुरुषों का जप, तप, होम, दान, व्रत सुन्दर भक्तिसे जैसा अपना शक्य होवै तैसा किये जाते अक्षय फल देनेवाले होते हैं ७३।७४ ॥

यत्किञ्चित्क्रियमाणानिशुभकर्माणिदेहिनाम् ॥
महदादिफलंदत्वाफलंनिःश्रेयउत्तमम् ७५ ॥

देह धारनेवालों के जो कुछ भले कर्म्म किये जाते हैं वह अधिक पद आदिफल देके पीछे मोक्ष देनेवाले उत्तम फलको देतेहैं ७५ ॥

यातु जीव इह किं फलाधिकं
यत्र यान्ति विबुधाः फलार्थिनः ॥
पूजितादनु हरेर्जितार्थिनः
स्वर्गभाग्जनरतप्रमोदिनः ७६ ॥

इस वास्ते पुरुष तिस वसुधारा में गमन करै जिसमें फल चाहनेवाले देवता भी जाते हैं जहां नारायण के पूजन करनेसे पीछे कामना करनेवाले को जीतनेवाले और स्वर्ग में रहते लोकों को प्रीति हर्ष देनेवाले भी होते हैं यहां और फल अधिक क्याहै ७६ ॥

यत्र सन्ति न च विघ्नकारिणः
कर्मणां हरिभयात्सुसंशिनः ॥
निर्विशन्ति नितरां विवेकिनः
कर्ममार्गनिरताः सुदेहिनः ७७

जिस तीर्थ में नारायण के भय से विघ्न करनेवाले नहीं हैं वह विघ्न करनेवाले कर्मोंका भला चाहते हैं इस वास्ते भले पुरुष विवेक करनेवाले कर्म्ममार्ग में तत्पर अत्यन्त प्रवेश करते हैं ७७ ॥

ये पठन्ति खलु पाठयन्त्यहो
पुण्यतीर्थविषयप्रसंगमम् ॥
भक्तिभारविनतात्मनांभवे--
द्विष्णुधाम बत शृण्वतामपि ७८ ॥

पवित्र तीर्थों के गोचर जिसका प्रसंग है ऐसे इस अद्भुत अध्याय को जो पाठकरता है जो औरोंको पढ़वाता है भक्तिके भारसे नम्र जिन्हों के शरीर हैं इसको जो सुनते भी हैं निश्चय करके यह सब पुरुष नारायण के वैकुण्ठ को जाते हैं ७८ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेशिवकार्त्तिकेयसंवादेबदरीमाहात्म्येदेवानन्दपुरीकृतभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ ततोनैर्ऋत्यदिग्भागे पञ्चधाराःपतन्त्यधः ॥
प्रभासंपुष्करंचैव गयानैमिषमेवच १ ॥
कुरुक्षेत्रंविजानीहि द्रवरूपंषडानन २ ॥

शिवजी कहते भये तिस वसुधारा से नैर्ऋत्य दिशा के कोण में पांच जल की धारा नीचे पड़ती हैं हे कार्त्तिकेय ! प्रभास १ पुष्कर २ गया ३ नैमिषारण्य ४ कुरुक्षेत्र ५ यह पांच तीर्थ तहां जलरूप से विराज रहे हैं निश्चय करके जानिये १ । २ ॥

पुराते ब्रह्मणःस्थानं गतामलिनरूपिणः ॥
पापिनांस्पर्शरूपेण विनयावृतबुद्धयः ३ ॥

पहिले ज्ञान से जिन्हों की बुद्धि उद्धत नहीं है ऐसा होके पापियों के स्पर्श करने के दोष से रूप जिन्हों का अशुद्ध हुवा है ऐसे पांच तीर्थ ब्रह्माके लोकको जाते भये ३ ॥

तत्रगत्वानमस्कृत्य ब्रह्माणंलोकभावनम् ॥
ऊचुःप्राञ्जलयःसर्वे निजागमनकारणम् ४ ॥

तिस सत्यलोक में जायके लोकों के रचनेवाले ब्रह्मा को नमस्कार करके सब पांचों तीर्थ अंजलि बांधते हुये अपने आने के कारण को कहते भये ४ ॥

तच्छ्रुत्वाध्यानमालम्ब्य प्रहस्यजगदीश्वरः ॥
उवाचवचनंचारु स्मृत्वाबदरिकाश्रमम् ५ ॥

उन तीर्थों का वचन सुनके जगत्का स्वामी ब्रह्मा ध्यान में बैठ के बदरिकाश्रम को याद करके हँस करके सुन्दर वचन कहता भया ५ ॥

माभैष्टगच्छतद्रष्टुं हरेर्बदरिकाश्रमम् ॥
यस्यांनिवेशमात्रेण क्षीणपापाभविष्यथः ६ ॥

तुम भय मत करो नारायण के बदरिकाश्रम को गमन करो जिस बदरी में डेराही करने मात्र से पापों से रहित होनेवाले हो ६ ॥

ततस्तेहर्षवेगेन नमस्कृत्यपितामहम् ॥
जगुरुत्फुल्लनयना विशालाममितप्रभाम् ७ ॥

तिसके उपरांत ब्रह्मा को नमस्कार करके नेत्र जिनके हर्ष के वेग से अत्यंत फूले हैं ऐसे वह पांच तीर्थ बड़ी कांति धारनेवाली बदरी को जातेभये ७ ॥

यस्यांप्रवेशमात्रेण स्नपनाद्विगतैनसः ॥
ततोद्विरूपमास्थाय स्वस्थानंययुरुत्सुकाः ॥
द्रवरूपेणचान्येन पञ्चतिष्ठन्तिनिर्मलाः ८ ॥

जिस बदरी में प्रवेश मात्र करके स्नान करने से पाप जिनके दूर होगये हैं ऐसे होते भये तिसके उपरांत दो रूप धारण करके पांचों तीर्थ उत्कंठित होके अपने स्थान को जाते भये दूसरे जलके रूप से निर्मल पांच तीर्थ बदरी में स्थिर रहते भये ८ ॥

तेषुस्नात्वाविधानेन कृत्वानित्यक्रियाःशुचिः ॥
तत्तत्तीर्थफलंलब्ध्वा यात्यन्तेपरमांगतिम् ९ ॥

तिन पांचों तीर्थों में विधिपूर्वक स्नान कर पवित्र होके सन्ध्या तर्पणादि कर्म करके उस उस तीर्थ का फल पाय के अन्तकाल में पुरुष परम गति को प्राप्त होता है ९ ॥

पञ्चोपवासनिरतः पूजयित्वाजनार्दनम् ॥
इहभोगान्बहून्भुक्त्वा हरेःसालोक्यमश्नुते १० ॥

तहां नारायण को पूजन करके जो पुरुष पांच उपवास करता है वह इस लोक में बहुत भोगोंको भोगके पीछे नारायणके लोक में भोग करता है १० ॥

ततस्तुविमलंतीर्थं सोमकुण्डाभिधंशुचि ॥
तपश्चचारभगवान् सोमोयत्रकलानिधिः ११ ॥

तिसके उपरांत सोमकुण्ड नाम निर्मल तीर्थ है जिस तीर्थ में कलाओं का समुद्र भगवान् चन्द्रमा शुद्ध तप करता भया ११ ॥

स्कन्दउवाच ॥ कथन्तत्रतपश्चक्रे किमिच्छंस्तत्त्वसेवत ॥
एतदन्यच्चसर्वंमे वदस्वामिन्नुकौतुकम् १२ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये किस तरह तहां चन्द्रमा तप करता भया क्या चाहता हुवा तिस तीर्थ को सेवन करता भया यह भी और सब तमाशा करनेवाला वृत्तांत स्वामीजी मुझसे कहो १२ ॥

श्रीशिवउवाच॥पुरात्रितनयःश्रीमान् सोमस्तुप्राप्तयौवनः ॥
श्रुत्वास्वर्वासिनांसौख्यं गन्धर्वेभ्यःपुनःपुनः १३ ॥
ततःस्वपितरंप्रायात्स्वःसुखंलभ्यतेकथम् १४ ॥

शिवजी कहते भये पहिले अत्रि ऋषिका पुत्र शोभायमान चन्द्रमा यौवना-

वस्थापाय के फेर फेर गन्धर्वों के मुख से स्वर्गलोक में रहनेवालों का अधिक सुख श्रवण करके तिसके उपरांत अपने पिता अत्रि ऋषि से पूछता भया कि स्वर्गलोक का सुख किस तरह पाया जाता भया १३।१४ ॥

सोमउवाच ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ करुणामृतसागर ॥
कथंवालभ्यतेस्वर्गः सर्वेषामुत्तमोत्तमः १५ ॥
ग्रहनक्षत्रताराणां पितरेषांपतिःकथम् ॥
स्यामहंभगवन्नेतत्कृपयावदमेपितः १६ ॥

चंद्रमा कहता भया तप के ऐश्वर्य से युक्तहो सब धर्म के जाननेवाले हो दया के अमृत समुद्रहो सबों के उत्तम से उत्तम ऐसा स्वर्गलोक किस प्रकार से मिलताहै और ग्रह नक्षत्र तारों का तैसेही औरों का स्वामी मैं किस तरह होऊंगा हे भगवन् पिताजी ! यह कृपा करके मुझसे कहो १५।१६ ॥

अत्रिरुवाच ॥ तपसाराध्यगोविन्दं यमैर्भक्तिंप्रकल्प्यच ॥
जपस्वपरमंजाप्यं मन्त्रमष्टाक्षरंहरेः १७ ॥

अत्रि ऋषि कहते भये तप से नारायण को प्रसन्न करके इंद्रियों के जीतने से भक्ति रच करके भी श्रेष्ठ जपने के योग्य श्रीनारायण के अष्टाक्षर मंत्र को तू जपकर १७ ॥

अष्टाशीतिसहस्राणि भगवद्दर्शनोत्सुकः ॥
तपस्तेपेसपरमं सर्वलोकभयावहम् १८ ॥

तब वह चन्द्रमा श्रीनारायण के दर्शन की इच्छा करता हुवा बदरी में अट्ठासी हजार वर्ष तक सब लोकों को त्रास देनेवाला अद्भुत तप करता भया १८॥

ततस्तुष्टःसमागत्य भगवान्भक्तवत्सलः ॥
उवाचसोमंरुचिरं वरंवरयसुव्रत १९ ॥

तिसके उपरांत भक्त जिसको प्यारे हैं ऐसा भगवान् प्रसन्न होके निकट आके सुन्दर तेरा व्रतहै वर को मांगि करके चन्द्रमा को रमणीय वचन कहता भया १९ ॥

ततःसोमःसमुत्थाय नमस्कृत्यपुनःपुनः ॥
नक्षत्रग्रहताराणामोषधीनांपतिःप्रभो ॥
द्विजानामपिसर्वेषां भूयासन्तेप्रसादतः २० ॥

तिसके उपरांत चन्द्रमा आसन से उठ के फिर फिर नमस्कार करके कहता भया हे स्वामिन् ! तुम्हारे प्रसाद से नक्षत्रों का तारों का सब बूटियों का ब्राह्मणों का सबों का भी स्वामी मैं होऊं २० ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ वरमन्यंवृणुष्वत्वं दुर्लभंचपरित्यजेः ॥
नवंनवरयामास तदान्तर्द्धिमगादजः २१ ॥

भगवान् कहते भये हे चन्द्र ! तू दूसरा वर मांग जो तैंने मांगाहै वह दुर्लभ है उस वर को छोड़ दीजिये जब चन्द्रमा दूसरा वर नहीं मांगता भया तब भगवान् छिपजाता भया २१ ॥

ततोतिविमनाःसोमः पुनस्तेपेतपोनिधिः ॥
त्रिंशद्वर्षसहस्राणि देवमानेनपुत्रक २२ ॥

हे कार्त्तिकेय ! तिसके उपरान्त तपस्याका समुद्र होरहा ऐसे भी चन्द्रमा अत्यन्त उदास होके फिर, मनुष्यों का वर्ष हुआ देवतों का एक दिन होताहै इसतरह देवतों के प्रमाण से तीस हजार वर्षतक तप करता भया २२ ॥

तदासौकरुणापूर्णहृदयोभगवानगात् ॥
वरंवरयभद्रन्तेवरदोहंतवागतः २३ ॥

तिस कालमें यह नारायण करुणा से चित्त जिसका भराहुआ है ऐसे होके आके कहते भये तैंने बड़ा तप किया तुझको वरदेनेवाला आपहुँचा वर मांगिये २३ ॥

सोमस्तुतादृशंवव्रेतच्छ्रुत्वान्तर्दधेहरिः २४ ॥
ततोतिविमनाःसोमःपुनस्तेपेतपोमहत् ।
चत्वारिंशत्सहस्राणिदेवमानेनपुत्रक २५ ॥

चन्द्रमा तो फिर उसी वरको मांगता भया वह सुनके भगवान् छिपजाते भये तब अत्यन्त उदासहोके चन्द्रमा फिर बड़ातप हे कार्त्तिकेय ! देवतों के प्रमाणसे चालीस हजार वर्षतक करताभया २४ । २५ ॥

ततस्तुष्टोहरिःसाक्षाच्छङ्खचक्रगदाधरः ॥
उवाचवचनंचारुसोमंशान्तंतपोनिधिम् २६ ॥

तिसके उपरान्त आप नारायण प्रसन्नहोके शङ्ख चक्र गदा पद्म धारनेवाले तपस्या के समुद्र शान्तरूप चन्द्रमाको मधुरवचन कहतेभये २६ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रन्तेवरंवरयसुव्रत ॥
तपसाराधितोनूनंत्वयाहंतपसान्निधे २७ ॥

सुन्दर तैंने व्रत कियाहै खड़ाहो खड़ाहो तुझको कल्याण होवै वर मांग तपस्या का तू समुद्र होगया है तैंने निश्चय करके तपस्या से हमैं प्रसन्न करदिया है २७ ॥

सोमउवाच ॥ यदितुष्टोभवान्मह्यंभगवान्वरदर्षभः ॥
ग्रहनक्षत्रताराणामाधिपत्यंप्रयच्छमे ॥
तदोषधीनांविप्राणांयामिन्याश्चजगत्पते २८ ॥

चन्द्रमा कहताभया जो आप नारायण वर देनेवालों के राजा मेरे ऊपर प्रसन्नहोगये हो तो हे जगत् के स्वामी ! ग्रहहुये नक्षत्रहुये ताराहुये वृक्षलता हुये ब्राह्मणहुये रात्रिहुई इनसबों का प्रभुत्व मुझको दीजिये २८ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ दुर्लभंप्रार्थितंवत्सवितरामितथाप्यहम् ॥
एवमस्तुततःसर्वेसमागत्यदिवौकसः २९ ॥
अभिषिक्तवन्तोविधिवत्सोमंराजानमादृताः ३०

नारायण कहते भये कि हे चन्द्रमा ! तैंने दुर्लभ वर इच्छाकिया है तौभी मैं देताहूँ ऐसाही होगा तिसके उपरान्त सब देवता आय के आदर सहित विधिपूर्वक चन्द्रमा को राज्याभिषेक करतेभये २९।३० ॥

ततोविमालयायुतोरथेनशुभ्रवर्चसा ॥
अभिष्टुतःसुरैरभूद्दिवंगतोनिशाकरः ३१ ॥

तिसके उपरान्त सफ़ेद जिसका तेज है ऐसे रथ में चढ़के दिव्य माला को धारण करता सब देवतों करके स्तुति किया जाता चन्द्रमा आकाश को जाताभया ३१ ॥

ततःप्रभृतितीर्थानांसोमकुण्डोतिदुर्लभः ॥
यद्दृष्टिमात्रन्मनुजाःसुनिर्दोषाभवन्तिहि ॥
यदुपस्पर्शनाद्यान्तिसोमलोकमनिन्दिताः ३२ ॥

तिस दिनसे लेके तीर्थों में चन्द्रकुण्ड अत्यन्त दुर्लभ होताभया जिस चन्द्रकुण्ड के देखनेहीमात्र से मनुष्य सब दोषों से छूटजाते हैं जिसमें आचमनकरने से शुद्धहोके चन्द्रमाके लोकको जातेहैं ३२ ॥

यत्रस्नात्वाविधानेनतर्पयित्वापितृन्सुरान् ॥
सोमलोकंविनिर्भिद्यविष्णुलोकंप्रपद्यते ३३ ॥

तिस चन्द्रकुण्ड में स्नानकरके विधानसे पितरों को देवतों को तर्पण देके चन्द्रमाके लोक को भेदकरके पुरुष विष्णुके लोकको प्राप्तहोता है ३३ ॥

उपवासत्रयंकुर्यात्पूजयित्वाजनार्दनम् ॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्यनात्रकार्य्याविचारणा ३४ ॥

जो पुरुष नारायणको पूजनकरके तीन उपवास करै उस पुरुष को मन्त्रों की सिद्धि होती है इसमें विचार करना योग्य नहीं है ३४ ॥

कर्मणामनसावाचायत्कृतंपातकंनृभिः ॥
तत्सर्वंक्षयमायातिसोमकुण्डेक्षणादिह ३५ ॥

कर्म्म करके मनकरके वाणीकरके मनुष्यों ने जो पाप कियाहै वह सब पाप क्षणमात्र से इस चन्द्रकुण्ड में नाशहोता है ३५ ॥

ततस्तुद्वादशादित्यतीर्थंपापहरंपरम् ॥
यत्रतप्त्वातपःकृच्छ्रंकाश्यपाःसूर्यतांययुः ३६ ॥

चन्द्रकुण्ड के उपरान्त पापों को हरनेवाला बारह सूर्य्यों का उत्तमतीर्थ है जिस तीर्थ में कठिनतप करके कश्यप प्रजापति के पुत्र सूर्य्यस्वरूप को प्राप्त होते भये ३६ ॥

दुर्लभंत्रिषुलोकेषुतपःसिद्ध्येककारणम् ३७ ॥
रविवारेतुसंक्रान्तौसप्तम्यांविधिवन्नरः ॥
सप्तजन्मकृतात्पापात्स्नानमात्रेणशुद्ध्यति ३८ ॥

तपकी सिद्धिका एक कारण ऐसा वह तीर्थ तीनोंलोकों में दुर्लभ है सूर्य्य के वार में संक्रान्ति में सप्तमीतिथि में विधिपूर्व्वक मनुष्यके स्नान करने मात्र से सात जन्म के कियेहुये पापोंसे शुद्ध होजाता है ३७।३८ ॥

वेदोक्तंविधिवत्कृत्वापूजयित्वाजनार्दनम् ॥
सूर्यलोकेसुखंभुक्त्वाविष्णुलोकंप्रपद्यते ३९ ॥

वेदका कहाहुआ कर्म्म विधिपूर्व्वक करके नारायण को पूजनकरके सूर्य्य के लोक में सुख भोग के पुरुष विष्णुलोक को प्राप्तहोता है ३९ ॥

महारोगाभिभूतस्तुस्नात्वातत्रजलेशुचिः ॥
रोगमुक्तोचिरादेवनात्रकार्य्याविचारणा ४० ॥

पुरुष बड़े रोगोंसे पीड़ित होरहा उस तीर्थ के जल में स्नानकरके थोड़ेही काल में रोगों से छूटके निर्मल होजाताहै इसमें विचारना योग्य नहीं ४० ॥

चतुःस्रोतःपदंतीर्थंविलोचनमनोहरम् ॥
धर्मार्थकाममोक्षास्तेतिष्ठन्तिद्रवरूपिणः ४१ ॥

चार जिसके प्रवाह हैं ऐसा नेत्रोंका मनका हरनेवाला दूसरा तीर्थ है तहां जलके रूप धारण करते धर्म्म,अर्थ,काम,मोक्ष यह चारों स्थित होरहे हैं ४१ ॥

हरेराज्ञानुसारेणक्षेत्रेस्मिन्वैष्णवेस्वयम् ॥
पुरुषार्थाद्रवीभूताभूतानांप्रीतिहेतवे ४२ ॥

इस क्षेत्रमें विष्णुकी प्रीति देखके नारायणकी आज्ञाके अनुसार करके प्राणियोंकी प्रीतिके कारणके वास्ते आप चारों पुरुषार्थ जल होके बहरहे हैं ४२ ॥

पूर्वादितस्तेक्रमशोनिवृष्टा
धर्मप्रधानाद्रवरूपभाजः ॥
भजन्तियेतान्क्रमशःप्रपन्ना-
स्तेषांतथैवास्तिफलंप्रदानम् ४३ ॥

जल रूप धार रहे धर्म जिन्हों में मुख्य है ऐसे वह चार पुरुषार्थ क्रम से पूर्वादि देशों से वर्ष रहे हैं जो पुरुष क्रमसे तिन चारों पुरुषार्थों के शरणागत होरहे तिन चारों को सेवन करते हैं उनको तैसाही प्रधान फल होता है ४३ ॥

नान्यत्रतीर्थेमिलिताःकथंचि-
च्चत्वारएतेत्रिदशैकगुप्ताः ॥
एतान्निजान्धर्मभरेणलब्ध्वा
पश्यन्तिपूर्वार्जितपुण्यपुञ्जाः ४४ ॥

यह चारों पुरुषार्थ बड़े कष्ट से देवतों करके एकाग्र होके रक्षा किये जाते दूसरे तीर्थ में नहीं मिलते हैं यह अपने अपने पुरुषार्थ को बहुत धर्म करके पाके भी अनेक पुण्य जिन्होंने पूर्वजन्म में कमाये होवैं वह देखते हैं ४४ ॥

येदुर्जनादुर्जनसङ्गभाजः
क्षमार्जवप्रीणतयाप्रधानाः ॥
क्रीडामृगाग्राम्यवधूजनानां

नतेप्रपश्यन्त्यसिताःपुमर्थान् ४५ ॥

जो दुर्जन हैं अथवा दुर्जनोंकासंग करते हैं क्षमाकरते हैं सरलरहते हैं प्रीति करते हैं ऐसे भी जो प्रधान पुरुषहैं विषय भोगों में आसक्त जो हैं स्त्रियोंके वश में जो रहते हैं मलिन जो हैं वह पुरुष चारों पुरुषार्थों को नहीं देखते हैं ४५ ॥

येषांसएवकृपयाप्रसन्नः
स्वभक्तिनित्यार्पितसत्कटाक्षः ॥
तएवपश्यन्त्यचिरेणतत्त्व--
ज्ञानैकहेतूनपितान्पुमर्थान् ४६ ॥

अपने भक्तों में सदा लगाय रक्खी है भलीदृष्टि जिसने ऐसा वही नारायण कृपा करके जिसके ऊपर प्रसन्न होता है वही पुरुष तत्त्वज्ञान के मुख्य कारण जो वह चारों पुरुषार्थ हैं उनको शीघ्र देखते हैं ४६ ॥

अत्रब्रह्मादयोदेवाऋषयश्चतपोधनाः ॥
पर्वणिप्रयताःसर्वेसमायान्तिषडानन ४७ ॥

हे कार्त्तिकेय ! इस तीर्थ में ब्रह्मादि देवता ऋषीश्वर भी तप करनेवाले सब पवित्रहोके पर्वतमें आते हैं ४७ ॥

ततःसप्तपदंनामतीर्थंसर्वमनोहरम् ॥
त्रिकोणाकारमेवैतत्कुण्डंकल्मषनाशनम् ४८ ॥

तिस तीर्थ से उपरान्त सबका मन हरनेवाला सप्तपदनाम तीर्थ है पापों को नाश करनेवाला आकार जिसका त्रिकोण है ऐसा यहां कुण्ड है ४८ ॥

एकादश्यांहरिस्तत्रस्वयमायातिपावने ॥
तत्रवैऋषयःसर्वेमुनयश्चतपोधनाः ॥
स्नातुमायान्तिविधिवत्कुण्डेसप्तपदाभिधे ४९ ॥

तिस पवित्र तीर्थ में आप नारायण एकादशी तिथि में आवते हैं तहां सप्तपद नाम कुंड में ऋषि मुनि तप करनेवाले भी सब विधिपूर्व्वक स्नान करने को आते हैं ४९ ॥

गन्धर्वाप्सरसांयत्रमध्याह्नेहरिवासरे ॥
गानंशृण्वन्तिविरलाःसत्यव्रतपरायणाः ५० ॥

तिस सप्तपद तीर्थ में एकादशी के दिन दो पहर में गन्धर्व्वअप्सरों के गान को सत्य कहनेवाले व्रत करनेवाले कोई पुरुष सुनते हैं ५० ॥

दर्शनाद्यस्यतीर्थस्यपातकानिमहान्त्यपि ॥
पलायन्तेभयेनैवंसिंहंदृष्ट्वामृगाइव ५१ ॥

जिस तीर्थ के दर्शन करने से बड़े भी पातक भय करके भागजाते हैं सिंह को देख के मृग जैसे भागते हैं ५१ ॥

स्वशाखोक्तविधानेनस्नानंकृत्वाविचक्षणः ॥
सत्यलोकमवाप्नोतिततोनैःश्रेयसंपदम् ५२ ॥

अपनी वेदशाखा के कहेहुये विधान करके पंडितपुरुष स्नान करके सत्य लोक को प्राप्त होता है तिसके उपरांत मोक्षपद होताहै ५२ ॥

अहोरात्रंशुचिर्भूत्वाउपोष्यचजनार्दनम् ॥
पूजयित्वाविधानेनसजीवन्मुक्तिभाजनम् ५३ ॥

एक दिन रात्रितक पवित्र होके उपवास लेके विधानसे नारायणको पूजन करके वह पुरुष जीताहुआ मुक्तिका पात्र होताहै ५३ ॥

ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चत्रिकोणस्थाःसमाहिताः ॥
तपःकुर्वन्त्यवितरसर्वलोकहितैषिणः ५४ ॥

ब्रह्मा विष्णु महादेव यह तीनों देवता एकाग्र होके निरन्तर सब लोकका कल्याण चाहते हुये जिस सप्ताद कुण्ड के तीनों कोनों में स्थित होरहे तप करते हैं ५४ ॥

त्रिकोणमण्डितंतीर्थंनाम्नासप्तपदप्रदम् ॥
दर्शनीयंप्रयत्नेनसर्वपापमुमुक्षुभिः ५५ ॥

तीन कोनों से शोभायमान वह तीर्थ नाम लेने से सातलोकों को देनेवाला है सब पापोंसे छूटना चाहते मनुष्यों करके यत्नपूर्वक देखना योग्यहै ५५ ॥

जपंतपोहरिध्यानंपूजास्तुत्यभिवन्दनम् ॥
माहात्म्यंकुर्वतांवक्तुंब्रह्मणापिनशक्यते ५६ ॥

जप तप नारायणका ध्यान पूजा स्तोत्र प्रणाम इनके करनेवाले मनुष्योंका माहात्म्य कहनेका भी शक्य नहीं है ५६ ॥

ततोतिविमलंनामनरनारायणाश्रितम् ॥
द्विविधंदृश्यतेयत्रशैलःपरमदुर्लभः ५७ ॥
उभाभ्यांमुनिभ्यांप्रीतिर्भवतीतिसुनिश्चितम् ५८ ॥

तिसके उपरांत नरनारायण का आश्रय किया हुआ अतिविमलनाम तीर्थ है जिस तीर्थ में परमदुर्लभ पर्वत दोप्रकारका देखाजाता है दोनों पर्वतों के देखने से दोनों नरनारायण की प्रीति होती है यह निश्चय है ५७।५८ ॥

तत्रस्नात्वाप्रयत्नेनपूजयित्वाजनार्दनम् ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तस्तत्क्षणान्नात्रसंशयः ५९ ॥

तिस तीर्थ में स्नान करके बड़ेयत्न से नारायणको पूजन करके उसी क्षण में पुरुष सब पापों से छूटजाता है इसमें सन्देह नहीं है ५९ ॥

ततोनारायणावासशिखरेविमलाकृति ॥
तीर्थंपवित्रमुर्वश्याअभिव्यक्तिर्यतोभवत् ६० ॥

तिसके उपरांत नारायण पर्वत के शृंग में निर्मल जिसका आकार है ऐसा पवित्र तीर्थ है जहां से उर्वशीकी प्रकटता हुई है ६० ॥

स्कन्दउवाच ॥ अभिव्यक्तिःकथंतत्रउर्वश्याःशिखरेपितः ॥
किम्पुण्यंकिंफलंतत्रपरंकौतूहलंवद ६१ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये तिस नारायण पर्वत के शृङ्ग में किस तरह उर्वशी की प्रकटताभई है तिस तीर्थ में क्या पुण्यहै क्या फलहै मुझको बड़ा तमाशा लगे है पिताजी कहो ६१ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ धर्मस्यपत्नीमूर्त्यासीत्तस्यांजातौषडानन ॥
नरनारायणौसाक्षाद्भगवानेवकेवलम् ६२ ॥

शिवजी कहते भये हे कार्त्तिकेय ! पहिले धर्मदेवताकी स्त्री मूर्त्तिदेवी होती भई तिस मूर्त्तिदेवी में एक आप भगवान् नरनारायण नाम के दो भाई होते भये ६२ ॥

पितुराज्ञामनुप्राप्यतपोर्थंकृतमानसौ ॥
उभयोर्निर्गयोस्तौतुतपोमूर्तीइवास्थितौ ६३ ॥

अपने पितासे आज्ञा पाके तप के वास्ते जिन्होंने मन किया है वह दोनों नरनारायण दोनों पर्वतों में तपकी दोमूर्त्ति जैसी स्थित होतेभये ६३ ॥

तौदृष्ट्वाविस्मितःशक्रःप्रेषयामासमन्मथम् ॥
सगणंतपसोध्वंसोयथास्याद्गन्धमादने ६४ ॥

नरनारायण को देखके आश्चर्य्ययुक्त होके इन्द्र जिसतरह तपका नाश

होवै गन्धमादन पर्वत में वसन्तऋतु अप्सरोंसहित कामदेवको भेजताभया ६४॥

विक्रम्यविविधन्तेतुनारायणबलोदयम् ॥
ज्ञात्वाहतमनस्कांस्तानुवाचजगताम्प्रभुः ६५ ॥

वह कामादि इन्द्रके भेजे हुये नानाप्रकार का बल दिखलाके नारायण के बलका माहात्म्य देखके मनका उत्साह जिनका जातारहा ऐसे उन कामादिकों को जानके भुवनों का स्वामी कहताभया ६५ ॥

श्रीभगवानुवाच॥ किमर्थमागतायूयमातिथ्यंगृह्यतांहिमे ॥
इत्युक्त्वाफलमूलानितेभ्योमायोर्वशींतदा ॥
दत्त्वान्तर्द्धिमगाद्देवःपश्यतांविघ्नकारिणाम्६६॥

श्रीनारायण कहतेभये कि तुम किसवास्ते आयेहो मेरा सत्कार ग्रहण करो इतना कह कर कन्दमूल फल दे पीछे तिनके पास उर्वशी बनाकर देके नारायण विघ्नकरनेवाले उन कामादिकों के देखतेहुये छिपगये ६६ ॥

तेतुगत्वादिवंभीताःशक्रायोचुर्बलंहरेः ॥
शक्रस्तामुर्वशींप्राप्यश्रुत्वाश्चर्यमितोभवत् ६७ ॥

वह कामादि डरते हुये स्वर्गको जाके इन्द्रके पास नारायण का बल कहतेभये यह सुनके इन्द्र तिस उर्वशी अप्सरा को पाके आश्चर्य्ययुक्त होताभया ६७ ॥

ततःप्रभृतितत्तीर्थमुर्वशीनामतःसुत ॥
प्रसिद्धंयत्रभगवान्स्वयमास्तेतपोमयः ६८ ॥

उस दिनसे लेके हे कार्त्तिकेय ! वह तीर्थ उर्वशीके नामसे प्रसिद्ध हुआ है जिस तीर्थ में आप भगवान् तपकी मूर्त्तिहोके विराजरहे हैं ६८ ॥

तत्रस्नात्वाविधानेनउपोष्यरजनीद्वयम् ॥
पूजयित्वाहरिंभक्त्यानरोनारायणोभवेत् ६९ ॥

तिस तीर्थ में विधान करके स्नानकरके दोरात्रितक उपवासकरके भक्ति से नारायण को पूजनकरके मनुष्य नारायण होवै है ६९ ॥

उर्वशीकुण्डमासाद्यकामनावशतोनरः ॥
उर्वशीलोकमाप्नोतिस्नातमात्रेणपत्रक ७० ॥

उर्वशी अप्सरा के कुण्डको पायके कामना के वश से मनुष्य स्नान करे जी से हे कार्त्तिकेय ! उर्वशी के लोकको प्राप्त होता है ७० ॥

सदैवभगवानत्रउर्वशीकुण्डसन्निधौ ॥
भूतानांभावयन्भव्यन्तपोमूर्तिरवस्थितः ७१ ॥

इस उर्वशीकुण्ड के निकट भगवान् सम्पूर्ण काल में प्राणियों का कल्याण चाहते हुये तप करतेहुये स्थित होरहे हैं ७१ ॥

आमोदंदधदुपरिप्रभञ्जनंश्री-
भर्तुर्वैवहतिपदाम्बुजैकलब्धम् ॥
यत्सङ्गात्कलियुगकल्मषातुराणा-
मुत्सङ्गेभवतिनभीरपिस्ममृत्योः ७२ ॥

श्रीनारायण के चरण कमलों से केवल पाया ऐसे सुगन्धको धारताहुआ वायुदेवता ऊपर बहता है जिस वायुके सङ्ग से कलियुग के पापों से आतुर होरहे मनुष्यों को कालके गोदमें भी भय नहीं होता है ७२ ॥

यत्सङ्गाद्दुरितमुपाहरन्त्यजस्रं
निर्विण्णागिरिविवरेच्युतैकभाजः ॥
श्रीभर्तुश्चरणरजोवहन्समन्ता-
दप्येतिप्रशमितदुस्त्यजःसमीरः ७३ ॥

जिस वायुके सङ्ग से निरन्तर संसार देखके उदास होते पुरुष पर्वत की गुफा में नारायण को केवल भजन करते पातकों को दूर करते जाते हैं शांत किये हैं कामादिक जिसने ऐसा वायु श्रीनारायण के चरणोंकी धूलि धारता चारोंतर्फ से प्राप्त होताहै ७३ ॥

गीर्वाणानुपहसतिस्मयेनपूर्णान्
कीटोपिप्रशमितदुर्भयोनिरीहः ॥
यत्रस्थःकुसुमविनोदमात्मनोङ्गं
पर्य्युत्सृज्यजहदुपयास्यतेपदंतत् ७४ ॥

जिस तीर्थ में स्थित होरहा कीड़ाभी जिस वायु करके पूर्ण किया हुआ दुःख भय जिसका शान्त होगया है कुछ नहीं चाहता ऐसा देवतोंका हास्य करता है पुष्पों में रहता ऐसे निर्मल अपने शरीर को छोड़ता हुआ तिस ब्रह्मपद को गमन करताहै ७४ ॥

यद्गत्वामुनिमतयोबहिःपदार्थान्
नोपश्यन्त्यजितपदाम्बुजैकभाजः ॥
यत्रस्थःस्वयमपिगोपनंजनाना -
माधत्तेस्वपदमिहक्रमागतानाम् ७५ ॥

जिस तीर्थ को गमनकरके ऋषियों के समान जिनकी बुद्धिहै नारायण के चरणारविन्द को केवल सेवनकरते पुरुष बाहर के पदार्थों को नहीं देखते हैं जहां बैठाहुआ नारायण इस संसार में अपने स्थान को क्रमसे आय पहुँचे मनुष्यों का भी आप रक्षणकरते हैं ७५ ॥

बहूनिसन्तितीर्थानिगिरौनारायणाश्रिते ॥
सर्वपापहराण्याशुतान्यहंवेदनोजनः ७६ ॥

नारायण के आश्रय किये हुये पर्वत में शीघ्र सब पापों के हरनेवाले बहुततीर्थ हैं उनतीर्थों को मैं जानताहूं लोक नहीं जानता है ७६ ॥

संसारकुहरेघोरेयदीच्छेद्गतिमात्मनः ॥
उर्वशीकुण्डमासाद्यदिनमेकंवसेन्नरः ७७ ॥

भयदेनेवाले संसाररूप गुफामें अपनी गति चाहनी होवै तो पुरुष उर्वशी कुण्डको पाके एक दिन वास करै ७७ ॥

उर्वश्यादक्षिणेभागेआयुधानिजगत्पतेः ॥
विद्येतेदर्शनाद्येषांनशस्त्रभयभाग्भवेत् ७८ ॥

उर्वशी के दहिने तरफ नारायण के धनुष बाण चक्र गदा नन्दक ढाल शङ्ख पाश इतने शस्त्र विराज रहे हैं जिनके दर्शन से शस्त्रोंका भय पाने वाला नहीं होता है ७८ ॥

यइदंशृणुयाद्भक्त्याश्रावयेद्वासमाहितः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तःसालोक्यंलभतेहरेः ७९ ॥

इस कथाको भक्तिकरके जो मनुष्य सुनता है अथवा एकाग्र होके जो औरों को सुनावता है वह सब पापों से छूटके नारायण के वैकुण्ठ को पाता है ७९ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेशिवकार्त्तिकेयसंवादेबदरीमाहात्म्येदेवानन्दपुरीकृत भाषाटीकायांसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ ब्रह्मकुण्डाद्दक्षिणतोनरावासगिरिर्महान् ॥
मेरुर्भगवतायत्रस्थापितोलोकसुन्दरः १ ॥

शिवजी कहने भये ब्रह्मकुण्डसे दक्षिणकी तरफ नरके रहने का ऊँचा पर्वत है जिस नर पर्वत में भगवान् ने जगत् में सुन्दर मेरु नाम पर्वत स्थापन किया है १ ॥

स्कन्दउवाच ॥ कथंभगवतामेरुःस्थापितोनरसन्निधौ ॥
महत्कौतूहलंतातकथ्यतांयदिरोचते २ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये किसतरह भगवान् ने नरके निकट मेरु स्थापन किया है पिताजी बड़ा तमाशा लगै है जो आपकी रुचि है तो कहिये २ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ यदाभगवतोवासोविशालायांसमागता ॥
देवामहर्षयःसिद्धाःसविद्याधरचारणाः ३ ॥

शिवजी कहते भये जिस दिनसे भगवान् का वास बदरीमें हुआहै देवता ऋषीश्वर सिद्ध चारण बदरी में आते भये ३ ॥

विहायमेरुशृङ्गाणिभगवद्दर्शनोत्सुकाः ॥
भगवद्दर्शनाह्लादनिवृत्तेतरवासनाः ४ ॥

सुमेरु पर्वत के शृंगोंको छोड़ करके नारायण के दर्शन करने में उत्कण्ठा करते नारायण के दर्शन से जो आह्लाद हुआ तिससे हटगई है और पदार्थों में वासना जिनकी ऐसे होतेभये ४ ॥

तदातुभगवांस्तेषांसुखहेतोःषडानन ॥
उत्थायमेरुशृङ्गाणिकरेणैकेनलीलया ॥
स्थापयामाससर्वेषांभगवान्प्रीतिमावहन् ५ ॥

हे कार्त्तिकेय! तिस समय में नारायण तिन देवतों के कारण से एक हाथ करके विनापरिश्रम से सुमेरु पर्वतके शृङ्गोंको उखाड़ के श्रीनारायणजी सब देवतों को प्रसन्न करना चाहते स्थापन करते भये ५ ॥

ततःसर्वेसमालोक्यगिरिंकाञ्चननिर्मितम् ॥
प्रसङ्गात्तुष्टुवुर्देवानारायणमनामयम् ६ ॥

तिसके उपरान्त सुवर्णका बनवाया हुआ सुमेरुपर्वत को देखके सबदेवता प्रसंग से आनन्दस्वरूप नारायणको स्तुति करते भये ६ ॥

देवाऊचुः ॥ योस्मत्सुखानुभवविश्रमणायविभ्र-
ल्लीलातनुंकनकशैलमिहानिनाय ॥
जेतासुरार्दनशतंत्रिदशैकपक्ष-
स्तस्मैविधेमनमउग्रतपःश्रिताय ७ ॥

देवता कहतेभये जो नारायण हमारे भोगयुक्त विश्रामकरनेके वास्ते क्रीड़ा का शरीर धारण करतेहुये सुमेरुपर्वत को यहां लातेभये सैकड़ों दानवों के जीतनेवाले देवतों के एक पक्षपाती जो हैं उग्रतपको आश्रय करते ऐसे उस नारायण के वास्ते हम नमस्कार करते हैं ७ ॥

यद्यत्करोषिकृपयाकृपणार्तितूल-
शैलाग्निराश्रितहृदेकविदांवरिष्ठः ॥
स्वेनैवतेनकरुणेनसतुष्यतांयत्
तत्तृप्तकारिपुरुषेणनुकेनचिद्वा ८ ॥

दुर्बलों की पीड़ारूप कपास के पर्वत का अग्नि स्वरूप भक्तों के चित्तको एक जाननेवालों में श्रेष्ठ ऐसे तुम कृपा करके जो जो करतेहो वह भगवान् अपनेही उस करुणा के कर्म से प्रसन्न होवै अथवा किसी पुरुषने उस नारायण की तृप्ति नहीं करी है ८ ॥

अस्माकमुन्नतधियांविदधातिसम्यक्
शिक्षांपितेवकरुणोनिजलाभपूर्णः ॥
त्रैलोक्यरक्षणविचक्षणदृष्टिपातः
पूर्णामृताम्बुधिरसौविपदःसुपायात् ९ ॥

उद्धत जिन्हों की बुद्धि है ऐसे हमारी भलेप्रकार से पिताके समान दयावान् अपने लाभ से भराहुआ शिक्षाको जो प्रभु करते हैं तीनलोक की रक्षाकरने में चतुर है दृष्टि का डालना जिसका ऐसा पूर्ण अमृतका समुद्र यह नारायण विपत्ति से हमको रक्षाकरै ९ ॥

ऋषयऊचुः ॥ येनाध्वस्तंभातिसमस्तंजगदेतत्
क्रीडाभाण्डंसत्यतयायस्यविभूम्नः ॥
भक्तेच्छावद्बिभ्रदनेकामृतमूर्ति-
स्तस्मैनिर्यद्ब्रह्मरसायंप्रणमामः १० ॥

ऋषि कहतेभये जिस परिपूर्ण प्रभुका खेल भांड़ा जिस करके त्याग किया हुआ सम्पूर्ण यह जगत् सचेस्वरूप करके शोभता है भक्तों की इच्छाके समान अनेक दिव्य मूर्त्तियोंको जो धारण करता है वह जो निरन्तर रहनेवाले तुमहो तुम्हारे वास्ते हम प्रणाम करते हैं १० ॥

सृष्ट्वाभूतान्यन्तरमेकोन्यविशन्ने--
षामात्माधारसर्वनिषेधावधिभूतः ॥
तत्तत्कर्मज्ञानविशेषादिहजन्तून्
योजानीतेतंकमलेशंप्रणमामः ११ ॥

सब निषेधों का अवधि होरहा अपनाही जिसको आधार है ऐसा जो एक प्रभु सबप्राणियों को सृष्टि करके फिर इनके भीतर प्रवेश करता है इस देह में अनेक प्रकारके कर्म्मों के विशेषज्ञान से जो प्राणियों को जानता है उस लक्ष्मी के नाथको हम प्रणाम करते हैं ११ ॥

सिद्धाऊचुः ॥ यत्कृपालवमवाप्यमहान्तः
सिद्धिमीयुरितरेभवभाजः ॥
पादपद्मरजसोल्लसतिश्रीः
श्रीनिवासतवकिङ्करभृत्याः १२ ॥

सिद्ध कहते भये जिस प्रभुकी कृपाका लेश पाके महान् पुरुष सिद्धिको प्राप्त होते भये कृपा जिनके ऊपर नहीं होती है वह संसार विषे घूमते रहते हैं लक्ष्मी जिसके चरणारविन्द की धूलिकरके शोभरही हैं हे लक्ष्मी के आधार होरहे ! हम तुम्हारे किंकर दास हैं १२ ॥

भक्तिवर्त्मनिरतास्तवभूमन्नन्तरङ्गहितसाधनभाजः ॥
तेचिरेणभवभीमपयोधिंतीर्णवन्तइतिनःसुमनीषा १३ ॥

हे परिपूर्ण ! भीतर के अंगों के हितकरनेवाले साधनों को सेवन करते तुम्हारे भक्ति मार्ग में तत्पर होरहे ऐसे जो पुरुष हैं वह शीघ्र संसाररूप भयानक समुद्र को तरचुके यह हमारी सुन्दर बुद्धि है १३ ॥

विद्याधराऊचुः ॥ वयन्तेगुणग्रामपीयूषजीवा
नचेशानसंमानसंतानहेतोः ॥
भवत्पादपद्मासवस्वादमत्ताः
कृतार्थानचित्रंभवत्यत्रकिञ्चित् १४ ॥

विद्याधर कहतेभये हमतो तुम्हारे गुणोंके समूहरूप अमृतसे जीवन धारते हैं हे स्वामिन् ! सम्मान व सन्तान के हेतुसे तुमको नहीं भजते हैं तुम्हारे चरणारविन्द के मकरन्द चाखने से हम उन्मत्त हैं इसमें क्या आश्चर्य है हम कृतार्थ होचुके हैं १४ ॥

ततस्तुष्टोहिभगवांस्तेषामाहदिवौकसाम् ॥
वरंवृणुध्वमित्युक्तास्तेहोचुर्वरदर्षभम् १५ ॥

तिसके उपरान्त तिन देवतों के ऊपर भगवान् प्रसन्नहोतेभये वरको मांगिये करके देवतों को कहा तो देवता वर देनेवालों में श्रेष्ठ भगवान् को कहते भये १५ ॥

परितुष्टोभवान्साक्षाद्देवदेवजगत्पते ॥
बदरीनत्वयात्याज्यानचमेरुःकदाचन १६ ॥

जो आप भगवान् देवतों के देवता जगत्के स्वामी हमारे ऊपर प्रसन्नहो तो बदरी तुम करके त्याग नहीं करने योग्य है व कदाचित् मेरुभी नहीं त्याग करने योग्यहै १६ ॥

मेरुशृङ्गंप्रपश्यन्तियेजनाःपुण्यभागिनः ॥
तेषांवैत्वत्प्रसादेनमेरौवासःप्रजायताम् १७ ॥

पुण्यसेवन करनेवाले जो पुरुष मेरुके शृङ्गको देखैंगे उन पुरुषोंका वास तुम्हारे प्रसाद करके मेरु में होवै १७ ॥

तत्रभुक्त्वाचिरंभोगानन्तेतेषांगतिस्तव १८ ॥

तिसमेरुमें बहुतकालतक भोगोंको भोगकेपीछे उनको तुम्हारी गतिमिलै १८ ॥

श्रीशिवउवाच॥देवैस्तदासइत्युक्तोभगवान्विष्णुरव्ययः ॥
एवमस्त्वितिचाभाष्यतत्रैवान्तर्हितोहरिः १९ ॥

शिवजी कहतेभये तिस समयमें वह अविनाशी भगवान् विष्णुजी देवतोंकरके विज्ञप्त कियेगये इसी तरह होगा ऐसा कहकरके उसी जगह छिप जातेभये १९ ॥

ततःप्रभृतितेसर्वेमेरुशृङ्गविहारिणः ॥
नरनारायणाभ्यान्तेपाल्यमानामुहुर्मुहुः २० ॥

उस दिनसे लेके वह सब देवता मेरु पर्व्वतके शृंगमें विहार करतेभये नर नारायण दोनों भाइयों करके बारंबार पालन किये जातेभये २० ॥

कदाचिद्दिवितिष्ठन्तिकदाचिन्मेरुमध्यतः ॥
निर्विशङ्कानिरुद्वेगाऋषयश्चतपोधनाः २१ ॥

किसी समयमें देवता ऋषीश्वर तपकरनेवाले भी स्वर्ग में रहते हैं कभी निस्सन्देह हो प्रसन्नहोके सुमेरु के बीचमें रहते हैं २१ ॥

भगवानपितत्रैवनररूपेणातिष्ठति ॥
धनुर्बाणधरः श्रीमांस्तपसापावकोपमः ॥
आनन्दमृषिवृन्देन जनयंस्तपआस्थितः २२ ॥

भगवान् भी तिसी मेरुके शृंग में नरके रूपकरके धनुषबाण धारण किये शोभायमान होरहे हैं तपकरके अग्नि के समान उपमा जिनकी है तपमें बैठे हुये हैं ऋषियों के समूह करके आनन्द जनाते स्थित होरहे हैं २२ ॥

पतन्तिस्मात्रिशृङ्गेभ्योधाराहाटकसंनिभाः ॥
तत्रस्नानंनरःकृत्वाह्युपोष्यरजनीत्रयम् ॥
मेरुपृष्ठंसमासाद्यविष्णुलोकेमहीयते २३ ॥

तीन शृंगोंसे सुवर्ण के समान तीन धारा गिरती हैं उन तीनों धारों में मनुष्य स्नानकरके तीनरात्रितक उपवास करके मेरु पर्वत की पीठको पाके विष्णुके लोकमें पूजित होताहै २३ ॥

ततस्त्वपरतस्तीर्थंलोकपालाभिधंपरम् ॥
यत्रसंस्थापयामासलोकपालान्हरिःस्वयम् २४ ॥

तहां से पश्चिम की तरफ लोकपाल नाम जिसका है ऐसा दूसरा तीर्थ है जिस तीर्थ में नारायण आप लोकपालों को स्थापन करतेभये २४ ॥

स्कन्दउवाच ॥ कथंभगवतातत्रस्थापितालोकपालकाः ॥
महत्कौतूहलंमह्यंकथयस्वमहामते २५ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये कि आपकी बड़ी बुद्धि है पिताजी भगवान् ने किसतरह तहां लोकपाल स्थापन किये हैं मुझको बड़ा कौतुक होता है मुझसे कहो २५ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ एकदामेरुमध्यस्थःस्वाश्रमान्विहरन्हरिः ॥
देवानामृषिमुख्यानांचरितंद्रष्टुमुद्यतः २६ ॥

श्रीशिवजी कहते भये कि एक समयमें मेरुके मध्यमें स्थित अपने आश्रम

में विहार करते हुये नारायण देवतों का व मुख्य ऋषियों का चरित्र देखने को तैयार होतेभये २६ ॥

तंदृष्ट्वामहसोत्थायनमस्कृत्यपुनःपुनः ॥
ऊचुस्तेवनताःसर्वेप्रसीदभगवान्विभो २७ ॥

नारायण को देखके शीघ्र उठके फिर फिर नमस्कार करके वह सब ऋषि देवता नम्रहोके हे स्वामिन् ! आप प्रसन्न होवो ऐसा कहते भये २७ ॥

क्षणंविश्राम्यविधिवद्दृष्ट्वास्वविरताश्रमान् ॥
सान्निध्यमृषिदेवानांप्रायुङ्क्तभावयन्मिथः २८ ॥

क्षणमात्र विश्राम करके विधिपूर्व्वक भले निरन्तर आश्रमों को देखके परस्पर प्रसन्न करता हुआ ऋषियों का देवतों का निकट रहना योजित करताभया २८ ॥

ततःप्रहस्यभगवानुवाचमधुरस्वरम् ॥
लोकपालान्समाभाष्यनात्रस्थेयंभवद्विधैः २९ ॥

उसके उपरान्त भगवान् हँसकरके लोकपालोंका नाम लेके तुमसरीखोंको यहां स्थित नहींरहना चाहिये ऐसा मधुरस्वर से कहते भये २९ ॥

ऋषयस्तापसाःसिद्धाःसस्त्रीकानिवसन्त्विह ॥
भवद्विधानामास्थानंपुरैवाकल्पितंमया ३० ॥

ऋषीश्वर सिद्ध तपकरनेवाले अपनी स्त्रियों सहित यहां वास करेंगे तुम सरीखों के रहनेका स्थान मैंने पहिलेही से बनारक्खा है ३० ॥

ततस्तत्पुरतोगत्वारम्येगिरिवरेहरिः ॥
लोकपालान्समाहूयस्थापयामासतान्गुह ३१ ॥

तिसके उपरान्त तिनके आगे से जाय के रमणीय पर्वतराज में नारायण लोकपालों को बुलाय के हे कार्त्तिकेय ! उनको स्थापन करताभया ३१ ॥

तत्रचस्वेनदण्डेनभित्त्वाद्रिंजलमाहरत् ॥
क्रीडापुष्करिणींतेषांनिर्ममेसमनोहराम् ३२ ॥

तहां अपने दण्डकरके पर्वत को फोड़ के नारायणजी जल निकालतेभये तिन लोकपालों की मन हरनेवाली क्रीड़ा करने की बावड़ी बनाते भये ३२ ॥

सस्त्रीकायत्रगीर्वाणाविहरन्तिनिजेच्छया ॥
गायन्तिस्वनुमोदन्तिगन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ३३ ॥

जहां स्त्रियों सहित देवता अपनी इच्छाकरके विहार करते हैं और देवताओं के गन्धर्वगण गान करतेहुये हर्षित होते हैं ३३ ॥

वनानिकुसुमामोदरम्याणिपरितोयतः ॥
दिवसायत्रगच्छन्तिक्षणप्रायास्तुदेहिनाम् ३४ ॥

जहां से चारों तरफ से फूलोंकी सुगन्ध करके रमणीय ऐसे वन हैं जिन वनोंमें प्राणियों के दिन मुहूर्त्त के समान व्यतीत होते हैं ३४ ॥

भगवानपितत्रैवतेषामानन्दमावहन् ॥
द्वादश्यांपौर्णमास्यांचस्वयमायातिमज्जने ३५ ॥

भगवान् भी तहां तिन लोकपालों को आनन्द बढ़ाते हुये द्वादशी पौर्णमासी में आप स्नान करनेको आते हैं ३५ ॥

यत्रस्नात्वाविधानेनकुर्यान्मध्याह्नकालिकीम् ॥
संध्यांयःपरमंज्योतिर्जलेपश्यतिचक्षुषाम् ३६

जहां विधानसे स्नानकरके जो पुरुष मध्याह्नसमय की सन्ध्या को करता है वह नेत्रकरके जलमें परम ज्योतिको देखता है ३६ ॥

सर्वतीर्थावगाहेनयत्पुण्यंपरिकीर्त्तितम् ॥
तत्फलंतत्क्षणादेवदण्डपुष्करिणीक्षणात् ३७ ॥

सबतीर्थों में स्नानकरने से जो पुण्य कहाहै वह फल दण्डपुष्करिणी के देखने से उसी क्षण में होता है ३७ ॥

यत्रकाम्यानिकर्माणिफलन्त्याशुमनस्विनाम् ॥
यत्रपिण्डप्रदानेनगयातोष्टगुणंफलम् ३८ ॥

उस दण्डपुष्करिणी में कामना के कर्म बुद्धिमानों के किय हुये शीघ्र फलतेहैं जहां पिण्डदान करने से गयासे अठगुणा फल कहा है ३८ ॥

द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यज्येष्ठेमासिपडानन ॥
तत्रस्नात्वाप्रयत्नेनकृतकृत्योभवेन्नरः ३९ ॥

हे कार्त्तिकेय ! ज्येष्ठके महीनाके शुक्लपक्षकी द्वादशी में उस दण्डपुष्करिणी में स्नानकरके यत्नसे मनुष्य कृतकृत्य होजाता है ३९ ॥

निष्कामतःशुचिर्भूत्वाउपोष्यरजनीत्रयम् ॥
लोकपालसुखम्भुक्त्वाविष्णुलोकंप्रपद्यते ४० ॥

कामना नहीं करनेसे शुद्धहोके तीनरात्रितक उपवास करके लोकपालोंका सुख भोगके पुरुष विष्णुके लोकको प्राप्त होता है ४०

बदरीतीर्थमध्येषुगुप्तमेतत्सुरोत्तमैः ॥
नवाच्यंयत्रकुत्रापितवप्रीत्यामयोदितम् ४१ ॥
दुर्लभन्त्रिषुलोकेषुस्मरणाद्घातिपातकम् ४२ ॥

बदरी के तीर्थ के बीचमें यह तीर्थ उत्तम देवतों ने गुप्त किया है जहां तहां कहने के योग्य नहीं है मैंने प्रीतिकरके तुमसे कहाहै तीनोंलोकों में दुर्लभ है जिसके स्मरण से पातक दूरहोजाता है ४१।४२ ॥

अचिरेणैवकालेनमन्त्राणांसिद्धिमिच्छता ॥
दण्डपुष्करिणीरम्याद्रष्टव्यासिद्धिदायिनी ४३ ॥

इस थोड़े समय में मन्त्रोंकी सिद्धि चाहनेवाले पुरुषको सुन्दर सिद्धि देनेवाली दण्डपुष्करिणी देखनेयोग्य कही है ४३ ॥

वक्तव्यंकिमिहबहुप्रयासपुण्या
पश्यन्तिप्रथितमिदंसुरैकगम्यम् ॥
नान्येषांप्रथयतिचेतसिप्रसङ्गा-
दावश्यादनुदिनचिन्तितागृहाणाम् ४४ ॥

इसमें बहुत कहकरके क्या होता है बहुत परिश्रम करके पुण्य जिन्हों ने किये हैं वे पुरुष केवल देवतों के गमनकरने के शक्य ऐसे विख्यात इस तीर्थको देखते हैं नित्य प्रसङ्गसे दिनदिन प्रतिघर जिन्होंने चिन्तन किये हैं ऐसे प्रकार के और पुरुषों के चित्त में यह तीर्थ विख्यात नहीं होताहै ४४ ॥

येषांकोपिभवातिवासमग्रकर्म
स्वाध्यायाभ्यसनविधिःक्रमेणजातः ॥
पश्यन्तित्रिभुवनदुर्लभंसुतीर्थं
दण्डाख्यंहरिरचितंतएवनान्ये ४५ ॥

अथवा जिन मनुष्योंका क्रमसे उत्पन्न हुआ सम्पूर्ण कर्मोंका विधान वेदाध्ययन भी वर्णन करने को शक्य नहीं होता है वे तीन लोक में दुर्लभ नारायण करके रचेहुये दण्डपुष्करिणी नाम तीर्थको देखते हैं और नहीं ४५ ॥

दण्डोदान्नापरन्तीर्थंनविष्णोःसदृशोमरः ॥
विशालासदृशंक्षेत्रंनभूतंनभविष्यति ४६ ॥

दण्डपुष्करिणी तीर्थके समान तीर्थ नहीं है विष्णु के समान दूसरा देवता नहीं है बदरी के समान दूसरा क्षेत्र नहीं है न कोई होनेवाला है ४६ ॥

सेवनीयाप्रयत्नेनविशालाविमलेक्षणैः ॥
यदीच्छेच्छाश्वतेधाम्नभगवत्पार्श्ववर्तिनाम् ४७ ॥

बड़े यत्नसे निर्मल नेत्रोंकरके बदरी जो नारायण के निकट रहनेवालों का निरन्तर धामको चाहना होवै तो पुरुष को सेवन करनी कही है ४७ ॥

स्कन्दउवाच ॥

गङ्गामाश्रित्यतीर्थानिकानिसन्तीहसद्गते ॥
श्रेयस्कराणिभूतानांसंक्षेपात्तानिमेवद ४८ ॥

स्वामिकार्त्तिकेय कहते भये हे सज्जनों के गति देनेवाले ! इस बदरी में अलकनन्दाजी के आश्रयकरके कौन तीर्थ विराजते हैं वह प्राणियोंके कल्याण करनेवाले तीर्थ संक्षेपसे मुझसे कहो ४८ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ गङ्गाभ्यांयत्रसंयोगोमानसोद्भेदसंनिधौ ॥
तत्तीर्थंविमलंपुण्यंप्रयागादधिकंमतम् ४९ ॥

शिवजी कहते भये जहां मानसोद्भेद तीर्थ के निकट दो गङ्गाका संगम है वह तीर्थ पुण्य देनेवाला शुद्ध गङ्गायमुनाके संगमसे अधिक कहाहै ४६ ॥

त्रिंशद्वर्षसहस्राणिवायुभक्षोजनोभवेत् ॥
तत्फलंस्नानमात्रेणगङ्गायाःसङ्गमेनृणाम् ५० ॥

तीस हजारवर्षतक वायु भक्षण करता जो मनुष्य रहै वह फल अलकनन्दाजीके संगम में स्नानकरने से होता है ५० ॥

स्वभावादलकनन्दाया्यादर्शनंहन्तिपातकम् ॥
किंपुनःसङ्गमस्नानात्फलाधिक्यम्प्रचक्षते ५१ ॥

अलकनन्दाजी और आदिगंगाके दर्शन स्वभाव से पातकको नाश करता है संगमके स्नानसे अधिक फल कहते हैं विशेष क्या कहना है ५१ ॥

दृष्टिमात्रेणगङ्गायाबदर्य्याश्चापिसन्निधौ ॥
कोटियज्ञफलंपुंसांजायतेनात्रसंशयः ५२ ॥

बदरी के निकट अलकनन्दाजी के देखनेही मात्रसे पुरुषोंको कोटियज्ञ कियेका फल होताहै इसमें सन्देह नहींहै ५२ ॥

सङ्गमात्पश्चिमेभागेधर्मक्षेत्रंप्रकीर्तितम् ॥
यत्रमूर्त्त्यांवुभौजातौनरनारायणावृषी ५३ ॥

संगमसे पश्चिम की तरफ धर्म्म देवता का क्षेत्र कहाहै उस क्षेत्र में मूर्त्ति देवी में दोनों नरनारायण ऋषि उत्पन्न हुये हैं ५३ ॥

तत्क्षेत्रंपावनंमन्येसर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥
धर्म्मस्तत्रैवभगवांश्चतुष्पादोहितिष्ठति ५४ ॥

उस क्षेत्रको सब क्षेत्रों में उत्तम पवित्र मैं मानताहूं वहांहीं चारों चरण धारते हुये भगवान् धर्म्म स्थित होरहे हैं ५४ ॥

तत्रयज्ञोजपोदानंतपोयत्क्रियतेनृभिः ॥
तत्पुण्यस्यक्षयोनास्तिकल्पकोटिशतैरपि ५५ ॥

उस धर्म्म क्षेत्रमें जो कुछ यज्ञ जप दान तप मनुष्यों ने किया होवै उस पुण्यका सौ कोटि कल्पोंकरके भी नाश नहीं है ५५ ॥

मुक्तिक्षेत्रमिदंनृणांसर्वक्षेत्रेषुदुर्लभम् ॥
यस्यदर्शनमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ५६ ॥

मनुष्योंको मुक्ति देनेवाला यह क्षेत्र सब क्षेत्रोंमें दुर्लभहै जिसके देखनेही मात्रसे पुरुष सब पापों से छूटजाता है ५६ ॥

ततोदक्षिणदिग्भागेउर्वशीसङ्गमाधिकम् ॥
सर्वपापहरंपुण्यंस्नानमात्रेणदेहिनाम् ५७ ॥

तहां से दक्षिण दिशाके भाग में उर्वशीसंगम करके अधिक तीर्थ स्नान करनेही से प्राणियों के सब पापोंका हरनेवाला पवित्र है ५७ ॥

कूर्माङ्गारस्तमःसाक्षाद्धरिभक्त्येकसाधनम् ॥
स्नानमात्रेणभूतानांसत्त्वशुद्धिःप्रजायते ५८ ॥

उसके उपरान्त कूर्मांगार नाम तीर्थ साक्षात् नारायण की भक्तिका एक साधनेवाला है जहां स्नानकरनेही से प्राणियों की सत्त्वकी निर्मलता होती है ५८ ॥

ब्रह्मावर्त्तंपरंतीर्थंसर्वपापप्रणाशनम् ॥
ब्रह्मावर्त्तपरंतीर्थंसर्वपापप्रणाशनम् ॥

यस्मिन्स्नानमात्रेणनरोब्रह्ममयोभवेत् ५९ ॥

सब पापोंका नाशकरनेवाला दूसरा ब्रह्मावर्त्त नाम तीर्थ है जिसके स्नान मात्रसे मनुष्य ब्रह्मस्वरूप होताहै ५९ ॥

बहूनिसन्तितीर्थानिदुर्ज्ञेयानीहदेहिनाम् ॥
संक्षेपात्कथितान्येवमयातेभक्तिभावतः ६० ॥

इस बदरीमें प्राणियों के जानने में नहीं आते ऐसे बहुत तीर्थ हैं तेरे भक्तिके भावसे संक्षेप से मैंने कहदिये हैं ६० ॥

यइदंशृणुयान्नित्यंश्रावयेद्वासमाहितः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तःपदंविष्णोःप्रपद्यते ६१ ॥

इस माहात्म्यको नित्य एकाग्रचित्त होके जो श्रवणकरै अथवा जो सुनावै वह सब पापोंसे छूटके विष्णुके पदको प्राप्तहोता है ६१ ॥

राजाविजयमाप्नोतिसुतार्थीलभतेसुतम् ॥
कन्यार्थीलभतेकन्यांकन्याविन्दतिसत्पतिम् ६२ ॥

राजा इस माहात्म्य को श्रवण करके विजय पाता है पुत्र चाहनेवाला पुत्र पाताहै कन्या चाहनेवाला कन्या पाताहै कन्या सुन्दर भर्ताको पाती है६२॥

धनार्थीधनवाँल्लोकेसर्वकामैकसाधनम् ॥
मासमात्रंनरोभक्त्याशृणुयाद्यःसमाहितः ६३ ॥
तस्याभीष्टसमाप्तिःसुलभाहिनसंशयः ६४ ॥

धनको चाहनेवाला धनवान् होताहै जगत्में सब कार्य्योंका एक सिद्ध करनेवाला यह माहात्म्यहै एक महीनेतक भक्ति से एकाग्र होके जो पुरुष श्रवण करै उसको मनोभिलाषकी प्राप्ति सुलभहोती है इसमें सन्देह नहीं है ६३।६४॥

यस्यगेहेसुमाहात्म्यंबदर्य्याःपूज्यतेत्वहो ॥
आधिव्याधिभयंचौर्य्यंदारिद्र्यंनोपजायते ६५ ॥

जिसके घरमें बदरीका शोभन माहात्म्य पूजाजाता है मनकी व्यथा रोग का भय चोरी दरिद्र तहां नहीं होताहै ६५ ॥

नाल्पमृत्युर्नसर्पादिसौभाग्यंचापिजायते ॥
दुःस्वप्नग्रहपीडायादारणंशुभदंतथा ६६ ॥

अल्प मृत्यु व सर्प आदिका भय नहीं होता है और सौभाग्य होता है व खोटे स्वप्न व ग्रहकी पीड़ाविदारक तथा शुभफलदायक है ६६ ॥

युद्धेजयप्रदंचैवपठनीयंप्रयत्नतः ॥
पूर्णंवाध्यायमर्द्धंवातदर्द्धंवाविचक्षणैः ६७ ॥
सर्वकार्यप्रसिद्धिःस्यान्नात्रकार्य्याविचारणा ॥
यदिच्छतिशुभंतत्तुबदरीमाहात्म्यतःखलु ६८ ॥

संग्राम में विजय देनेवाला भी है अथवा सब माहात्म्य व एक अध्याय अथवा आधाअध्याय अथवा उसका आधा अध्याय पण्डितों को बड़े यत्नसे पाठकरना कहाहै सबकार्यकी सिद्धि होवै जो पुरुष जैसी इच्छाकरै निश्चयसे बदरीमाहात्म्यके पाठसे प्राप्त होता है इसमें विचारकरना नहीं कहाहै ६७।६८ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणेसपादलक्षसंहितायांसह्याद्रिखण्डे श्रीशिव कार्त्तिकेयसंवादेबदरीमाहात्म्ये श्रीकविदेवानन्दपुरीकृत भाषाटीकायामष्टमोध्यायः ८ ॥

विक्रियार्थ निम्न लिखित पुस्तकें ॥
कार्यालय में हर एक समय पर उपस्थित रहती हैं ॥

	रु०	आ०	पा०
श्रीबदरीमाहात्म्य स०	०	१२	
श्रीकेदारमाहात्म्य स०	०	८	०
श्रीबदरीनाथयात्रा चित्र	०	१	०
श्रीबदरीनारायणाष्टक	०	०	६
श्रीकेदारनाथाष्टक	०	०	६
श्रीकेदारनाथमानसीपूजा	०	०	६
श्रीबदरीनाथमानसीपूजा	०	०	६
श्रीसीताराम दशावतार चित्र	०	१	०
श्रीबदरीनाथाष्टक साइज कार्ड श्लोकबद्ध....	०	०	३

ठिकाना– श्री. बी. पी. एण्ड ब्रादर्स
जनरल बुकसेलर मठकमलेश्वर
श्रीनगर गढ़वाल.